₹ 20

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कल्कि

दिसम्बर 2014

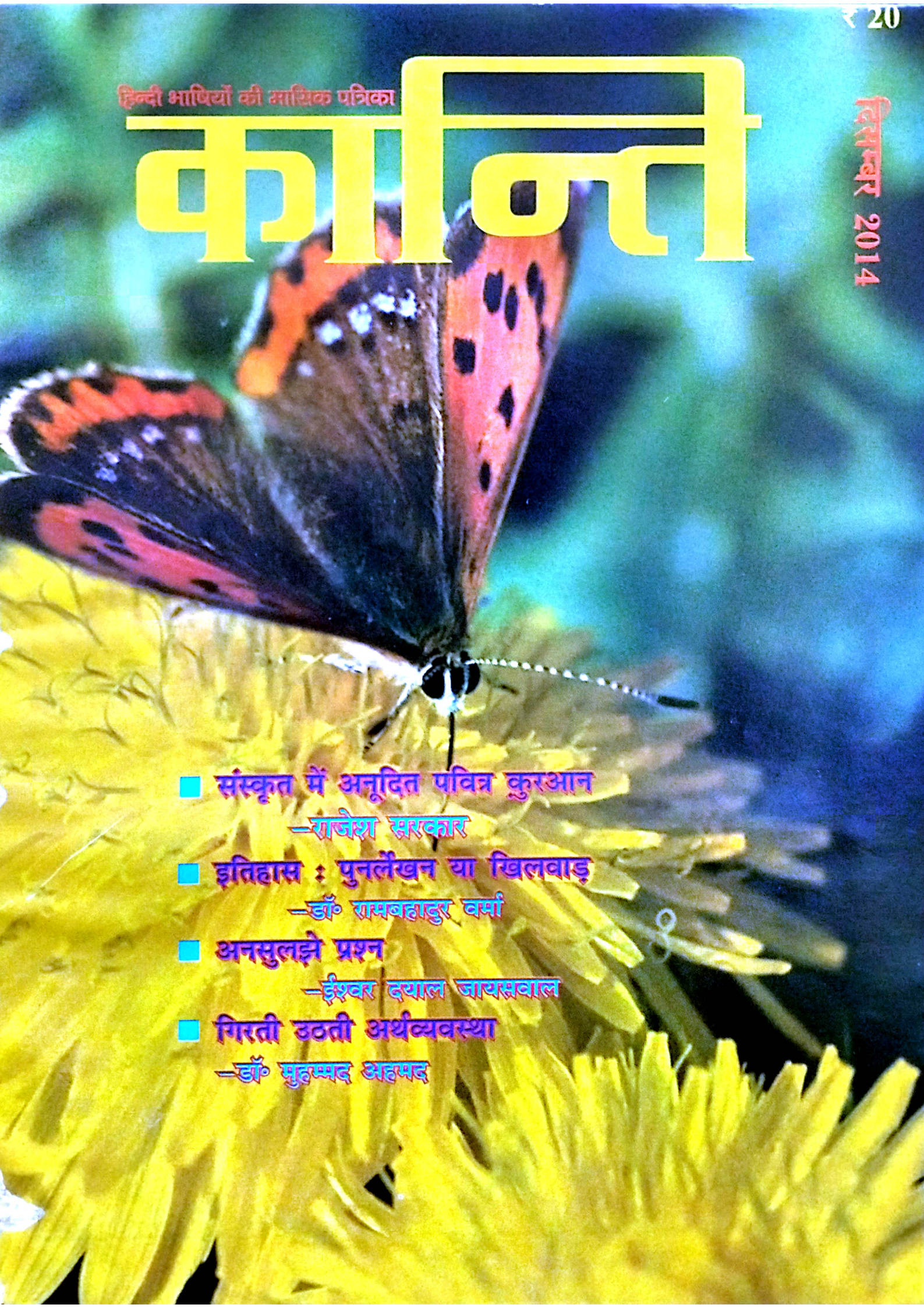

- संस्कृत में अनूदित पवित्र क़ुरआन
  —राजेश सरकार
- इतिहास : पुनर्लेखन या खिलवाड़
  —डॉ॰ रामबहादुर वर्मा
- अनसुलझे प्रश्न
  —ईश्वर दयाल जायसवाल
- गिरती उठती अर्थव्यवस्था
  —डॉ॰ मुहम्मद अहमद

S. Riyaz Khadri

Decorators
Real Estate
Medical Store
Consultancy
Enterprises

Off. : 2519501/6970673
Res. : 2517612
Fax : 2517992
Mob. : 9422060878
9423888457

RIYAZ DECORATORS

On hire Shamiyana Pandal, Sound System Lighting Chairs, Table and Crockery etc. Items

SHOP : Opp. Zuari Complex, Block No. 3, Patrong Baina-Vasco, Goa-403 802

RES : Fire Wood Depot, Sasmolem Baina, Vasco-Goa

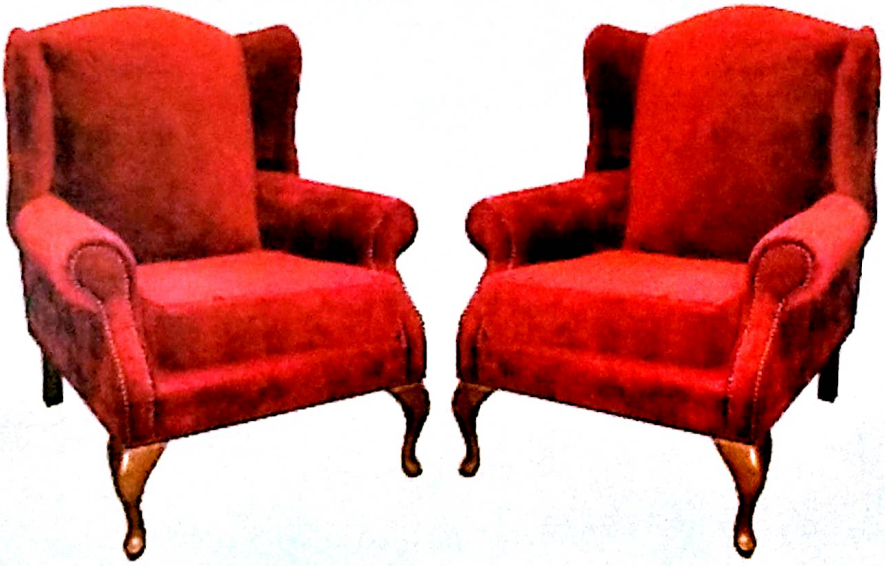

S. Riyaz Khadri

RIYAZ Real Estate

Off. : 2519501/6970673
Res. : 2517612
Fax : 2517992
Mob. : 9422060878
9423888457

Sales, Purchase & Letting of Commercial/Residential Properties & Development Plots

Off. Shop No. 4, Navprasth Estate, Near Kharpreshwar Mandir, Patrong Baina, Vasco-da-Gama, Goa - 403 802

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 24 अंक 6 दिसम्बर 2014

कह दो कि अगर इन्सान और जिन्न सबके सब मिलकर इस क़ुरआन जैसी कोई चीज़ लाने की कोशिश करें तो न ला सकेंगे, चाहे वे सब एक-दूसरे के सहायक ही क्यों न हों ।

–क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

011-26949430, 09818799223

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 20/- विशेषांक रु० 30/-

वार्षिक रु० 220/-, दो वर्ष 425/-

पांच वर्ष 1000/-, आजीवन रु० 5000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–100 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–35 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

ग़ज़ल

देश का नेता वोट की भिक्षा भाषण देकर मांगे है
यानी हमारे क़त्ल को ज़ालिम हम से ही ख़ंजर मांगे है

उसको पकड़ो उसको मारो जिसने जगाया है इसको
ये फुटपाथ पे सोने वाला रहने को घर मांगे है

पहले तो बर्बाद करे है बम बरसाकर शहरों को
तामीरों[1] के ठेके भी फिर हमलाआवर मांगे है

हारा हूं तो दोस्त भी मेरे दुश्मन होते जाते हैं
अब मेरी तलवार ही मुझ से ख़ुद मेरा सर मांगे है

मजबूरी और पेशावरी की ये ज़िन्दा तस्वीरें हैं
इक चुप है दामन फैलाए इक चिल्लाकर मांगे है

कंजूसी मूज़ी[2] की फ़ितरत[3] और हवस शेवा[4] उसका
मुश्किल से इक क़तरा दे है और समन्दर मांगे है

उनकी आला ज़र्फ़ी का भी अन्दाज़ा हो जाएगा
मौलाना से एक शराबी ख़ाली सागर मांगे है

अपने-अपने ढंग से शाइर दाद तलब[5] करते हैं 'हफ़ीज़'
कोई ड्रामाबाज़ी करके कोई गा कर मांगे है ।

■ **हफ़ीज़ मेरठी**

1. निर्माण 2. अत्याचारी, पीड़ादायक 3. प्रकृति 4. ढंग, तरीक़ा, परिपाटी 5. चाह, मांगना ।



कहां क्या है ?

ग़ज़ल	–हफ़ीज़ मेरठी	3
कुरआन ज्योति		5
ज्ञान (हदीस मंजरी)		6
इतिहास के भगवाकरण का घृणित प्रयास (संपादकीय)		7
हिन्दुस्तान का रहने वाला हिन्दुस्तानी (आपके पत्र)		9
इस्लाम में सहानुभूति एवं सहयोग का महत्व (आस्था)	–सैयद जलालुद्दीन उमरी	13
परम ईश्वरीय वाणी की छांव में (पुस्तक समीक्षा)	–डॉ॰ नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम'	17
व्यापार बनाम ब्याज	–अबरार अहमद	19
कैसे स्थापित हा संपूर्ण समाजवाद ?	–डॉ॰ रणजीत	21
हर ख़ौफ़नाक आवाज़ के बाद (कविता)	–सीताराम गुप्ता	23
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) को मानते हैं आदर्श	–इर्शादुल हक़	25
संस्कृत में अनूदित पवित्र कुरआन (विशेष आयोजन)	–राजेश सरकार	26–27
चांदनी (कविता)	–ॐ पारदर्शी	30
अनसुलझे प्रश्न (ज्वलंत सामयिक)	–ईश्वर दयाल जायसवाल	31
इतिहास : पुनर्लेखन या खिलवाड़	–डॉ॰ रामबहादुर वर्मा	33
शब्बी आपा (कहानी)	–मासूम अंसारी	39
गिरती उठती अर्थव्यवस्था (फेसबुक उवाच)	–डॉ॰ मुहम्मद अहमद	41
विज्ञापनों का मायाजाल	–सी॰ के॰ रहमानी	43
प्रतिभा की प्रतिष्ठा (युवन)	–सीताराम गुप्ता	45
पत्रकार और प्रधानमंत्री : परस्पर डरें क्यों ?	–डॉ॰ वेदप्रताप वैदिक	48
हरी सब्ज़ियों से मधुमेह का उपचार	–डॉ॰ राजा नरसानी	49
शरीर पर धारियों का राज़	–विद्या प्रकाश	50

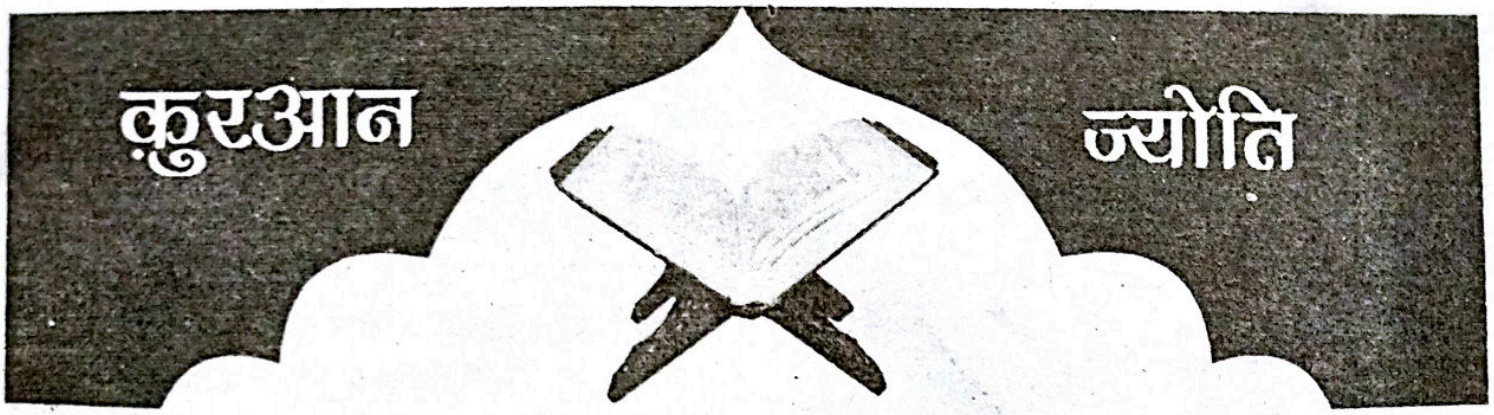

(61) कहो, "वह तुम्हारी भलाई के लिए ऐसा है[70], अल्लाह पर ईमान रखता है और ईमान वालों पर भरोसा करता है ।[71] और सरासर रहमत (नितांत दयालुता) है उन लोगों के लिए जो तुममें से ईमानदार हैं, और जो लोग अल्लाह के रसूल को दुख देते हैं उनके लिए दर्दनाक सज़ा है ।"

(62) ये लोग तुम्हारे सामने क़समें खाते हैं ताकि तुम्हें राज़ी करें, हालांकि अगर ये ईमान वाले हैं तो अल्लाह और रसूल इसके ज़्यादा हक़दार हैं कि ये उनको राज़ी करने की चिन्ता करें । (63) क्या इन्हें मालूम नहीं है कि जो अल्लाह और उसके रसूल का मुक़ाबला करता है, उसके लिए दोज़ख़ की आग है जिसमें वह हमेशा रहेगा ? यह बहुत बड़ी रुसवाई है ।

(64) ये मुनाफ़िक़ डर रहे हैं कि कहीं मुसलमानों पर कोई ऐसी सूरा न उतर आए, जो उनके दिलों के भेद खोलकर रख दे ।[72]

–क़ुरआन, 9 : 61,64

---

70. उत्तर में एक व्यापक बात कही गयी है जो अपने भीतर दो पहलू रखती है । एक यह कि वह बिगाड़ और दुष्टता की बातें सुनने वाला व्यक्ति नहीं है, बल्कि केवल उन्हीं बातों पर ध्यान देता है जिनमें भलाई और अच्छाई है और जिनकी ओर ध्यान देना उम्मत (मुस्लिम समुदाय) की बेहतरी और दीन के हित में लाभदायक होता है । दूसरे यह कि उसका ऐसा होना तुम्हारे लिए ही भलाई है । अगर वह हर एक की सुन लेने वाला और धैर्य और सहनशीलता से काम लेने वाला आदमी न होता तो ईमान के तुम्हारे झूठे दावे सुन-सुनकर वह यूं चुप न बैठ रहता ।

71. अर्थात तुम्हारा यह विचार ग़लत है कि वह हर एक की बात पर भरोसा कर लेता है, वह चाहे सुनता सबकी हो मगर भरोसा केवल उन्हीं लोगों पर करता है जो सच्चे ईमान वाले हैं । तुम्हारी जिन दुष्टताओं की ख़बरें उस तक पहुंचीं और उसने उन पर भरोसा किया वह चरित्रहीन लगाई-बुझाई कराने वालों की पहुंचाई हुई न थीं, बल्कि भले ईमान वालों की पहुंचाई हुई थीं और इसी योग्य थीं कि उन पर भरोसा किया जाता ।

72. ये लोग नबी (सल्ल॰) के रसूल होने पर सच्चा ईमान तो नहीं रखते थे लेकिन जो अनुभव वे पिछले आठ-नौ वर्षों में कर चुके थे उनके आधार पर उन्हें इस बात का विश्वास हो चुका था कि आपके पास कोई न कोई जानकारी का पराप्राकृतिक साधन अवश्य है, जिससे आपको उनके छिपे भेदों तक की सूचना पहुंच जाती है, और कभी-कभी क़ुरआन में (जिसे वे नबी सल्ल॰ की अपनी लिखी किताब समझते थे) आप उनके निफ़ाक़ (कपट) और उनके षड्यंत्रों को बेनक़ाब करके रख देते हैं ।

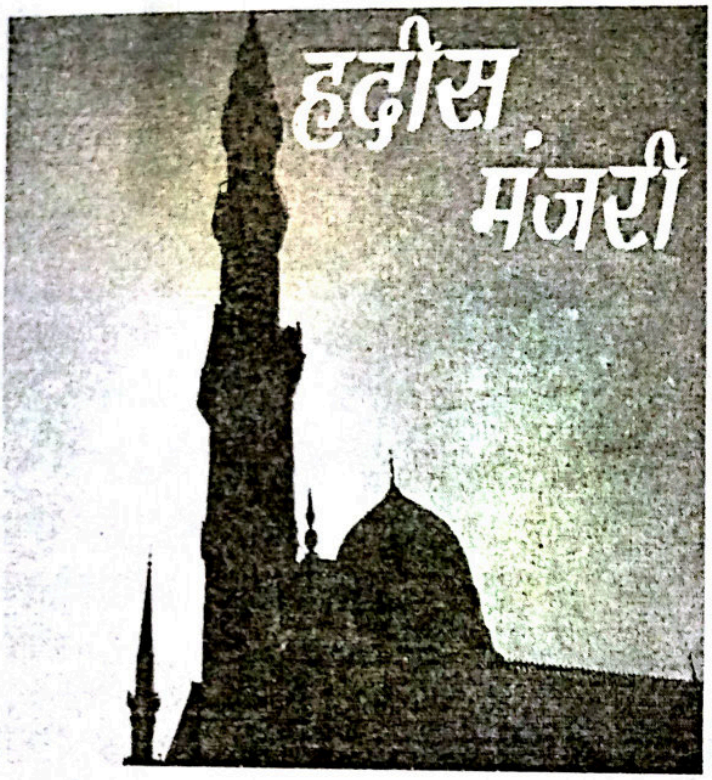

ज्ञान

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "जब आदम का बेटा (मनुष्य) मर जाता है, तो उसके कर्म का सिलसिला समाप्त हो जाता है सिवाय तीन चीज़ों के : अनवरत दान, लाभप्रद ज्ञान और नेक संतान जो उसके लिए दुआ करे ।"

–मुस्लिम

● हज़रत अनस (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "जो व्यक्ति ज्ञान की चाह में निकला, तो वह वापस आने तक अल्लाह की राह में होता है ।"

–तिरमिज़ी

● हज़रत अबू उमामह (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "ज्ञानवान को उपासक के मुक़ाबले में ऐसी श्रेष्ठता प्राप्त है जैसी श्रेष्ठता मुझे तुममें से किसी अदना व्यक्ति के मुक़ाबले में प्राप्त है ।" फिर अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "निश्चय ही अल्लाह और उसके फ़रिश्ते और आसमानों और ज़मीन वाले यहां तक कि चींटियां अपनी बिलों में और यहां तक कि मछलियां भी उन लोगों के लिए रहमत की दुआएं करती हैं जो लोगों को भलाई की शिक्षा देते हैं ।"

–तिरमिज़ी । तिरमिज़ी ने कहा कि यह हदीस 'हसन' है ।

● हज़रत अबू दरदा (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को यह कहते सुना : "जो व्यक्ति ज्ञान की खोज में कोई मार्ग अपनाएगा अल्लाह उसके लिए जन्नत का मार्ग सुगम कर देगा । और फ़रिश्ते ज्ञानार्थी को प्रसन्नता के लिए अपनी भुजाएं बिछाते हैं और ज्ञानी के लिए आकाश और धरती के रहने वाले यहां तक कि जल की मछलियां भी क्षमा की प्रार्थना करती हैं । और ज्ञानी की श्रेष्ठता उपासक की अपेक्षा ऐसी है जैसे चन्द्रमा की श्रेष्ठता शेष समस्त तारागण के मुक़ाबले में है । और निस्संदेह ज्ञानी नबियों के वारिस (उत्तराधिकारी) हैं । नबी मीरास में न दीनार छोड़ते हैं और न दिरहम, वे तो विरासत में बस ज्ञान छोड़ जाते हैं जो जिस किसी ने उसे प्राप्त किया उसने अत्यधिक हिस्सा प्राप्त किया ।"

–अबू दाऊद, तिरमिज़ी

● हज़रत इब्न मसऊद (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि रसूल (सल्ल॰) से कहा : "अल्लाह उस व्यक्ति को तरोताज़ा रखे जिसने मुझ से सुना और जैसा उसने सुना उसे दूसरों तक पहुंचाया क्योंकि प्राय: ऐसा होता है कि जिस व्यक्ति तक बात पहुंचायी जाती है, वह सुनने वाले से अधिक सुरक्षित रखने वाले होते हैं ।"

–तिरमिज़ी । तिरमिज़ी ने कहा कि यह हदीस 'हसन सहीह' है ।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "जिस व्यक्ति से कोई ज्ञान की बात पूछी जाए और वह उसे छुपा ले, तो क़ियामत के दिन उसे आग की लगाम (उसके मुंह में) लगायी जाएगी ।"

–अबू दाऊद, तिरमिज़ी

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "जिस व्यक्ति ने वह ज्ञान जिससे गौरव के स्वामी प्रतापवान अल्लाह कीक प्रसन्नता प्राप्त की जाती है केवल इसलिए प्राप्त किया कि उसके द्वारा सांसारिक सामग्री प्राप्त करे वह व्यक्ति क़ियामत के दिन जन्नत की सुगंध तक न पा सकेगा ।" –अबू दाऊद

('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

इतिहास के भगवाकरण का घृणित प्रयास

पूर्व भाजपा अध्यक्ष एवं वर्तमान शहरी विकासमंत्री वेंकैया नायडू ने 23 जून 2013 को कहा था कि अगर भाजपा सत्ता में आती है, तब पाठ्यक्रमों में बदलाव करेगी । इसी बात के अनुवर्तन में केन्द्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने 23 जुलाई 2014 को राज्यसभा में कहा कि ''यह प्रस्ताव है कि यह सुनिश्चित करने के लिए कि बच्चों को मानवीय मूल्यों तथा जीवन मूल्यों के प्रति जागरूक बनाने के लिए स्कूली पाठ्यक्रमों में बदलाव किया जाएगा ।'' अब आर०एस०एस० से जुड़े शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय अध्यक्ष दीनानाथ बत्रा ने कहा है कि ''राजनीतिक बदलाव हो चुका है अब शिक्षा में पूर्ण बदलाव होना चाहिए ।'' इन सब बयानों के बीच भारतीय इतिहास के पुनर्लेखन को हरी झंडी मिल चुकी है । इतिहास को तोड़ने-मरोड़ने का प्रिय कार्य एक बार फिर से चल पड़ा है । आर०एस०एस० की केरल यूनिट की पत्रिका 'केसरी' के विगत 17 अक्तूबर में एक लेख में भाजपा के एक नेता बी० गोपालाकृष्णन ने इशारों में लिखा है कि नाथूराम गोडसे को महात्मा गांधी के बदले जवाहर लाल नेहरू को निशाना बनाना चाहिए था । लेख में कहा गया है कि देश के बंटवारे के लिए नेहरू ज़िम्मेदार थे और उन्हें कभी भी राष्ट्रपिता से सही में लगाव नहीं रहा । गोपालाकृष्णन केरल की चालाकुडी लोकसभा सीट से बी०जे०पी० के टिकट पर चुनाव लड़े थे ।

उन्होंने लिखा है कि नेहरू का स्वार्थ सभी बड़ी राष्ट्रीय त्रासदियों की वजह था । 'अगर इतिहास के विद्यार्थियों ने ईमानदारी से बंटवारे के पहले के ऐतिहासिक तथ्यों और गोडसे के विचारों का अध्ययन किया होता तो वे इस निष्कर्ष पर पहुंच सकते थे कि गोडसे ने ग़लत निशाना चुना था ।' पूरे लेख में इस बात पर तर्क दिया गया है कि गांधी की हत्या में संघ का कोई हाथ नहीं था और गोडसे स्वयंसेवक नहीं था, लेकिन साथ ही यह भी कहा गया है कि गोडसे नेहरू से बेहतर था । लेख कहता है, 'वैश्विक नेता बनने के लिए नेहरू को गांधी जी का नाम, खादी और टोपी चाहिए थी । गोडसे नेहरू से कहीं ज़्यादा बेहतर था । उसने सम्मानपूर्वक झुकने के बाद उन्हें गोली मारी । वह नेहरू जैसा नहीं था कि आगे से झुका और पीठ में छुरा भोंक दिया ।' ''इंडियन एक्सप्रेस'' से बातचीत करते हुए गोपालकृष्णन ने कहा है कि उनके लेख का मक़सद अंग्रेज़ों द्वारा ग़लत तथ्यों पर लिखे गये इतिहास को एक्सपोज करना है । वे कहते हैं, 'नेहरू शुरू से ही स्वार्थी और पाखंडी थे । वह अपने से ऊपर कांग्रेस में किसी को नहीं देखना चाहते थे । गांधी जी की लोकप्रियता और प्रभाव से वे ईर्ष्या करते थे । नेहरू कभी भी गांधी के अनुयायी नहीं रहे । वे अंग्रेज़ों के पसन्दीदा थे और इतिहास इस तरह से लिखा गया कि नेहरू को महान बनाया जा सके । अब समय आ गया है कि इतिहास को फिर से लिखा जाए ।' वास्तव में तथ्य विध्वंस संघ परिवार को सदा से पसन्द रहा है ।

हिन्दू राष्ट्र की परिकल्पना को साकार करने के लिए यह सब छल-छद्म अमल में लाया जाता रहा है । इस बाबत राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने अब सरकार पर दबाव बढ़ा दिया है । इस कड़ी में संघ नेताओं

ने विगत तीस अक्तूबर को मानव संसाधन विकास मंत्री स्मृति ईरानी के साथ नयी दिल्ली में लंबी बैठक की और उन्हें अपना मन्तव्य भगवा एजेंडे के साथ समझाया । इस बैठक में संघ नेताओं ने दो टूक कहा कि पिछले दस सालों के यू॰पी॰ए॰ शासनकाल में शिक्षा में भारतीय मूल्यों की भारी उपेक्षा हुई है जिससे शिक्षा का स्तर गिरा है । इसलिए इस दिशा में तुरंत क़दम उठाये जाने की ज़रूरत है । दो राज्यों के विधानसभा चुनावों में मिली सफलता के बाद संघ ने केन्द्र सरकार को अहम मुद्दों पर अपनी राय देनी शुरू कर दी है । संघ की तरफ़ से सुरेश सोनी, कृष्ण गोपाल, दत्तात्रेय होशबोले, रामलाल, जे॰पी॰ नड्डा तथा संघ के शिक्षा से जुड़े कई पदाधिकारियों ने एक स्वर से 2005 में बने राष्ट्रीय पाठ्यक्रम परिचर्या में बदलाव की ज़रूरत बतायी और कहा कि यू॰पी॰ए॰ सरकार के कार्यकाल में जो शिक्षा नीति अपनायी गयी है, उसमें नैतिक मूल्यों के लिए कोई स्थान नहीं है । उससे बाज़ारीकरण को बढ़ावा मिल रहा है । शिक्षा की गुणवत्ता ख़राब हो रही है । सरकारी स्कूलों की स्थिति दिन-प्रतिदिन गिरती जा रही है । संघ चाहता है कि प्राथमिक स्तर पर सरकारी स्कूलों की शिक्षा मज़बूत हो । उच्च और तकनीकी शिक्षा को बाज़ार के हवाले न किया जाए । संघ ने यह भी मंशा ज़ाहिर की कि एन॰डी॰ए॰ सरकार को उपरोक्त मुद्दों को ध्यान में रखते हुए एक व्यापक शिक्षा नीति का ख़ाका तैयार करने की ज़रूरत है । संघ चाहता है कि शिक्षा पाठ्यक्रमों में संघ प्रेरित हिन्दू इतिहास एवं तथ्य लिखे जाएं, जो स्पष्ट रूप से समाज और देश के हित में कदापि न होगा । आज आवश्यकता इस बात की है कि मानवता, लोकतंत्र, मानव समता की पक्षधर ताक़तें एकजुट हों और इतिहास विध्वंस के विरुद्ध आगे आएं ।



हिन्दुस्तान का रहने वाला हिन्दू नहीं, हिन्दुस्तानी

अभी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सर संचालक मोहन भागवत ने कहा कि हिन्दुस्तान में रहने वाला हिन्दू कहा जाना चाहिए। यह बात सच्चाई से परे एक सोची-समझी साज़िश के तहत कही गयी है। इसके पीछे भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित करने की पूर्व नियोजित भावना का प्रदर्शन है। भारत को हिन्दू राष्ट्र कहना न तर्कसंगत है और न ही भारत के हित में है।

सर संचालक भागवत का तर्क है कि अमेरिका का रहने वाला अमेरिकन, पाकिस्तान का रहने वाला पाकिस्तानी, जर्मनी का रहने वाला जर्मन और चीन का रहने वाला चीनी कहलाता है तो हिन्दुस्तान का रहने वाला हिन्दू कहलाया जाना चाहिए।

यह प्रमाणित तथ्य है कि आर्य जाति मध्य एशिया के उत्तरी भाग के निकट उत्तरी फुल प्रांत से अतिजाड़ा, अकाल और सूखा के कारण भाग कर ईरान में आकर बस गयी और कुछ काल ईरान में रुकने के बाद भारत में आयी। ईरान में अवेस्ता ग्रंथ लिखा गया है जो आर्यों का-न होकर वहां के मूल ईरानियन का है अवेस्ता में आर्यों के लिए आर्य और हिन्दू दोनों शब्दों का प्रयोग हुआ है। अवेस्ता में सिंध या सिंधु नहीं है। अवेस्ता में प्रयुक्त हिन्दू शब्द का अर्थ चोर लुटेरा–मूर्तिपूजक के रूप में किया गया है। फ़ारसी भाषा में भी हिन्दू का अर्थ यही है। यह शब्द वहीं किसी जाति या संप्रदाय के लिए प्रयुक्त नहीं है किन्तु चूंकि आर्य वहां गुज़ारा करने के लिए लूट खसोट का ही काम करते थे इसलिए वे आर्यों को ही हिन्दू कहकर पुकारते थे। जब ईरान से इन्हें भगा दिया गया और वे भारत में आकर सिंध प्रांत में बस गये तो ईरानी और अरेबियन इन्हें आर्य और हिन्दू दोनों ही शब्दों से पुकारते रहे। आर्य नस्ल का नाम हिन्दू पड़ गया तब हिन्दू जाति या नस्ल का नाम नहीं था, तब यह शब्द आर्य नस्ल का विशेषण था।

आर्यों ने अपने को हिन्दू कहलाना पसन्द नहीं किया इसलिए भारत में आकर आर्यों ने जो वेदों की रचना की उसमें उन्होंने अपने को आर्य तो कहा, किन्तु हिन्दू नहीं कहा। सिंध और गंगा के बीच जिस भूभाग पर उन्होंने अपना अधिपत्य जमा लिया उसे उन्होंने आर्यावर्त कहा। आर्यावर्त का अर्थ है–आर्यों का मक़ाम, आर्यों का स्थान।

वेदों के बाद शास्त्र, उपनिषद, धर्मसूत्त, पुराण और महाकाव्य रामायण महाभारत लिखे गये किसी में भी आर्यों ने अपने लिए हिन्दू शब्द का प्रयोग नहीं किया। उस समय तक हिन्दू शब्द बाहरी लोगों का दिया हुआ घृणित शब्द माना जाता रहा। 1875 में दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की, उन्होंने अपने को हिन्दू समाज का न मानकर हिन्दू शब्द प्रयोग नहीं किया। इस प्रकार जो 19वीं सदी तक हिन्दुओं ने ग्रंथ लिखे उनमें 'हिन्दू' शब्द का प्रयोग नहीं किया। उक्त सभी ग्रंथों में आर्य शब्द ही प्रयुक्त हुआ है।

वैदिक काल में भरत नाम के क़बीले का ज़िक्र आता है इसका उल्लेख वेदों में भी आता है। भरत क़बीला हमारे देश की एक आला नस्ल का क़बीला है जो आर्य नेस्ल से भिन्न था। यह क़बीला आर्यों से पहले यहां रहता था और वही क़बीला शासक था। पूरा सिंध प्रांत इसके शासन के अधीन था। इस भरत क़बीला के नाम पर ही इस देश का नाम भारत पड़ा है, जैसे आर्य नस्ल ने अपनी सत्ता के क्षेत्र का नाम आर्यावर्त रख लिया था। हमारे संविधान में देश का नाम 'इंडिया दैट इज़ भारत' है हिन्दुस्तान नहीं।

किसी भी देश का नाम धर्म पर नहीं होता है। इस्लाम, हिन्दू, क्राइस्ट या बौद्ध नाम का कोई देश नहीं है जिस प्रकार देश का नाम धर्म पर नहीं होता है उसी प्रकार जाति का नाम भी धर्म के नाम पर नहीं होता है। हिन्दू अपने धर्म को हिन्दू धर्म कहते हैं और हिन्दू जाति का नाम धर्म के नाम पर रखा गया है। यह हिन्दुओं के सम्प्रदायवादी (कम्युनल) होने का सबसे बड़ा प्रमाण है।

अधिकांश देशों में एक धर्म के लोग रहते हैं। भारत बहु धर्मों देश है। यहां हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, सिख और ईसाई सब धर्मों के लोग रहते हैं। सभी देशों के लोगों को देश के नाम से पुकारा जाता है धर्म के नाम से नहीं। जैसे जर्मनी के लोग जर्मन बोले जाते हैं पर धर्म उनका क्रिश्चियन है।

जर्मन कोई धर्म नहीं है। आर०एस०एस० के मोहन भागवत का कथन अज्ञानतापूर्ण है और मक्कारी से भरा है। इस पूरे देश का नाम हिन्दुस्तान कभी नहीं रहा।

1857 में जब राजतंत्र हिल रहा था और रानी झांसी एवं बहादुर शाह ज़फ़र सभी अपने-अपने क़िलों को बचाये रखना चाहते थे उन्हें देश से भी कोई मतलब नहीं रह गया था। देश के इन राजाओं ने भी इस देश का नाम हिन्दुस्तान कभी नहीं बोला। तब हर राज्य ही अलग देश था दूसरे राजा का अपना देश था। एक राजा के राज्य सीमा से बाहर का क्षेत्र परदेश कहा जाता था। किसी राजा तक ने अपने राज्य को हिन्दुस्तान नहीं कहा सबने अपने राज्य का नाम लिया है। हिन्दू शब्द मुसलमानों का दिया हुआ है पर पूरे देश को हिन्दुस्तान उन्होंने भी नहीं कहा। सिंध प्रांत से हटकर पूर्व की ओर बिहार और असम तक के लोगों को उन्होंने भी हिन्दू नहीं कहा।

भागवत की बात तर्कसंगत नहीं है। अमेरिका देश का आदमी अमेरिकन, पाकिस्तान का पाकिस्तानी बोला जाता है यह बात सही है किन्तु इस मिसाल से हिन्दुस्तान का आदमी हिन्दुस्तानी बोला जाएगा हिन्दू नहीं। अमेरिकन और पाकिस्तानी शब्द धर्म का अर्थ नहीं देते हैं अर्थात अमेरिकन और पाकिस्तानी कोई धर्म नहीं है किंतु हिन्दू शब्द धर्म का अर्थ देता है। जिन्होंने इस देश के लिए हिन्दुस्तान शब्द का प्रयोग किया था उन्होंने हिन्दुस्तान को हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई चारों धर्मों के लोगों को हिन्दुस्तानी माना था और देश को चारों धर्मों का देश माना था अकेले हिन्दुओं का देश नहीं माना था। उनके हिन्दुस्तान का अर्थ हिन्दू नहीं था।

सच्चाई यह है कि यह देश हिन्दुस्तान भी नहीं है 'भारत' है। इसीलिए हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने 'भारत माता की जय' का नारा लगाया था 'हिन्दू माता की जय' का नहीं।

स्मरण रहे कि 'हिन्दू' का अर्थ कभी संपूर्ण देशवासियों के रूप में नहीं लिया गया न समझा गया। हिन्दू एक संप्रदाय है इसी प्रकार मुसलमान, ईसाई, बौद्ध अलग-अलग संप्रदाय है, जो हिन्दू संप्रदाय से भिन्न है। इन सभी संप्रदायों के धर्म अलग-अलग हैं और संस्कृतियां भी अलग-अलग हैं। अलग-अलग धर्म व संस्कृति होने के कारण हम इस देश के सभी लोगों को हिन्दू नहीं कह सकते।

भारत एक राष्ट्र नहीं है। राष्ट्र के लिए एक राष्ट्रीय भावना होना चाहिए। कोई देश तभी राष्ट्र होता है जब उसमें रहने वाले लोगों के बीच भाईचारा और सौहार्द हो। किसी देश के सारे लोगों में यह भाव तभी हो सकता है जब उनका धर्म और जीवन जीने की शैली एवं संस्कृति एक हो। जब यहां धर्म और संस्कृति के नाम से सब एक न हों, सब अलग-अलग हों तब उस देश के लोगों में राष्ट्रीय भावना पैदा नहीं हो सकती है। इसको आज हम अपने देश में व्यवहार में देखते हैं कि हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, दलित सब आपस में लड़ते रहते हैं।

हिन्दुत्व का जुनून पाले एक हिन्दू ने ग्राह्म स्टेंस और उनके बच्चों का ज़िन्दा ही जला डाला यह आरोप लगाकर कि वह अपने धर्म का प्रचार भारत में कर रहा था। हिन्दू मुसलमान झगड़े रोज़ होते हैं। गुजरात में दो हज़ार मुसलमान हिन्दुओं ने मार डाले, दलितों के हज़ारों सामूहिक नरसंहार हिन्दुओं द्वारा किये गये हैं। ये वैमनस्यता का भाव यह प्रमाणित करता है कि हम एक राष्ट्र नहीं हैं। भेदभाव इस सीमा तक है कि एक-दूसरे धर्म वाले एक-दूसरे के साथ न उठ-बैठ सकते हैं न खा-पी सकते हैं। विवाह संबंध तो बहुत दूर की बात है। हिन्दू तो अपने धर्म का बताते हुए भी दलित आदिवासियों के छू जाने तक से नफ़रत करता है। विचारणीय है ऐसा दलित शूद्र हिन्दू कैसे हो सकता है। भागवत के पास उसका कोई जवाब नहीं है कि एक हिन्दू जिससे नफ़रत करता है वह हिन्दू कैसे है।

इस्लाम ईसाइयत और बौद्ध में वर्ण व्यवस्था नहीं है हिन्दू वर्ण व्यवस्था वाली जमाअत है। वर्ण व्यवस्था हिन्दू के हर ग्रंथ/शास्त्र में है, जबकि क़ुरआन व बाइबल में वर्ण व्यवस्था नहीं है। भारत का दलित पिछड़ा वर्ण व्यवस्था को नहीं मानता है हिन्दू यह व्यवस्था जबरन थोपता है। हिन्दू वर्ण व्यवस्था को मानता है अन्य धर्मों को नहीं मानते तो सारे लोग हिन्दू कैसे हो गये। इससे स्पष्ट है कि हिन्दुस्तान का रहने वाला हर व्यक्ति हिन्दू नहीं है। संघ सरसंचालक हर समय अनर्गल बोलते हैं। वह कभी सबको हिन्दू कहते हैं। वे तो कभी भारत को हिन्दू राष्ट्र बताते हैं। जब भारत के सारे लोगों में धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक एकता है ही नहीं तो सभी लोग हिन्दू और भारत हिन्दू राष्ट्र कैसे हो सकता है।

एस०एल० सागर (एडवोकेट)
मैनपुरी (उ०प्र०)

राजनीति और भ्रष्टाचार

सच्चचरित्रता जीवन की अमूल्य निधि है, मानवता का शृंगार है । यह वह प्रकाश ज्योति है, जिसके सामने अंधकार नहीं टिक सकता । यह वह सुरसरि है, जिसमें स्नान करने से शरीर नहीं बल्कि हृदय पवित्र हो जाता है । यह वह शक्ति है जो जीवन में आध्यात्मिकता का संचार करती है । यह वह सुगंध है जो जीवन को सुरमित्र करती है । यह आत्मा का पोष्टिक रसायन है ।

पर आज सच्चरित्रता का ह्रास हो रहा है । भ्रष्टाचार जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रविष्ट हो गया है । सर्वत्र इसी का बोलबाला है इसी का बाज़ार गर्म है । क्या कार्यालय क्या न्यायालय ऐसा कौन-सा स्थान है जहां यह न पहुंच पाया है ? कौन-सा ऐसा कार्य है जो पैसा देकर नहीं कराया जा सकता ?

जो व्यक्ति रिश्वत देता है, उसकी पांचों उंगलियां घी में रहती हैं । सफलता इसके इशारे पर नाचती है । इसकी साधना से इसकी अर्चना से आनन्द की पीयूष वर्षा होती है, समृद्धि का सागर लहराने लगता है । इसको सुविधा-शुल्क के नाम से विभूषित किया गया है । इसके भय ये सदाचार पलायन कर गया है, न्याय सिर धुन रहा है । इसके प्रताप से गधे घी पी रहे हैं और घोड़े घास को भी तरस रहे हैं। हत्या जैसे जघन्य अपराध पनप रहे हैं, नारियों की इज़्ज़त लूटी जा रही है । शासन अंधा और बहरा हो गया है । कहां गयी महर्षि वाल्मीकि की उक्ति–"धन पराव विषते विष भारी" आज तो रिश्वत रूप में पैसा अमृत हो गया है । उसे प्राप्त करने के लिए सभी लालायित रहते हैं ।

रिश्वत के विविध रूप हैं । पुरुष पुत्र के विवाह ने दहेज के रूप में धन प्राप्त करने के लिए तरह-तरह की युक्तियां करता है, तरह-तरह के जुगाड़ लगाता है । विद्या के पवित्र मंदिरों में रिश्वत रूपी पिशाचिनी का प्रवेश हो गया है । परीक्षार्थियों के पेपर आउट कराने के लिए नक़ल कराने के लिए परीक्षा केन्द्रक व्यवस्थापक परीक्षार्थियों से पैसा लेते हैं ।

भ्रष्टाचार शासन पर भी आच्छादित हो गया है । सर्वोच्च सत्ताधारी प्रधानमंत्री भी इसका उपचार करने में समर्थ नहीं हैं । मंत्रियों तक का आचरण भ्रष्ट है । अपने अधिकारों का दुरुपयोग करते हुए भ्रष्ट तरीक़ों से संपत्ति संचित करने में लगे हैं । राशन के दुकानदार से लेकर विद्युत विभाग के कर्मचारी तक सभी ने भ्रष्ट तरीक़े अपनाने में अपनी होड़ लगा रखी है ।

प्रश्न उठता है कि क्या रिश्वत की भ्रष्टाचार रूपी विकराल समस्या के समाधान का कोई उपाय है ? उपाय है विद्यालयों से नैतिक शिक्षा का प्रावधान । पाठ्य-पुस्तकों में महापुरुषों के प्रेरणादायक जीवनियों को स्थान दिया जाए । वास्तव में विद्यालय मानव की निर्माणशाला है । अध्यापक उसमें सदाचार के बीज वमन करता है और मानवता की सुन्दर पौध लगाता है ।

भ्रष्टाचार की समस्या के समाधान के लिए समाज में भी जागृति होनी चाहिए । भ्रष्टाचारी अधिकारी के विरुद्ध आन्दोलन किया जाए, उसका घेराव किया जाए । उसके प्रति समाज में ग्लानि उत्पन्न की जाए ।

भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए शासन को भी सक्रिय क़दम उठाने चाहिए । इसके उन्मूलन हेतु शिकायत प्राप्त होने पर केवल भ्रष्टाचारी अधिकारी अथवा कर्मचारी को दंडित करना ही आवश्यक नहीं है परंतु जनजागृति व चेतना लाना अतिआवश्यक है ।

रामस्वरूप झैवर

उपाध्यक्ष साहित्यांचल, भीलवाड़ा (राज०)

क्या जाति मानवता से बड़ी है ?

आज हमारे समाज में जातिवाद की विष वल्लरी जिस प्रकार तेज़ी से फल-फूल रही है, उससे लोकतंत्र तथा सामाजिक सद्भावना को गंभीर ख़तरा उत्पन्न हो गया है । इस समस्या का निराकरण करने के बजाय प्रबुद्ध वर्ग के अनेक शिक्षित जन भी इस विष के सम्पोषण में लगे हैं, जो अनुचित है ।

प्राचीन काल में स्वदेश में जातिवादी व्यवस्था वंशपरंपरागत न होकर गुण कर्माधारित थी तथा अन्तर्जातीय विवाह को सामाजिक मान्यता प्राप्त थी । भीष्म पितामह के पिता राजा शान्तनु ने सत्यवती नामक युवती से विवाह किया था जो निषाद कन्या थी । प्राचीन काल में ऐसे अन्तर्जातीय विवाहों के अनेक उदाहरण मिलते हैं । प्राचीन काल में व्यक्ति की रुचि तथा स्वभाव के अनुसार जातियों का निर्धारण व वर्गीकरण किया जाता था ।

उदाहरणस्वरूप एक पिता के चार पुत्र हैं तथा उनकी रुचि व स्वभाव में अन्तर है । उसका एक पुत्र विद्याव्यसनी एवं पठन-पाठनशील है तो उसे ब्राह्मण कहा जाने लगा ।

द्वितीय पुत्र में क्षत्रियोचित गुण विद्यमान है तो उसे क्षत्रिय के रूप में लोग पुकारने लगे । तृतीय पुत्र की व्यापार तथा दुकानदारी में दिलचस्पी है तो उसे वैश्य माना जाने लगा । इसी प्रकार चतुर्थ पुत्र में सेवा भाव है तो उसे शूद्र कहा जाने लगा । मगर आजकल जाति व्यवस्था वंशानुगत हो गयी है । एक ब्राह्मण पुत्र ने बेरोज़गारी में जीविकोपार्जन हेतु चाय समोसे की दुकान खोल ली मगर उसे वैश्य नहीं, ब्राह्मण ही कहा और माना जाता है, जो ग़लत तथा जाति व्यवस्था की मूल अवधारणा की दृष्टि से अनुचित है । वर्तमान जातिवादी व्यवस्था विकृत है तथा इससे हमें सर्वाधिक नुक़सान यह है कि हम गुण-दोष के आधार पर नहीं, जाति के आधार पर फ़ैसले करते हैं ।

यदि हमारी जाति-बिरादरी का कोई व्यक्ति चुनाव में खड़ा है तो हम उसके स्वभाव संस्कार तथा गुण दोष पर ध्यान न देकर उसे सिर्फ़ इस नाते वोट देते हैं कि वह हमारी जाति का है । जाति के नाम पर भ्रष्ट व ग़लत प्रत्याशी के समर्थन में अपने मताधिकार का प्रयोग कर क्या हम देश, समाज व लोकतंत्र के साथ नाइन्साफ़ी नहीं करते ? हम यह क्यों भूल जाते हैं कि जाति से बड़ा मानवता का नाता है । जाति के संकीर्ण दायरे से ऊपर उठकर जब तक हम व्यापक स्तर पर चिंतन तथा कर्म नहीं करेंगे, यह देश कैसे विकास करेगा ?

विद्या प्रकाश

अचला घाट मार्ग, सिपाह, जौनपुर (उ०प्र०)

अमेरिकी क़ैदी

क्यूबा में स्थित गवांतानामो बे जेल में अमेरिका ने लगभग 175 क़ैदियों को हिरासत में रखा है, जहां उन पर अमानवीय अत्याचार भी जारी हैं । आश्चर्य की बात यह भी है कि आज तक न ही कोई आरोप उन पर तय किया गया और न ही किसी प्रकार का कोई न्यायिक प्रकरण चलाया जा रहा है । जब इन क़ैदियों को अमेरिका स्थानांतरित करने की बात आयी तो उन पर अमेरिकी प्रशासन द्वारा ख़र्च का चिट्ठा खुल गया ।

अमेरिकी प्रशासन ने इन क़ैदियों पर 27 लाख डॉलर प्रत्येक क़ैदी के रूप में लगभग 450 मिलियन डॉलर गत वर्ष ख़र्च किये । इस मामले में उन पर हो रहे ख़र्च का बोझ खुद अमेरिकी आर्थिक दशाओं पर भी पड़ रहा है । लेकिन यह जेल विश्व पटल पर दिखायी नहीं दे रही है अथवा उसे नकारा जा रहा है जो कि विभिन्न आरोपों और दोषों से घिरी हुई है । हमारे देश को इस संबंध में ऐसी आवाज़ अवश्य ही उठानी चाहिए कि उन क़ैदियों पर न्यायसंगत कार्रवाई हो सके ।

मलिक

नागपुर

लाभ चाहिए तो भला करो

जीवन में यदि लाभ चाहिए तो भला करना ही होगा । याद भी उन्हें ही किया जाता है, जिनमें दया होती है । दया हर धर्म का मूल सिद्धांत है । लाभ और भला एक-दूसरे के पूरक हैं । भलाई के बदले आर्थिक लाभ हो या न हो परंतु जिसका भला किया वह तहेदिल से ज़रूर दुआएं देता है । वैसे भी भला करेंगे तो इसे उल्टा पढ़ा जाए तो लाभ ज़रूर मिलेगा । यह कट्टर सिद्धांत है । मनुष्य को मनुष्य के प्रति दयावान रहना चाहिए और हमेशा भले की ही सोचना चाहिए । मनुष्य ही क्यों इस संसार के हर जीव मात्र के प्रति भी हमारा नज़रिया भले के रूप में ही होना चाहिए, तभी ईश्वर खुश होता है । कुरआन में स्पष्ट आदेश है भलाई करने-नेकी करने का । अत: व्यक्ति को दयावान और नेक बनने का अथक प्रयास करते रहना चाहिए ।

घेवर चन्द गोदीका

जयपुर, राजस्थान

सम्मानीय कार्य

'कान्ति' का अक्तूबर 2014 अंक मिला । ज्ञान-विज्ञान और मुसलमान (विशेषांक) बहुत कुछ जानने-समझने को मिला । इतना तो अवश्य आइडिया था कि हमारे मुस्लिम भाइयों ने दुनिया में हर क्षेत्र में कुछ न कुछ किया था- लेकिन इस अंक, इस दस्तावेज़ को पढ़ने के बाद मैं अभिभूत रह गयी ।

वाक़ई ये तो कमाल की बात है । इतना कुछ कर जाना देश हित में ये तो सम्माननीय कार्य है । इन भाइयों की जितनी भी तारीफ़ की की जाए कम है । अंक संग्रहणीय और प्रेरणादायी है । एक साथ इतनी बड़ी उपलब्धियों को प्रकाश में लाना क़ाबिले तारीफ़ है, वरना तो कई लोग बहुत कुछ करके भी गुमनाम रह जाए । इस अंक के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया ।

माला वर्मा

हाजीनगर, पं० बंगाल

इस्लाम में सहानुभूति और सहयोग का महत्व

■ सैयद जलालुद्दीन उमरी

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) मक्का में तेरह साल तक इस्लाम की दावत देते रहे । आपकी इस तेरह वर्षीय दावत का केन्द्रीय विषय था–अल्लाह की बन्दगी और उसके बन्दों के साथ सहानुभूति और सहयोग, क्योंकि यही इस्लाम की बुनियादें हैं और इन्हीं से अन्य तमाम चीज़ें निकलती हैं । जो लोग मुहम्मद (सल्ल॰) की इस दावत को स्वीकार करते, उन्हें आप आख़िरत (परलोक) में सफलता की शुभ सूचना देते और जो इससे इन्कार करते उन्हें असफलता की चेतावनी देते । इन्हीं दो बुनियादों को मज़बूत बनाने के लिए बार-बार और ताकीद के साथ नमाज़ और ज़कात का आदेश दिया गया है । नमाज़ में बंदा अपनी आध्यात्मिक भावनाओं को व्यक्त करता है और ज़कात के द्वारा इस बात का ऐलान करता है कि वह बंदों का भला चाहने वाला और हमदर्द है, वह अपनी कमाई हुई पूंजी से उनकी मदद कर सकता है । जब तक ये बुनियादें मज़बूत न हों दीन (इस्लाम) स्थापित नहीं हो सकता । नमाज़ जब तक ज़िन्दगी में उतर न जाए इन्सान की भावनाओं और अनुभूतियों में बन्दगी की रूह पैदा नहीं हो सकती ।

उसी प्रकार जो हृदय सहानुभूति और हमदर्दी के भाव से ख़ाली हो उनमें श्रेष्ठ नैतिक गुणों का उभरना संभव नहीं है । इन्सानों को प्रेम के रिश्ते में जोड़ने का यही एक साधन है । इसके बिना उनमें दयालुता एवं सहानुभूति की भावनाएं नहीं पायी जा सकतीं । वे एक-दूसरे के लिए बलिदान और त्याग नहीं दे सकते और उनके अन्दर नर्मी एवं क्षमा करने के गुण नहीं पैदा हो सकते । इस्लाम ने सामूहिक एवं सामाजिक निर्देश देने से पहले ऐसे व्यक्ति तैयार किये जो अल्लाह के आज्ञापालन और उसके बन्दों के शुभेच्छुक थे । जब वे इस योग्य हो गये तो उनके सामने दीन (इस्लाम) का विस्तृत स्वरूप पेश किया और उन पर अमल करना उनके लिए सरल हो गया ।

कुरआन के अनुसार वह ईमान वालों का प्रमुख गुण इस प्रकार बयान करता है, "वे नमाज़ क़ायम करते और ज़कात देते हैं ।" (कुरआन, 23:24) कुरआन बताता है कि क़ियामत के दिन जहन्नम में जाने वाले अपने अपराध को इन शब्दों में स्वीकार करेंगे, "हम नमाज़ियों में नहीं थे और मुहताज को खाना नहीं खिलाते थे ।" (कुरआन, 74:43-44)

जब तक इन्सान ख़ुदा की इबादत करने वाला और बन्दों का भला चाहने वाला न हो दीन उसके लिए एक भारी बोझ है, जिसे उठा कर वह अधिक दूर तक नहीं चल सकता ।

सहानुभूति-सहयोग और अल्लाह की बन्दगी में संबंध

यदि आप विचार करेंगे तो ये दोनों बातें एक ही नज़र आएंगी । ख़ुदा के आगे श्रद्धा एवं प्रेम के साथ झुक जाना और उसकी राह में अपनी प्रिय चीज़ों को कुरबान करना एक ही हक़ीक़त के दो रुख़ हैं । यह एक ही भाव है जो अमल में आता है तो दो विभिन्न रूप धारण कर लेता है । जहां अल्लाह की बन्दगी होगी, वहां अनिवार्य रूप से अल्लाह के बन्दों के साथ प्रेम भी होगा, वरना समझा जाएगा कि बन्दगी में खोट है ।

अरब के बहुदेववादी नमाज़ पढ़ते थे, परंतु कुरआन ने उन्हें चेतावनी दी और कहा, कि वे नमाज़ के एक स्वरचित रूप पर अमल करते हैं और नमाज़ की आत्मा एवं वास्तविकता से अनभिज्ञ हैं । इसके पक्ष में यह तर्क दिया कि उनके दिल ज़रूरतमंदों और मुहताजों के हक़ में नर्म नहीं पड़ते । वे उन्हें धुतकारते और धक्का देते हैं । उनकी संकीर्ण हृदयता का यह हाल है कि आम उपयोग की चीज़ें तक किसी को नहीं देते । (कुरआन, अल-माऊन)

इससे मालूम होता है कि कुरआन मुहताजों की मदद को अनिवार्य समझता है । वह इसकी कल्पना नहीं कर सकता कि एक चीज़ हो और दूसरी चीज़ न हो, क्योंकि ये दोनों धाराएं तक स्रोत से निकली हैं । जो दिल अल्लाह के प्रेम से भरा हो उसे बंदों की मुसीबत में बेचैन होना चाहिए । यही कारण है कि कुरआन अल्लाह की बन्दगी और अल्लाह के बंदों के साथ सहानुभूति एवं भलाई चाहने का एक साथ उल्लेख करता और उन्हें एक समान महत्व

देता है । उसके निकट वे बिल्कुल एक-दूसरे के पूरक हैं । कभी-कभी तो उसने सहानुभूति और हमदर्दी को इबादत का विकल्प ठहराया है । मानो इन्सानों के साथ भलाई करने का संबंध उनके रब से संबंध का प्रमाण है ।

'रोज़ा' विशुद्ध इबादत का एक रूप है, जिसमें इन्सान अल्लाह के लिए भूखा-प्यासा रहता है और अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखता है, परंतु आप देखेंगे कि क़ुरआन मुसीबत में घिरे इन्सानों की मदद और उनका भला चाहने को उस विशुद्ध इबादत के बराबर कर देता है ।

यदि कोई व्यक्ति अपनी बीवी को मां घोषित कर दे और फिर उससे रुजू करना चाहे तो प्रायश्चित के रूप में एक गुलाम आज़ाद करे या निरंतर साठ रोज़े रखे या साठ मुहताजों को खाना खिलाए (58:3)। क़सम का प्रायश्चित यह बयान किया गया है कि दस मुहताजों को खाना-कपड़ा दिया जाए या किसी गुलाम को आज़ाद किया जाए या तीन दिन के रोज़े रखे जाएं । (क़ुरआन, 5:89)

जो व्यक्ति हज का समय आने तक उमरा (दर्शन) से लाभ उठाना चाहे उसके लिए आदेश है कि वह क़ुरबानी दे और यदि क़ुरबानी का जानवर न मिले तो दस रोज़े रखे । (क़ुरआन, 2:196)

इन आदेशों में गुलाम आज़ाद करने, मुहताजों को खाना-कपड़ा देने और क़ुरबानी को रोज़े के बराबर हैसियत दी गयी है ।

इबादतों में जो त्रुटि रह जाए उसकी भरपाई का भी यही उपाय बताया गया है कि ख़ुदा के बंदों के साथ भलाई की जाए । 'इहराम' की हालत में बाल मुंडवाने पर प्रतिबंध है यदि किसी कष्ट के कारण इन्सान को बाल मुंडवाना पड़े तो आदेश है कि रोज़ा रखे या क़ुरबानी दे या सदक़ा करे । (क़ुरआन, 2:196)

रमज़ान के रोज़ों के बाद फ़ितरा (दान) की व्यवस्था की गयी है और इसकी यह वजह बतायी गयी है कि इससे रोज़ों में जो बुरे एवं अप्रिय कार्य हो जाते हैं, उनकी भरपाई हो जाती है । (अबू दाऊद)

इससे भी आगे की बात यह कि जो लोग अपने बुढ़ापे या रोग के कारण रोज़ा न रख सकें, उन्हें रोज़े के बदले किसी मुहताज को खाना खिलाने का आदेश है ।

ख़ुदा की नेमतों का एहसास

ये दलीलें इस बात का सबूत हैं कि इबादत और लोगों के प्रति सहानुभूति एवं उनकी सहायता में गहरा एवं निकट संबंध है । इबादत की रूह यह है कि इन्सान ख़ुदा की नेमतों और एहसानों को जब सोचे तो कृतज्ञता की भावना से उसका दिल चमक जाए और वह व्याकुल होकर स्वयं को ख़ुदा के सामने डाल दे । लोगों के प्रति सहानुभूति और उनकी सहायता के पीछे यही रूह काम कर रही है । इन्सान जब देखता है कि उसे देखने को आंख, बोलने को ज़बान, सोचने-समझने के लिए बुद्धि और जीवन व्यतीत करने के लिए आवश्यक वस्तुएं प्राप्त हैं और दूसरे ख़ुदा के बन्दे इन नेमतों से वंचित हैं ।

उन्हें जीवित रहने के लिए खाना-कपड़ा प्राप्त नहीं है, तो सहसा वह ख़ुदा का शुक्र बजा लाता है और अपनी दौलत का एक हिस्सा उनके लिए निकाल देता है । वह सोचता है कि यदि आज मैं ख़ुदा के ज़रूरतमंद बन्दों के काम आऊं तो शायद कल क़ियामत के दिन ख़ुदा मुझे किसी ज़रूरत से बचाए । आज यदि मैं किसी बंदे को कपड़ा पहनाऊं तो कल शायद ख़ुदा मुझे नग्नता से बचा ले और यदि किसी भूखे को खाना खिलाऊं तो ग़रीबी और मुहताजी से मुक्ति दे ।

ख़ुदा की नेमतों को पाने के लिए यदि किसी के अन्दर यह भावना न उभरे तो इसका मतलब यह है कि उसका दिल ख़ुदा की नेमतों के एहसास से ख़ाली है । ख़ुदा को छोड़कर अन्य की इबादत करने वालों की मानसिकता की यही ख़राबी है कि वह अपने अस्तित्व और इस ब्रह्माण्ड से लाभ तो उठाती हैं, परंतु उसे ख़ुदा का दिया हुआ नहीं समझती । उसके निकट नेमतों से भरी यह दुनिया मात्र संयोग का करिश्मा है और यह भी एक संयोग ही है कि उसके अपने अस्तित्व में शक्तियों और योग्यताओं का भंडार एकत्र हो गया है जिसके द्वारा वह इस ब्रह्माण्ड से लाभ उठा रही है ।

यह परिकल्पना इन्सान के अन्दर से दया और प्रेम की भावनाओं को समाप्त करने वाली है । इन्सान को जो कुछ मिला है यदि वह किसी का दिया हुआ नहीं है तो उसमें किसी का कोई हिस्सा भी नहीं हो सकता । अनेक ख़ुदाओं को मानने वाला मस्तिष्क ख़ुदा की कल्पना ही तो करता है, परंतु यह कल्पना धुंधली और अस्पष्ट होती है । वह इन्सान को ख़ुदा की नेमतों को समझ पाने का वास्तविक विवेक नहीं प्रदान करता ।

क़ुरआन इन्सान के अन्दर यह सोच उभारता है कि इस दुनिया में जो कुछ मिला है, वह ख़ुदा की ओर से मिला है, इसलिए स्वयं ही उसके बंदों का हक़ उसमें वाजिब हो गया है । इसी संदर्भ में क़ुरआन में आया है–

"क्यों हमने उसे दो आंखें और एक ज़ुबान और दो होंठ नहीं दिये और उसे (भलाई और बुराई) की दोनों राहें नहीं दिखायीं ? परन्तु वह घाटी पर नहीं चढ़ा । तुम जानते हो यह घाटी क्या है ? गर्दन का छुड़ाना (गुलाम आज़ाद करना) या फ़ाक़े के दिन खाना खिलाना निकटवर्ती अनाथ को या बदहाल मुहताज को ।" (क़ुरआन, 90:8-16)

नेमतों को ख़ुदा की ओर से समझना कृतज्ञता का एहसास पैदा करता है । और इन्सान को दूसरों के प्रति निष्ठावान और भला चाहने वाला बनाता है । दूसरों को देते हुए उसे यह ख़याल नहीं होता कि वह उन पर एहसान कर रहा है बल्कि ख़ुदा की कृपा एवं दया का एहसास उसके अन्दर जाग उठता है । वह सोचता है कि आज जो नेमतें मुझे प्राप्त हैं उन्हें प्राप्त करने में मेरी कोशिशों एवं मेहनतों का कोई हाथ नहीं है, उनसे मैं वंचित भी हो सकता था और यह मुझ से छिन भी सकती हैं । यह एहसास आदमी को विवश करता है कि जो नेमतें उसे मिली हैं उन पर सांप की तरह क़ब्ज़ा न जमाये रहे, बल्कि उन्हें ख़ुदा का अनुदान समझ कर उसकी राह में ख़र्च करे ।

इस्लाम के निकट इसी भावना का वास्तविक मूल्य है । यदि वह भावना न हो तो आदमी हज़ार ख़र्च करे इस्लाम उसे निष्फल समझता है । यह वैसा ही है जैसे कोई व्यक्ति किसी धूल जमी चट्टान पर इस उम्मीद पर बीज छींट दे कि उससे खेती होगी ।

इस भावना को उभारने के साथ इस्लाम ने निश्चित रूप से बताया कि न्याय एवं इन्साफ़ के उसूल क्या हैं और जुल्म की सीमा कहां से शुरू होती है ? अपने जैसे दूसरे लोगों के साथ किन आधारों पर मामला करना चाहिए और वे कौन से तरीक़े हैं जो उनके मामलों को ग़लत और झूठा बना देते हैं ?

इस प्रकार उसूल निर्धारित करने के बाद व्यक्ति और समाज दोनों के लिए आसान हो जाता है कि वे इस कसौटी पर इन्सान के मामलों का जायज़ा ले सके और उनमें जो ग़लती हो उसका सुधार करे ।

जो संबंध ख़ुदा पर यक़ीन और उसकी हिदायत की बुनियाद पर अस्तित्व में आये और जो संबंध दूसरे कारकों के नतीजे में पैदा हों, उन दोनों में ज़मीन और आसमान का अन्तर है ।

पहले प्रकार से संबंध उस समय तक टूट नहीं सकते, जब तक कि ख़ुदा का आदेश उन्हें न तोड़ दे, परंतु दूसरे प्रकार के संबंध हर क्षण टूट सकते हैं । ख़ुदा पर यक़ीन रखने वाला इन्सान उन तमाम संबंधों को निभाने पर विवश है जिनके निभाने का ख़ुदा ने आदेश दिया है, चाहे उसकी इच्छा हो या न हो, चाहे उसके साथ ज़ुल्म हो या इन्साफ़, परंतु जिस व्यक्ति को ख़ुदा पर यक़ीन न हो वह हर उस संबंध को तोड़ सकता है, जिसमें उसका नुक़सान हो और अगर उसका फ़ायदा हो तो अपने निकटतम संबंधी को भी धोखा दे सकता है । वह जवाबदेही के भय से ख़ाली नहीं होता है इसलिए उससे हर प्रकार की बेवफ़ाई संभावित है, परन्तु एक मोमिन (ईमान वाला) अपने दुश्मन के साथ भी धोखा और बेवफ़ाई नहीं कर सकता, इसलिए कि उसका ख़ुदा इससे रोकता है ।

सहानुभूति-सहयोग का प्रारंभ

जब इन्सान लोगों के साथ सहानुभूति और उसकी सहायता की भावना के साथ व्यवहार की दुनिया में आता है, तो उसके सामने सबसे पहले पत्नी, बच्चे, मां-बाप, भाई-बहन, पड़ोसी और रिश्तेदार आते हैं, क्योंकि इन्हीं से दिन-रात उसका सामना होता है । इस्लाम के निकट यही निकटतम लोग सबसे ज़्यादा इन्सान के सदाचरण एवं सेवा का अधिकार रखते हैं । इन्हें छोड़कर दूसरों पर वह ख़र्च नहीं कर सकता ।

एक बार एक व्यक्ति ने मुहम्मद (सल्ल॰) से सवाल किया कि मेरे पास एक दीनार है, उसका उपयोग क्या है ? आप (सल्ल॰) ने जवाब दिया, "उसे स्वयं पर ख़र्च करो ।" उसने कहा, "मेरे पास एक और दीनार भी है ।" आपने कहा, "अपनी औलाद पर ख़र्च करो ।" उसने कहा, "मेरे पास एक तीसरा दीनार भी है ।" आपने कहा, "उसे अपनी बीवी पर ख़र्च करो ।" उसने कहा, "मेरे पास चौथा दीनार है ।" आपने कहा, "यह तुम्हारे गुलाम का हिस्सा है ।" उसने कहा मेरे पास और एक और दीनार है ।" आपने कहा, "उसका उपयोग अब तुम ख़ुद समझ सकते हो ।"

(अबू दाऊद)

इन्सान को सदाचरण और भलाई करने का प्रारंभ अपने

निकटतम व्यक्तियों से करना चाहिए । यह एक स्वाभाविक बात है, क्योंकि इन्सान उन लोगों की मदद करने में कोई कठिनाई महसूस नहीं करता, जो उससे क़रीब हों, बल्कि वह अपने अन्दर इसकी प्रेरणा पाता है । इस्लाम ने इस स्वाभाविक मनोवृत्ति को क़ानूनी हैसियत दे दी, ताकि हर आदमी हर हाल में इसका पाबन्द रहे ।

इन्सान जिस चीज़ का मालिक है, उसके सबसे अधिक अधिकारी वही लोग हो सकते हैं जो उसके आसपास रहते हैं और उसके दुख-दर्द में सम्मिलित रहते हैं । यदि किसी का बाप भूखा मर रहा हो तो उसके लिए सही नहीं होगा कि वह अपनी दौलत उन लोगों पर ख़र्च करे, जिनसे उसका सिवाय इन्सान होने के और कोई रिश्ता नहीं है । उसका बाप उससे इन्सानियत का भी रिश्ता रखता है और वंशानुगत संबंध भी । इसलिए वह उसके सदाचरण का दोगुना अधिकार रखता है । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा–

"किसी ज़रूरतमंद पर सदक़ा मात्र सदक़ा है, परंतु रिश्तेदार पर सदक़ा सदक़ा भी है और प्रत्युपकार भी ।"

(अहमद, तिरमिज़ी, नसई, इब्ने माजा)

तात्पर्य यह कि रिश्तेदार के साथ सदाचरण का सवाब दोगुना मिलेगा । इसका सबसे बड़ा फ़ायदा यह कि समाज का कोई भी व्यक्ति अपने आपको बेबस, लाचार और बेसहारा नहीं महसूस कर सकता, क्योंकि सहयोगी और परोपकारी व्यक्तियों का एक वर्ग उसके निकट हमेशा मौजूद रहता है । बाप बेटे का मददगार और बेटा बाप का मददगार, भाई-भाई का मददगार, एक रिश्तेदार दूसरे रिश्तेदार का मददगार । यह विश्वास आदमी के अन्दर असीम शक्ति एवं स्फूर्ति पैदा करता है ।

सहानुभूति-सहयोग की व्यापकता

लोगों के प्रति सहानुभूति और उनकी सहायता के लिए प्रत्येक व्यक्ति के चारों ओर किसी दायरे के खींच देने का मतलब यह नहीं है कि इस दायरे से बाहर सहानुभूति और सहायता का कोई मूल्य नहीं या इस्लाम इसको ग़लत समझता है । इसका मतलब केवल यह है कि इन्सान के माल-दौलत से वे लोग वंचित न रहें, जो उसके निकट हैं । यह मात्र एक क्रम से प्रधानता देने का सवाल है, वरना इस्लाम इसे किसी इन्सानी समाज का अपमान क़रार देता है कि उसके कुछ लोग भूखे और नंगे मर रहे हों और कुछ ऐशोआराम की ज़िन्दगी गुज़ारते हों । वह इन्सानियत की बुनियाद पर सारे समाज का निर्माण करता है । उसकी शिक्षा है कि दोस्त, दुश्मन, अपना-पराया, अजनबी, ग़ैर-अजनबी, देशवासी एवं विदेशी के अन्तर के बिना सदाचरण किया जाए । उसके निकट इन्सान-इन्सान के रूप में एक मूल्यवान निधि है । वह किसी भी प्रकार से उसे बर्बाद होने को पसन्द नहीं करता । इसलिए वह प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य समझता है कि दूसरे व्यक्ति को बचाने का हर संभव प्रयास करे, वरना ज़मीन पर ख़ुदा की एक नेमत को वह बर्बाद करने का अपराधी होगा ।

ज़ुल्म हमेशा सत्ता एवं सरकार के साथ रहा है, जहां इन्सान को सत्ता मिली उसने अपने आपको सर्वशक्तिमान समझ लिया और जिस कमज़ोर को पाया भेड़-बकरी की तरह ज़ब्ह करना शुरू कर दिया । इस अत्याचार के कोपभाजन मुख्यतः तीन वर्ग बनते रहे हैं । औरत, गुलाम और प्रजा । इन तीनों वर्गों के साथ गुलामी और शासित की कल्पना चिपक गयी थी और न्याय एवं इन्साफ़ तो जैसे उनका अधिकार था ही नहीं । औरत की सारी कहानी उत्पीड़न की कहानी है । ज़ुल्म का वह कौन-सा तीर है, जो उस पर आज़माया नहीं गया । इस्लाम ने औरत को मर्द का एक अंग बताया । इस प्रकार उसने यह वास्तविकता स्पष्ट की कि औरत पर मर्द की ओर से जो ज़ोर-ज़बरदस्ती होती है, वह ख़ुद उसके अपने वजूद पर ज़्यादती है । ज़ालिम मर्द औरत पर ज़ुल्म नहीं करता, बल्कि अपने आप पर करता है । गुलामी के चिह्न आज तक कुछ सुसभ्य देशों में मौजूद हैं, जिनको देखकर उसके अतीत का अनुमान लगाया जा सकता है ।

इस्लाम ने गुलाम और मालिक के बीच भाईचारा का रिश्ता क़ायम किया और मालिक को आदेश दिया कि जो तुम खाओ वही अपने गुलाम को भी खिलाओ और जो तुम पहनो वही अपने गुलाम को भी पहनाओ । राजा और प्रजा का संबंध भी गुलाम और मालिक के संबंध से भिन्न नहीं था । इन्सानों के एक वर्ग ने दूसरे वर्ग को अपनी सेवा के लिए विशेष रूप से नियुक्त कर रखा था । इस्लाम ने राजा एवं प्रजा की इस परिकल्पना को समाप्त कर दिया और बताया कि हुकूमत ख़िदमत का दूसरा नाम है और जो हाकिम है वह अपनी प्रजा का सेवक है न कि मालिक ।

परम ईश्वरीय वाणी की छांव में

अनूदित क़ुरआन मजीद
उर्दू अनुवाद और संक्षिप्त टीका :
मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी
हिन्दी अनुवाद : मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां
प्रकाशक : इस्लामी साहित्य, प्रकाशन, नयी दिल्ली-2
पृष्ठ : 902, मूल्य (हदिया) : चार सौ रुपये

मनुष्य को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने में विभिन्न धर्मग्रंथों की महती भूमिका रही है । विश्व के सभी धर्म-ग्रंथों ने समय-समय पर मनुष्य जाति का मार्गदर्शन किया है । इससे प्राणी जगत की एकता को सदैव बल मिला है । इस्लाम धर्म में क़ुरआन को अल्लाह का कलाम (ईश्वरीय वाणी) माना जाता है । लेकिन इस वाणी को ईश्वर ने किसी विशेष जाति या वर्ग के लिए नहीं, बल्कि सारे ही मानवों के लिए अवतरित किया है । मनुष्य का कर्तव्य है कि वह प्रभु के संदेश को ठीक तरह से समझे । क़ुरआन मजीद की मूल भाषा अरबी है, जिसके कारण आम लोग इसे समझने में असमर्थ रहते हैं । क़ुरआन के मूल आशय को जन-जन तक पहुंचाने के लिए संसार की विभिन्न भाषाओं में इस धर्म-ग्रंथ के अनुवाद हुए हैं । फ़ारसी में शाह अब्दुल क़ादिर साहब, शाह रफ़ीउद्दीन साहब, मौलाना महमूदुल हसन साहब, मौलाना अशरफ़ अली साहब और मौलवी फ़तह मुहम्मद साहब जालंधरी के अनुवाद विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं । पर ये सभी अनुवाद शाब्दिक अनुवाद हैं, भावानुवाद (तरजुमानी) नहीं । हम सभी जानते हैं कि शाब्दिक अनुवाद की अपनी सीमाएं होती हैं । शाब्दिक अनुवाद में इबारत की रवानी (वार्ता प्रवाह), वर्णन शक्ति, भाषा लालित्य और वाणी का अभाव रहता है । शाब्दिक अनुवाद से पाठक के मन में कोई रागात्मक या भावात्मक-संप्रेषण उत्पन्न नहीं होता । शाब्दिक अनुवाद उसके मर्म को न हीं छू पाता ।

क़ुरआन मजीद के उर्दू अनुवादक और टीकाकार मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी के द्वारा किया गया अनुवाद शाब्दिक अनुवाद के प्रतिबंधनों से मुक्त है । उनके अनुवाद में ईश्वरीय वाणी का अर्थ और आशय साफ़-साफ़ स्पष्ट होने के साथ-साथ उसकी राजसी गंभीरता और उसकी वर्णन शक्ति पूर्ण रूप से प्रतिबिम्बित है । क़ुरआन की सूरतों (क़ुरआन के अभिभाषण और निश्चित खंड) को ठीक तरह से समझाने के लिए जो तफ़्सीर (टीका) प्रस्तुत की गयी है, उससे इस पवित्र वाणी के मूल तत्व की गहराइयों में उतरने में पर्याप्त सहायता मिलती है । इस टीका के द्वारा अनेक भ्रांत धारणाओं के परिहार में मदद मिलती है । अनुवाद के साथ-साथ जो पाद टिप्पणियां (फुटनोट) दी गयी हैं, वे विभिन्न शब्दों, अवधारणाओं तथा आशयों को समझने में विशेष रूप से सहायक हैं । क़ुरआन मजीद एक विशालकाय ग्रंथ है, इसके प्रतिपाद्य को गिने-चुने शब्दों में नहीं प्रस्तुत किया जा सकता । इसके नियमित पठन-पाठन, मनन, श्रवण, अभ्यास और अनुसरण का कोई विकल्प नहीं है । हां, इसके प्राण तत्व की सुगंध को अवश्य ही एक क्षण में महसूस किया जा सकता है ।

क़ुरआन मजीद का हिन्दी अनुवाद हिन्दी भाषी पाठकों के लिए विशेष रूप से उपयोगी है । यह अनुवाद इस्लामी साहित्य के प्रतिष्ठित विद्वान मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां के विचार-मंथन, चिंतन और मनन का प्रतिफल है । क़ुरआन के इस हिन्दी रूपांतर में मूल धर्म-ग्रंथ का पूर्ण भाव स्पन्दित है । अनुवादक की भाषा में सहज, प्रवाह, भाषिक-संप्रेषणीयता, स्पष्टता तथा सरलता परिलक्षित होती है । मूल रूप से अरबी में लिखे इस धर्म-ग्रंथ को हिन्दी में पाकर हिन्दी-भाषी पाठकों को अत्यंत प्रसन्नता होगी । साथ ही, इस अनुवाद के पढ़ने से न केवल क़ुरआन के ईश्वरीय संदेश को सही रूप से समझने में मदद मिलेगी अपितु इसके द्वारा हमारा सही मार्गदर्शन हो सकेगा । क़ुरआन के हिन्दी रूपांतर से अनेक मिथ्या धारणाओं, भ्रांतियों तथा पूर्वाग्रहों का निवारण हो सकेगा । ग्रंथ का आवरण-पृष्ठ बहुत सुन्दर तथा धर्म-ग्रंथ के अंतरंग-स्वरूप के अनुकूल है, मुद्रण श्रेष्ठ तथा समग्र प्रस्तुति निर्दोष है । इस ग्रंथ का सर्वत्र स्वागत होना चाहिए । उर्दू और हिन्दी में अनूदित क़ुरआन मजीद का यह संस्करण सबके द्वारा पठनीय एवं संग्रहणीय है ।

समीक्षक : **डॉ॰ नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम'**
7 च 2, जवाहर नगर, जयपुर-302004

हमारी कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें

इस्लाम एक सामान्य परिचय	—शैख़ अली तंतावी	90.00
इस्लाम एक स्वयंसिद्ध ईश्वरीय जीवन व्यवस्था	—राजेन्द्र नारायण लाल	25.00
प्यारे नबी की पाक ज़िन्दगी	—एजाज़ुल हक़ क़ुद्दूसी	30.00
इतिहास के साथ यह अन्याय	—बी॰ एन॰ पाण्डे	7.00
मेरे दावती तजुर्बात (प्रथम)	—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	25.00
ग़लत फ़हमियों का निवारण	—डॉ॰ ज़ाकिर नाइक	25.00
क़ुरआन और हम मुसलमान	—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	15.00
क़ुरआन का पैग़ाम	—ख़ुर्रम मुराद	10.00
क़ुरआन पर अनुचित आक्षेप	—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	15.00
हमें ख़ुदा कैसे मिला?	—अब्दुल ग़नी फ़ारूक़	100.00
इस्लाम आतंक या आदर्श?	—स्वामी लक्ष्मी शंकराचार्य	40.00
इस्लाम और इनसान (1-6)	—डॉ॰ सैयद शाहिद अली	84.00
दलित समस्या जड़ में कौन?	—इन्तिज़ार नईम	140.00
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) और भारतीय धर्म-ग्रंथ	—डॉ॰ एम॰ ए॰ श्रीवास्तव	18.00
इस्लामी सभ्यता	—मुंशी प्रेम चन्द्र	5.00
क़ुरआन पुकारता है "ऐ लोगो..."	—मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी	12.00
आधुनिक नारी	—नुज़हत यासमीन	10.00
इस्लाम एक मात्र रास्ता	—मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी	12.00
शैतानी धोखे के विभिन्न रूप	—डॉ॰ सैयद शाहिद अली	40.00

हमारी सभी पुस्तकें मर्कज़ी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स से भी प्राप्त की जा सकती हैं।

MADHUR SANDESH SANGAM

E-20, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025
E-mail : madhursandeshsangam@yahoo.co.in, Ph. : 9212356332

व्यापार बनाम ब्याज

■ अबरार अहमद

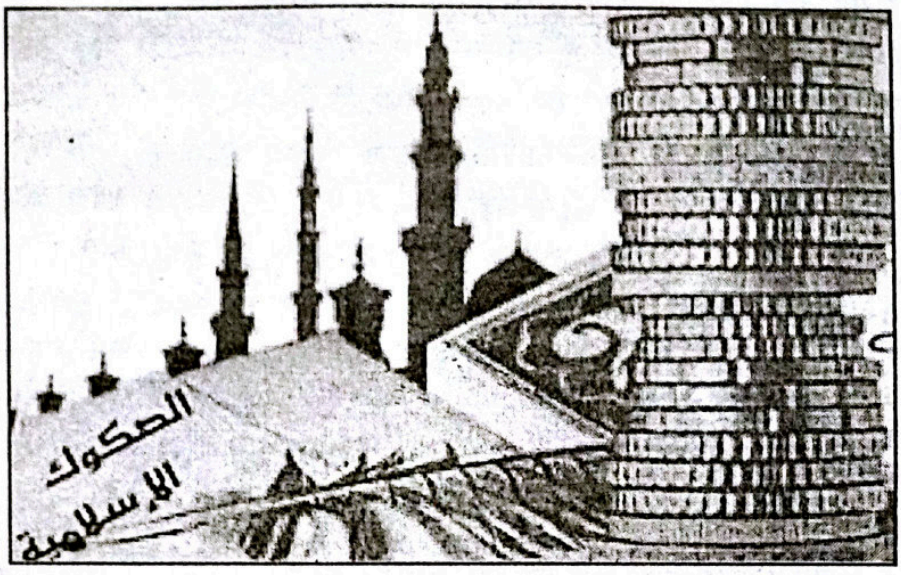

व्यापार में विनिमय होता है, जिसमें लेने और देने की मात्रा निर्धारित कर ली जाती है । व्यापार दो प्रकार का होता है–नक़द व्यापार तथा उधार का व्यापार ।

जब लेने और देने का कार्य वर्तमान समय में होता है, तो इसे नक़द व्यापार कहते हैं, जबकि लेने या देने में से एक कार्य वर्तमान में तथा दूसरा कार्य बाद में होता है, तो इसे उधार का व्यापार कहते हैं ।

व्यापार में ख़रीदने व बेचने वाले के बीच जो बात तय होती है, वह विनिमय की दर होती है, न कि मुनाफ़े की दर ।

व्यापार में कोई व्यक्ति सामान थोक भाव में ख़रीदता है और रिटेल में बढ़े हुए दाम में बेच देता है ।

बेचने वाले के लिए व्यापार फ़ायदे या घाटे का सौदा भले ही हो, लेकिन हक़ीक़त में बेचने और ख़रीदने वाले के बीच महज़ विनिमय होता है । व्यापार में माल कम क़ीमत पर ख़रीद कर ज़्यादा क़ीमत में बेचा जाता है, इसे मुनाफ़ा कहते हैं । यह मुनाफ़ा ख़रीदने वाला तय नहीं करता है ।

उधार के व्यापार को एक उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है । जैसे–एक व्यक्ति आज 2 किलोग्राम घी ख़रीदता है तथा उसका मूल्य 800 रूपये एक सप्ताह बाद देना तय होता है, तो एक सप्ताह बाद वह घी की क़ीमत चुकाता है, परन्तु यदि किसी कारणवश चुकाने में देर हो जाए यानी एक सप्ताह से अधिक हो जाए, तो भी घी की क़ीमत स्थिर रहती है, अर्थात वह समय के साथ बढ़ती नहीं है और घी की क़ीमत में कोई अन्तर नहीं आता है । इस दौरान चाहे बाज़ार में घी का दाम बढ़ भो गया हो, तो भी वह व्यक्ति उतनी ही क़ीमत अदा करेगा, जो उस समय तय हुई थी ।

ब्याज : ब्याज सदैव उधार में होता है । ब्याज में उधार लेने व देने वाले के बीच मुनाफ़ा की दर तय होती है, जिससे समय के साथ-साथ ब्याज बढ़ता जाता है । उदाहरण के लिए आपने 100 किलोग्राम अनाज, 10 किलोग्राम प्रतिमाह की दर से अतिरिक्त आमदनी पर उधार लिया । यदि छह महीने तक न तो आपने 100 किलोग्राम का मूल अनाज लौटाया और न ही 10 किलोग्राम प्रतिमाह की दर से 10 किलोग्राम अनाज लौटा पाए । तंग आकर उधार देने वाले ने मूल अनाज की वापसी की मांग की, परन्तु किसी कारणवश आपके पास अनाज है ही नहीं, तो जब तक आप मूल अनज नहीं लौटाएंगे तब तक 10 किलोग्राम प्रति माह की दर से अनाज बढ़ता जाएगा । यहां आपने 100 किलोग्राम अनाज का उपयोग सिर्फ़ एक बार किया, लेकिन उसका प्रतिफल बार-बार देना पड़ा, यही ब्याज कहलाता है ।

अत: हम देखते हैं कि उधार के व्यापार में क़ीमत स्थिर रहती है, जबकि ब्याज समय के साथ बढ़ता चला जाता है । कुछ लोग ब्याज को उधार के व्यापार के सदृश ठहराते हैं ।

जैसे–''उनका कहना है : ''व्यापार भी तो ब्याज के सदृश है,'' जबकि अल्लाह ने व्यापार को वैध और ब्याज को अवैध ठहराया है ।'' (कुरआन, 2:275)

ऊपर हम ब्याज और उधार के व्यापार में अंतर को स्पष्ट कर चुके हैं । अत: ब्याज को इस्लाम में जुल्म कहा गया है, क्योंकि इसमें माल का इस्तेमाल एक बार किया तथा प्रतिफल बार-बार देना पड़ा । कुछ लोग किराये को ब्याज ठहराते हैं, और कहते हैं कि किराया जायज़ है, तो

ब्याज क्यों नहीं । हालांकि किराया व्यापार की एक शक्ल है तथा इस्लाम की नज़र में जायज़ है क्योंकि किराया भी उधार के व्यापार के समान है, जिसमें क़ीमत स्थिर रहती है । उदाहरण के लिए यदि आपने एक मकान किराये से लिया और किसी कारणवश तीन माह तक किराया नहीं दिया और तंग आकर मकान-मालिक ने मकान ख़ाली करने को कहा, तो आपने मकान ख़ाली कर दिया, तो जो किराया है, वह स्थिर रहता है अर्थात आपके ऊपर जो किराया बाक़ी है, वह उतना ही रहेगा, बढ़ेगा नहीं ।

अत: ब्याज खाना ज़ुल्म है । इसी ज़ुल्म की वजह से हम देखते हैं कि एक मज़दूर ब्याज अदा न करने के कारण बंधुआ मज़दूर बन जाता है, किसान अपने खेत से हाथ धो बैठता है, और आत्महत्या तक कर लेता है ।

अल्लाह ने हर ज़ुल्म को वर्जित किया है, अत: व्यापार का वह तरीक़ा जिसमें ज़ुल्म हो, उसे भी वर्जित किया गया है । उदाहरण के लिए मान लीजिए कोई व्यक्ति 100 रुपये के नोट के बदले हाथों-हाथ एक-एक रुपये के 110 सिक्के लेता है, तो यहां समय का फैक्टर नहीं होने के कारण इसे ब्याज न कहकर, व्यापार का एक तरीक़ा माना जाएगा, जिसे बट्टा कहते हैं । परंतु व्यापार का यह तरीक़ा इस्लाम में नाजायज़ है । क्योंकि यहां एक ही सामान के बीच समान अनुपात में विनिमय न होकर किसी दर पर भिन्न अनुपात में विनिमय हो रहा है और यह भी एक प्रकार का ज़ुल्म है ।

ब्याज के विरुद्ध एक और दलील दी जा सकती है कि यदि कोई व्यक्ति व्यापारिक ऋण लेता है और मुनाफ़ा कमाता है, तो उसका एक अंश वह ऋण देने वाले को देता है, परंतु व्यापार में घाटा लगा और मुनाफ़ा हुआ ही नहीं, तो मुनाफ़े का अंश कैसा ?

अत: व्यापारिक ऋण की अस्ल हक़ीक़त यह होती है कि ऋण देने वाले को इससे कोई मतलब नहीं होता कि ऋण लेने वाले को मुनाफ़ा हो रहा है या घाटा । उसे तो सिर्फ़ इस बात से मतलब है कि उसे निर्धारित दर से ब्याज मिलता रहे । यही कारण है कि ब्याज को ज़ुल्म कहा गया है ।

ब्याज की एक और भयानक शक्ल है–चक्रवृद्धि बयाज । चक्रवृद्धि ब्याज में यदि व्यक्ति ब्याज अदा नहीं कर पाए तो ब्याज की राशि मूलधन में जुड़ जाती है और हर बार मूलधन बढ़ जाता है, जिससे ब्याज दोगुना और चौगुना होता चला जाता है । क़ुरआन में इसे चढ़ता और बढ़ता बयाज कहा गया है–

"ऐ ईमान लाने वालो, यह बढ़ता और चढ़ता ब्याज खाना छोड़ दो और अल्लाह से डरो, आशा है कि सफल होगे ।" (क़ुरआन, 3:130)

अत: प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह हलाल व्यापार करे तथा ब्याज से बिल्कुल दूर रहे, क्योंकि ब्याज खाने वाले को अल्लाह की ओर से युद्ध की घोषणा तक की गयी है–

"ऐ लोगों जो ईमान लाए हो, अल्लाह से डरो और जो कुछ तुम्हारा ब्याज लोगों पर बाक़ी रह गया है उसे छोड़ दो, अगर वास्तव में तुम ईमान लाए हो । लेकिन अगर तुमने ऐसा न किया, तो सावधान हो जाओ कि अल्लाह और उसके रसूल की ओर से तुम्हारे ख़िलाफ़ युद्ध की घोषणा है । अब भी तौबा कर लो (और ब्याज छोड़ दो) तो अपना मूलधन लेने के तुम अधिकारी हो । न तुम ज़ुल्म करो, न तुम्हारे साथ ज़ुल्म किया जाए ।" (क़ुरआन, 2:278, 279)

उपरोक्त आयतों से पता चलता है कि ब्याज़ लेना ज़ुल्म है, परन्तु साथ ही यदि ऋण देने वाले को मूलधन नहीं लौटाया गया तो यह भी एक प्रकार का ज़ुल्म है ।

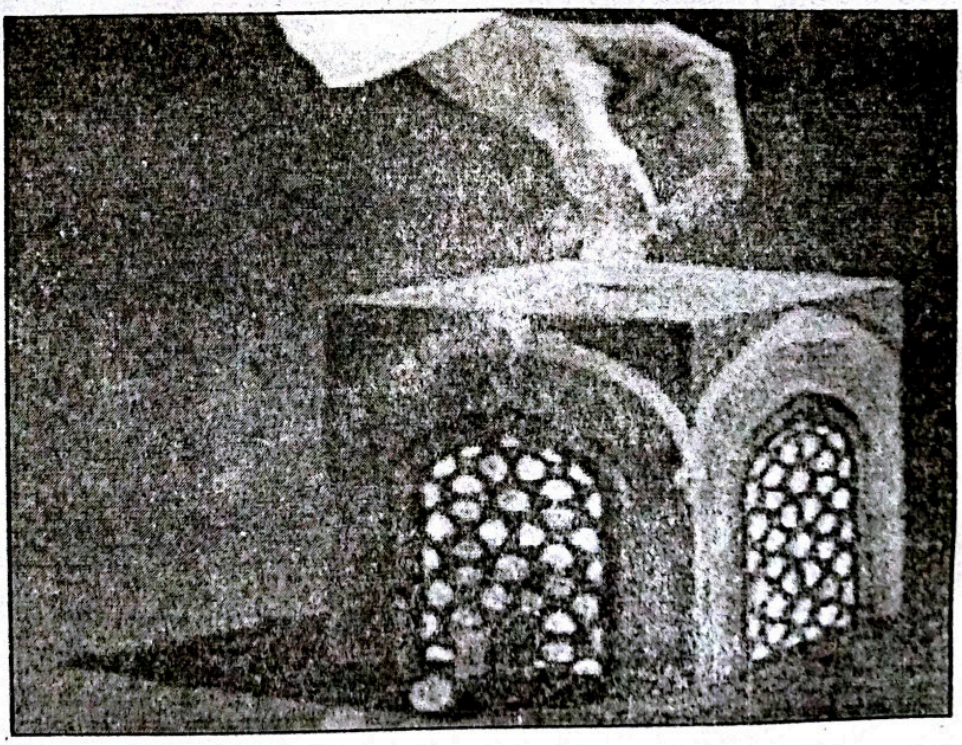

कैसे स्थापित हो संपूर्ण समाजवाद ?

■ डॉ॰ रणजीत

आमूलचूल क्रांति शब्द सुनते ही अनेक लोगों के मन में एक रक्तरंजित सत्ता परिवर्तन की कल्पना उभरती है, पर मैं इस लेख के प्रारंभ में ही यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि नाभिकीय अस्त्रों के इस युग में भारत जैसे बड़े महादेश में एक रक्तरंजित क्रांति न केवल काम्य नहीं है, वह संभव भी नहीं है । काम्य वह उन लोगों के लिए हो सकती है जो सत्ता केवल सत्ता के लिए, अपने आधिपत्य के लिए चाहते हों, उन लोगों के लिए क़तई नहीं जो मनुष्य और मनुष्य के बीच की तमाम विषमताएं समाप्त कर वास्तव में एक मानवीय समाज बनाने के लिए उसका उपयोग करना चाहते हों । अब तक की सभी सशस्त्र क्रांतियों का इतिहास बताता है कि ख़ूनी संघर्षों के दौर अपने अग्रदूतों का इस क़दर राक्षसीकरण कर देते हैं कि क्रांति का मूल उद्देश्य पीछे रह जाता है, और क्रांतिकारी शक्तियों या व्यक्तियों के बीच का ख़ूनी सत्ता संघर्ष ही मुख्य हो जाता है । और ख़ून जितना क्रांति के दौरान बहता है, उससे कई गुना क्रांति के बाद उसकी रक्षा के नाम पर बहाया जाता है ।

हमें स्पष्ट घोषित कर देना चाहिए कि हम, लोगों की आय के बीच के अन्तर को जो आज एक और एक करोड़ से भी अधिक के अनुपात में है, एक और दस के अनुपात में ले आना चाहते हैं–हम बीस प्रतिशत आबादी द्वारा उपभोग किये जा रहे ऐश और ऐश्वर्य के सभी दिखावटी साधनों का उत्पादन और आयात तब तक रोक देना चाहते हैं, जब तक कि शेष अस्सी प्रतिशत आबादी के रोटी, पानी, कपड़े, मकान और रोज़गार की ऐसी व्यवस्था नहीं कर लेते कि वह भी संपूर्ण मानवीय गरिमा से परिपूर्ण जीवन जी पाएं और यह सब हम किसी प्रकार की तानाशाही के माध्यम से नहीं, जन आन्दोलनों से और उनसे उत्पन्न जनता की पूरी तरह क़ानूनी ढंग से चुनी हुई सरकार के बहुमत से लिए गये वैध निर्णयों के माध्यम से करेंगे ।

कुछ ईमानदार क्रांतिकारी जो सशस्त्र संघर्ष के माध्यम से इस देश में क्रांति लाने का सपना देखते हैं, उन्हें यह समझना चाहिए कि उनकी ये बचकाना कोशिशें वर्तमान सत्ता का तो कुछ बिगाड़ नहीं पाएंगी, हां आतंकवाद के ख़िलाफ़ लड़ने के नाम पर क्रांतिकारी शक्तियों और उसके द्वारा प्रेरित जनता पर अमानुषिक अत्याचारों का कारण ज़रूर बन जाएंगी । अपने अब तक के इतिहास से सबक़ लेकर आगे की ओर दृष्टि डाली जाए तो एक मूलभूत सत्य को हृदयंगम करते देर नहीं लगनी चाहिए कि सोवियत साम्यवाद के ध्वंस और चीनी साम्यवाद के पूंजीवादी व्यवस्था के सामने स्वैच्छिक आत्मसमर्पण के बाद अब रूढ़िवादी क़िस्म के बोल्शेविक साम्यवाद या समाजवाद का कोई भविष्य नहीं है । इस सच्चाई को भारत के वामपंथी जितनी जल्दी जान और मान लेंगे उनका पुनरुद्धार और पुनर्जीवन उतना ही सहज सुगम और सत्वर होगा । भारत के वामपंथी आन्दोलन को अब नये सिरे से अपने स्वप्निल साम्यवादी प्रयोगों से लेकर फ्रांसीसी, रूसी, चीनी क्रांति तक की सर्वहारा तानाशाहियों, पोलपोटी नरसंहारों और चाउसेस्कीय सम्राटीकरण तक की परिणतियों के तथा तेलंगाना की सशस्त्र क्रांति कोशिश से लेकर केरल की पहली चुनी हुई साम्यवादी सरकार के अनुभव तक के अपने पूरे विश्व इतिहास को पूरी निर्मम अनासक्ति के साथ खंगालना चाहिए और आगे की राह खोजनी चाहिए ।

मेरे विचार से पूंजीवादी व्यवस्था द्वारा आविष्कृत अंधे

उद्योगीकरण की भारी तकनीकों पर रोक लगाते हुए, अपनी विशाल बेरोज़गार आबादी के लिए उपयुक्त मानव केन्द्रित तकनीकों के विकास और अनुप्रयोग से एक विकेन्द्रित ढंग की पूरी तरह जनवादी और समतावादी व्यवस्था के निर्माण की जहां तक संभव हो, शांतिपूर्ण जनआन्दोलनों के माध्यम से, कोशिश करना और उस कोशिश में स्त्रियों, अल्पसंख्यकों, दलितों, आदिवासियों और हाशिये पर स्थित अंतिम लोगों को शामिल करना ही हमारे वामपंथी आन्दोलन के पुनर्जीवन का एक रास्ता हो सकता है । कविता की शब्दावली में कहूं तो उसे मानवजाति की पलकों पर चिरकाल से पलते हुए 'वसुधैव कुटुम्बकम' के उस सपने के लिए संघर्ष करने चाहिए जिसमें–

पूरी दुनिया एक परिवार हो
उसकी एक चुनी हुई संसद हो, संघीय सरकार हो
सब राष्ट्रीय सरकारें प्रांतीय सरकारों में बदल दी जाए
जिनके पास न तो सेनाएं हों, न हथियार हों
एक ऐसी दुनिया बने जिसमें
न तो कोई भूखा हो, न बेरोज़गार हो
फिर भी हर व्यक्ति को अभिव्यक्ति का
आलोचना का, आन्दोलन का अधिकार हो
अपने जीवन पर, मरण पर
अपनी यति गति नियति पर पूरा इख़्तियार हो
हर गांव क़स्बे, नगर की
अपनी एक चुनी हुई स्वायत्त सरकार को
लेकिन गांव से लेकर विश्व तक की सभी सरकारों के पास
कम से कम अधिकार हों
ताकि वे धीरे-धीरे बेज़रूरत होकर
झर जाएं
टूटें, गिरें और मर जाएं ।

अर्थात हमें मार्क्स के वर्गहीन ही नहीं अंतत: राज्यहीन समाज के लिए और गांधी के ग्राम स्वराज के लिए एक साथ लड़ना है और उस लड़ाई में अपनी आबादी के सभी दलित दमित तबक़ों को शामिल करना है । हमें स्पष्ट घोषित कर देना चाहिए कि हम, लोगों की आय के बीच के अन्तर को जो आज एक और एक करोड़ से भी अधिक के अनुपात में है, एक और दस के अनुपात में ले आना चाहते हैं–हम बीस प्रतिशत आबादी द्वारा उपभोग किये जा रहे ऐश और ऐश्वर्य के सभी दिखावटी साधनों का उत्पादन और आयात तब तक रोक देना चाहते हैं, जब तक कि शेष अस्सी प्रतिशत आबादी के रोटी, पानी, कपड़े, मकान और रोज़गार की ऐसी व्यवस्था नहीं कर लेते कि वह भी संपूर्ण मानवीय गरिमा से परिपूर्ण जीवन जी पाएं और यह सब हम किसी प्रकार की तानाशाही के माध्यम से नहीं, जन आन्दोलनों से और उनसे उत्पन्न जनता की पूरी तरह क़ानूनी ढंग से चुनी हुई सरकार के बहुमत से लिए गये वैध निर्णयों के माध्यम से करेंगे ।

इस कार्य के लिए सबसे पहले यह आवश्यक है कि देश के कोने-कोने में चल रहे दलितों, दमितों, आदिवासियों, स्त्रियों और पर्यावरण के व्यापक विनाश तथा अंधे जनविरोधी उद्योगीकरण के विस्थापितों के सभी स्वयंस्फूर्त जनान्दोलनों का और तमाम वामपंथी पार्टियों के राजनीतिकर्मियों, बुद्धिजीवियों और संस्कृतिकर्मियों का एक विशाल समन्वय स्थापित हो, यानी एक संयुक्त या एकीकृत समाजवादी पार्टी का निर्माण हो, जिसमें उसके सभी घटक अपनी छोटी-छोटी इयत्ताएं और अस्मिताएं विलीन करें और वह पार्टी चुनाव सुधार के एक ऐसे कार्यक्रम के लिए संघर्ष करे, कि हमारी निर्वाचन प्रणाली धन, जाति और अपराधी तत्वों, के प्रभाव से पूरी तरह मुक्त होकर जनआकांक्षाओं के सच्चे ईमानदार और कर्मठ प्रतिनिधियों को जनप्रतिनिधियों के रूप में चुन सकें । इसके लिए आवश्यक हो तो आनुपातिक निर्वाचन प्रणाली भी लागू की जा सकती है । पर एकीकृत समाजवादी या समतावादी दल कम से कम और अधिक से अधिक आमदनी की सीमा बांधे । कृषिभूमि और आवासीय संपत्ति की सीमा निश्चित करे और सारी अतिरिक्त संपत्ति का समाजीकरण–राष्ट्रीयकरण नहीं–करते हुए उसका गांव मुहल्ले और नगर के स्तर पर अब तक उससे वंचित परिवारों में सम्यक वितरण करे, देश में स्थित बहुराष्ट्रीय निगमों और विदेशियों की संपत्ति को भी इस सीमाबन्दी और वितरण से कोई छूट न दी जाए और अपनी इन समतावादी नीतियों के आधार पर एक प्रबल जनआन्दोलन चलाकर देश की केन्द्रीय सत्ता को अपने हाथ में ले और फिर उसको पूरे जनतांत्रिक और क़ानूनी ढंग से विकेन्द्रित छोटी इकाइयों–ग्रामसभा, मुहल्ला समिति, नगर समिति और ज़िला परिषदों, फैक्ट्री समितियों, कार्यालय समितियों, स्कूल-कॉलेज, समितियों, अस्पताल समितियों आदि को–हस्तांतरित करे । और सभी विकेन्द्रित छोटी इकाइयां उनमें काम करने वाले

मज़दूरों, कर्मिकों, छात्रों, अध्यापकों, इंजीनियरों, डॉक्टरों आदि के द्वारा ही बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप के जनवादी तरीक़े से गठित की जा सकें । इसका पूरा ध्यान इस एकीकृत समतावादी पार्टी के नेता और कार्यकर्ता रखें ताकि नयी समतावादी व्यवस्था का नियंत्रण किसी प्रबंधक वर्ग या तानाशाही पार्टी के हाथों में उस तरह से न जा सके, जिस तरह से सोवियत संघ और अन्य समाजवादी देशों में चला गया था ।

मेरा गहरा विश्वास है और अब तक के समता स्थापना के सभी मानवीय, प्रयत्नों, सभी समाजवादी क्रांतियों के इतिहास से गंभीरता से गुज़रता हुआ प्रत्येक विवेकशील व्यक्ति इसी निष्कर्ष पर पहुंचेगा कि सच्चे जनतंत्र और सच्चे समाजवाद में न केवल कोई अन्तरविरोध नहीं है, बल्कि सच्चे और परिपूर्ण जनतंत्र के बिना कोई सच्चा और संपूर्ण समाजवाद स्थापित किया ही नहीं जा सकता । एक स्वस्थ प्रगतिशील मानवीय व्यवस्था के लिए पहली महान मानवीय क्रांति-फ्रांसीसी क्रांति के तीनों आदर्श समान रूप से महत्वपूर्ण हैं–समता, स्वतंत्रता और भाईचारा ! किसी एक के नाम पर दूसरे की उपेक्षा करके अमेरिकी पूंजीवादी और सोवियत समाजवादी जैसी विकलांग और बीमार समाज व्यवस्था ही स्थापित की जा सकती हैं, कोई स्वस्थ मानवीय व्यवस्था नहीं ।

एक बार समता, स्वतंत्रता और भाईचारे पर आधारित समाज व्यवस्था की नींव डालने के बाद उसे बचाए और बनाए रखने के लिए यह भी आवश्यक होगा कि उच्चतर नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों से सम्पृक्त सार्वभौम शिक्षा की व्यवस्था की जाए–क्योंकि सम्यक मानवीय चरित्र प्रबंधन के बिना समाज व्यवस्था प्रबंधन के फिर से पतित हो जाने का ख़तरा बना रहेगा । इस कार्य के लिए शिक्षा के अतिरिक्त विकसित होते हुए अनुवंश-विज्ञान की भी मदद ली जा सकती है । एकीकृत समाजवादी पार्टी वैज्ञानिकों को ऐसे अनुसंधानों के लिए प्रेरित कर सकती है जो मनुष्य को उसके अतिशय काम, क्रोध, लोभ, अहंकार और आक्रामकता से मुक्त कर उसे एक संतुलित और स्वस्थ मनुष्य बना सके–ताकि अगली सहस्त्राब्दियों में मानवजाति एक वैश्विक बंधुत्व की डोर में बंधी हुई समता और स्वतंत्रता का पूरा आनन्द लेते हुए एक समृद्धिपूर्ण आदर्श मानवीय जीवन की राह पर निरंतर आगे बढ़ती रह सके ।

कवि मन

हर ख़ौफ़नाक आवाज़ के बाद

कैसी थी ये ख़ौफ़नाक आवाज़
कि परिन्दों से भर गया आकाश
क्या हुआ
कि सूरज की रोशनी भी
रुक गयी बीच राह में
और पड़ गयी पीली
इस रोशनी में
ख़ौफ़नाक आवाज़ की
क्या हुआ ?
नया नहीं कुछ भी होता है
नयी नहीं है ये आवाज़ तो बरसों की जानी-पहचानी
वो ख़ौफ़नाक आवाज़ है जो अक्सर
आती रहती है ।
एक बार फिर शांत
सब हो जाएगा
परिन्दे वापस क़तार-दर-क़तार
आकर बैठ जाएंगे
बिजली के बदरंग मोटे-मोटे तारों पर
टी०वी० एंटीना की सलाख़ों पर
झूलने लगेंगे गीले कपड़े लटकाने की
ढीली-ढाली लटकती रस्सियों पर
या केबल टी०वी० की बेतरतीब लटकती उलझी-पुलझी
बेलगाम तारों पर
ठीक उसी तरह जैसे बैठे थे
इस ख़ौफ़नाक आवाज़ के पहले भी
बिना ये जाने कि उनमें से
अब कितने उनके साथ नहीं हैं
और कितने उनके साथ नहीं होते हर बार
हर ख़ौफ़नाक आवाज़ के बाद ।

● सीता राम गुप्ता

मकतबा अलफहीम मऊ

की नई हिंदी इस्लामी पुस्तकें

मुख्तसर तफसीर अहसनुल बयान	450/=
बुलूगुल मराम	275/=
नबूवत की किरनें मौ० सफीउर्रहमान मो०	275/=
हुक़ूक़ुलएबाद सलाहुददीन यूसुफ	55/=
हुक़ूक़ुल औलाद सलाहुददीन यूसुफ	50/=
हुक़ूक़ुज़्ज़ौजैन सलाहुददीन यूसुफ	32/=
सैय्यदना अबू बक्र सिद्दीक रज़ि:	28/=
सैय्यदना उमर फारूक़ रज़ि:	28/=
सैय्यदना उसमान गनी रज़ि:	28/=
सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि:	28/=
इस्लाम पर ४० एतेराज़ात और उसके जवाबात	80/=
कुरआन और विज्ञान डा. ज़ाकिर नाइक	50/=
इस्लाम और हिन्दूधर्म में समानताएं	50/=
क्या कुरआन ईश्वरीय ग्रन्थ है	60/=
विशेष धर्मों में ईश्वर की कल्पना	28/=
इस्लाम में औरतों के अधिकार	60/=
इस्लाम आतंकवाद या भाईचारा	50/=
मांसाहार उचित या अनुचित	60/=
जन्नत का बयान इकबाल कीलानी	120/=
जहन्नम का बयान इकबाल कीलानी	130/=
नमाज़ के मसाइल इकबाल कीलानी	120/=
तौहीद के मसाइल इकवाल कीलानी	120/=

सुन्नत के मसाइल इकबाल कीलानी	80/=
तौहीद के आंसू इकवाल कीलानी	65/=
हमारी दावत किताब व सुन्नत	40/=
चेहरे का पर्दा मुस्तहब या वाजिब	20/=
मुहम्मद(स०) हिन्दू किताबों में	65/=
तावीज़ गंडा की हक़ीक़त	30/=
और मैं मर गया	32/=
मसला उर्स और ग्यारहवीं	30/=
इस्लाम और इमान के अरकान	80/=
किताबुत्तौहीद	75/=
कुरआन की शीतल छाया	85/=
अल्लाह और उसके रसूल की पहचान	50/=
जादू का इलाज	85/=
कलमा-ए-तौहीद अर्थ, महत्तव, फज़ीलत	28/=
इस्लाम एक नज़र में	50/=
इस्लाम खालिस क्या है	22/=
इस्लामी अक़ीदा	22/=
इस्लाम क्या है	50/=
मासूरह दुआएं	30/=
हिसनुल मुसलिम (उच्चारण सहित)	50/=
नमाज़े मोहम्मदी (उच्चारण सहित)	35/=
परदा	35/=

आप घर बैठे किताबें VPP डाक द्वारा मँगा सकते हैं। एकाउंट में रक्म ट्रांस्फर करने पर रजिस्टर्ड डाक द्वारा किताबें भेजने की सुविधा है।

MAKTABA AL-FAHEEM

Raihan Market, 1st Floor, Dhobia Imli Road
Sadar Chowk, Maunath Bhanjan - (U.P.) 275101
Ph.: (O) 0547-2222013, Mob. 9236761926, 9889123129, 9336010224
Email :faheembooks@gmail.com

सत्यार्थी को नोबेल पुरस्कार

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) को मानते हैं आदर्श

■ इर्शादुल हक़
(सम्पादक नौकरशाही डॉट इन)

कोई 12 साल पहले की बात है कैलाश सत्यार्थी ने एक साक्षात्कार में मुझ से कहा था बंधुआ मज़दूरों को आज़ाद कराने का इतिहास में पहला कामयाब आंदोलन हज़रत मुहम्मद साहब ने शुरू किया था । आज उन्हें 2014 का शांति का नोबेल पुरस्कार मिला है । तब मैं इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकता था कि सत्यार्थी इस ऊंचाई तक पहुंच जाएंगे ।

कैलाश के संग यह सम्मान मलाला यूसुफ़ ज़ई को भी मिला है । बचपन बचाओ आंदोनल और कैलाश सत्यार्थी का नाम मैंने पहली बार बी॰बी॰सी॰ पर सुना । उसके बाद कुछ मुलाक़ातें और बातें हुई थीं । उनके साथ हमारे कई मित्रों ने काम किया है । पर उनका अनुभव कैलाश के संग बहुत अच्छा नहीं रहा ।

आहिस्ता-आहिस्ता कुछ लोगों ने कैलाश को ठीक उसी तरह प्रोजेक्ट करना शुरू किया जैसे आमतौर पर एन॰ जी॰ओ॰ के लोगों को समझा जाता है । लेकिन कैलाश इन सब बातों से बेपरवाह अपने काम में लगे रहे । हमारी पहली मुलाक़ात जब उनसे हुई तो वह पटना से दिल्ली के लिए ट्रेन पकड़ने जा रहे थे । उस वक़्त उन्होंने अपने आन्दोलन के बारे में मुझे समझाया कि कैसे उनका संगठन बचपन बचाओ आन्दोलन बाल मज़दूरों को आज़ाद कराता है । अपनी बातचीत में कैलाश ने बाउंडेड लेबर और गुलामों को आज़ाद कराने की हज़रत मुहम्मद की मिसालें कई बार दीं । पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) गुलामों को आज़ाद कराने को पुण्य कार्य ठहराते थे । कैलाश हज़रत मुहम्मद के इस आदर्श को अपने जीवन का मक़सद बना चुके थे ।

ताज़ा मामला

पिछले दो महीने पहले वे पटना में एक उर्दू अख़बार के कार्यक्रम में शरीक हुए, तो वहां भी उन्होंने बाल मज़दूरों की आज़ादी के अपने काम के बारे में बताया । तब उन्होंने सीतामढ़ी में कुछ बाल मज़दूरों को आज़ाद करा कर उनकी पढ़ायी और फिर पढ़ायी के बाद एक होनहार इंसान बनने की कहानी सुनायी थी ।

कैलाश सत्यार्थी के संगठन ने अब तक 80 हज़ार से ज़्यादा बंधुआ मज़दूरों को आज़ाद कराया है । इनमें ज़्यादातर 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चे हैं । कैलाश ने न सिर्फ़ उन्हें नया जीवन देने में मदद की बल्कि उनकी शिक्षा और रोज़गार के अवसर भी प्रदान करवाने की सफल कोशिश की । बाल मज़दूरी को मानवाधिकार से जोड़ने का काम भी कैलाश ने ही किया ।

कैलाश का जन्म 1954 में हुआ और उन्होंने बच्चों के लिए 1990 के दशक में आंदोलन शुरू किया, हालांकि कैलाश ने निश्चित तौर पर बड़ा काम किया है और नोबेल शांति पुरस्कार उसका सबसे बड़ा सुबूत है । लेकिन पहली बार जैसे ही यह ख़बर मिली मुझे बड़ी मुश्किल से इस बात पर विश्वास हुआ क्योंकि आम तौर पर ऐसे पुरस्कार भारत के लोगों को मिलना आसान नहीं होता ।

बाल मज़दूरी पर काम करने वाले कैलाश को इस पुरस्कार के लायक़ नोबेल कमेटी ने इसलिए समझा, क्योंकि समाज में तभी शांति क़ायम हो सकती है जब हम बच्चों को उसका वास्तविक बचपन देंगे और उन्हें जीवन के अधिकारों से वंचित नहीं करेंगे । कैलाश ने इस मामले में सचमुच बड़ा काम किया है ।

नोबेल कमेटी ने पुरस्कार देने की घोषणा के बाद इस बात का उल्लेख किया है कि कैलाश और मलाला ने मानवाधिकारों के लिए संघर्ष किया । एक मुसलमान हैं तो दूसरा हिन्दू । एक भारत से हैं तो दूसरा पाकिस्तान से । कैलाश ने अपने कैरियर की शुरुआत इल्ट्रिकल इंजीनियर के रूप में शुरू की लेकिन जल्द ही उन्होंने नौकरी छोड़ दी ।

(http://naukarshahi.in/archives/16267)

प्रेषक : मुहम्मद नौशाद अंसारी
महासचिव, पीस फाउंडेशन, पटना

संस्कृत में अनूदित पवित्र कुरआन

■ राजेश सरकार
(संस्कृत विभाग, बी॰एच॰यू॰)

किसी भी धर्मग्रंथ में निहित संदेश की परिसीमा मात्र उस धर्म-समुदाय विशेष तक नहीं होती है, अपितु उसका अनुपालन कर संपूर्ण मानवजाति परमपद को प्राप्त करती है। सभी धर्मों-सम्प्रदायों में नियमों की पृथकता होते हुए भी यम की सार्वभौमिकता सुस्पष्ट है। यही यम-नियम ही धर्म के मूलाधार हैं। मानवजाति को सत्पथ पर चलाते हुए सामाजिक-शांति एवं सौहार्द बनाए रखने के गुरुतर दायित्व का निर्वहन इन धर्मग्रंथों ने आदिकाल से किया है। भारतीय सनातन-संस्कृति विभिन्न दिशाओं से आने वाली विचारधाराओं का सदा से ही स्वागत करती रही है।

सनातन–संस्कृति एवं परंपरा के आधार एवं आगार वेदों में कहा गया है–

आ नो भद्रा क्रतवो यन्तु विश्वतः।

अर्थात्, हमारी तरफ़ सब ओर से शुभ-विचार आएं।

जैसा कि सर्वविदित है, पवित्र कुरआन इस्लाम धर्म की सर्वमान्यता प्राप्त ईश्वरीय पुस्तक है एवं मूलरूप में आज भी अरबी भाषा में सुरक्षित है। इस्लाम धर्म की मान्यता के अनुसार, इस ग्रंथ का अवतरण लगभग तेइस वर्षों की दीर्घ कालावधि में जिबरील (अलैहि॰) नामक फ़रिश्ता के माध्यम से पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) पर हुआ। धर्मग्रंथ की भाषा पद्यात्मक, लयप्रधान अरबी है। कुरआन का शाब्दिक अर्थ 'पढ़ी जाने वाली चीज़' होता है। इस ग्रंथ में 114 अध्याय हैं। जिन्हें 'सूरह' कहते हैं। तिलावत (वाचन) में सुगमता हेतु कुरआन में 'रुकूअ' का निर्धारण है। कुरआन की आयतों की संख्या लगभग 6240 है। इस ग्रंथ में प्रधान विभाजन को 'पारा' कहा जाता है, जिनकी संख्या 30 है।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) ने अपने पैग़म्बर होने की घोषणा के पश्चात अपनी जन्मभूमि मक्का में तेरह वर्षों तक निवास किया तत्पश्चात् मदीना प्रवर्जन करने पर विवश हुए,

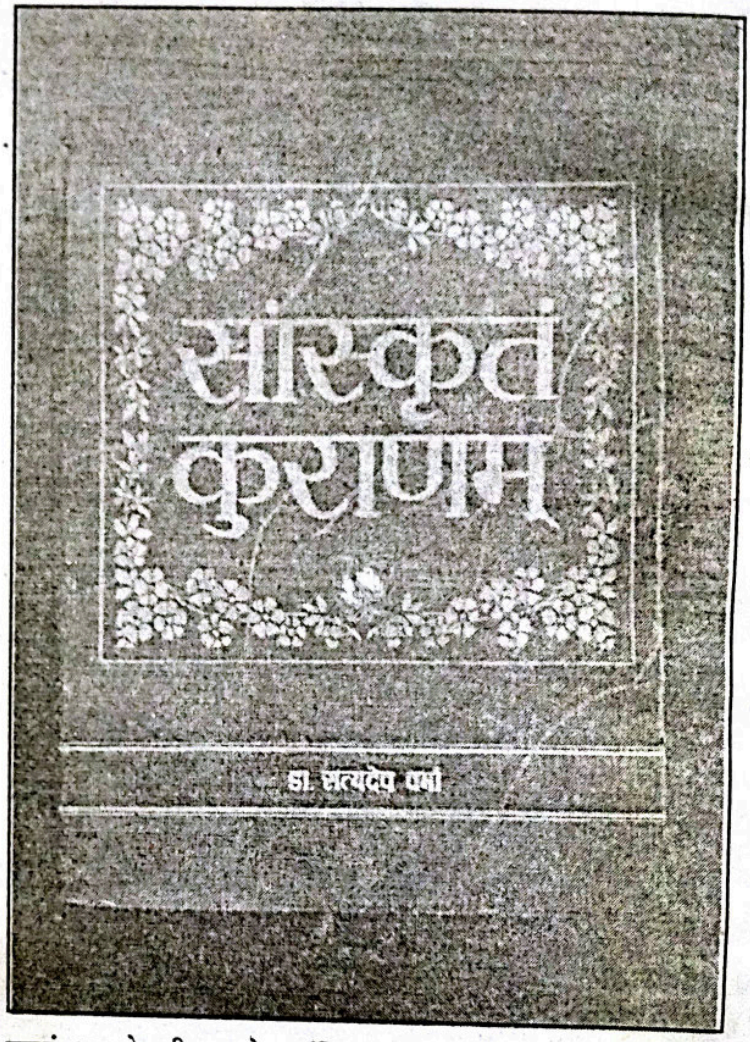

जहां आपने जीवन के अंतिम दस वर्ष व्यतीत किये। जों अध्याय (सूरह) आपके मदीना प्रस्थान से पूर्व अवतरित हुई वह मक्की एवं जो मदीना में अवतरित हुई वह 'मदनी' कही जाती है।

जैसे-जैसे इस्लाम अरब मरुभूमि की सीमा के बाहर विश्व के अन्यान्य भूभागों में फैलने लगा, वैसे-वैसे कुरआन के अन्य भाषाओं में अनुवाद की आवश्यकता प्रतीत होने लगी। इस क्रम में कुरआन का अनुवाद मुस्लिम क्षेत्रों में प्रचलित भाषाओं फ़ारसी, तुर्की, हिब्रू, उज़्बेक, कज़्ज़ाख़, मंगोलियन, अल्बानियन उईगुर, मलय, बहासा, चेचेन इत्यादि भाषाओं में हुआ। यूरोप की विभिन्न भाषाओं में इसके अनुवाद हुए।

'सांस्कृतं कुराणम्' : समीक्षात्मक अध्ययन

जैसे-जैसे इस्लाम अरब मरुभूमि की सीमा के बाहर विश्व के अन्यान्य भूभागों में फैलने लगा, वैसे-वैसे क़ुरआन के अन्य भाषाओं में अनुवाद की आवश्यकता प्रतीत होने लगी। इस क्रम में क़ुरआन का अनुवाद मुस्लिम क्षेत्रों में प्रचलित भाषाओं फ़ारसी, तुर्की, हिब्रू, उज़्बेक, कज़्ज़ाख़, मंगोलियन, अल्बानियन उईगुर, मलय, बहासा, चेचेन इत्यादि भाषाओं में हुआ। यूरोप की विभिन्न भाषाओं में इसके अनुवाद हुए। इस्लाम के भारत में आने के बाद विभिन्न भारतीय भाषाओं में क़ुरआन के अनुवाद एवं टीकाओं की परंपरा का विकास हुआ। किन्तु भारत की सम्माननीय एवं धर्म परंपरा अवगाहिका भाषा संस्कृत में इसका अनुवाद सुखद आश्चर्य का विषय है।

इस्लाम के भारत में आने के बाद विभिन्न भारतीय भाषाओं में क़ुरआन के अनुवाद एवं टीकाओं की परंपरा का विकास हुआ। किन्तु भारत की सम्माननीय एवं धर्म परंपरा अवगाहिका भाषा संस्कृत में इसका अनुवाद सुखद आश्चर्य का विषय है। ज्ञात सूत्रों के अनुसार मध्यकाल में इस प्रकार का कोई प्रयास नहीं किया गया !

प्रो॰ सैयद हसन अब्बास (विभागाध्यक्ष, फ़ारसी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय) से चर्चा के क्रम में मुझे पता चला कि बुरहानपुर की जामा मस्जिद में क़ुरआन की कुछ आयतें मूल अरबी के साथ संस्कृत अनुवाद में उत्कीर्ण हैं। क़ुरआन की कुछ आयतों का संस्कृत अनुवाद एवं अल्लाह के 99 नामों का विष्णुसहस्रनाम के साथ तुलनात्मक अध्ययन अचार्य विनोबा भावे द्वारा अपनी पुस्तक 'क़ुरआन सार' में किया गया है। एक अन्य सुविज्ञ सूत्र से यह भी पता चला है कि महाराष्ट्र के संस्कृत विद्वान गुंडे राव हरकारे द्वारा क़ुरआन का सर्वप्रथम संस्कृत अनुवाद किया गया। आज यह ग्रंथ अनुपलब्ध है। संपूर्ण क़ुरआन का संस्कृत अनुवाद सत्यदेव वर्मा द्वारा 'सांस्कृतं कुराणम्' के नाम से पद्यात्मक एवं प्रवाहमय छन्द में किया गया है, जो लक्ष्मी पब्लिकेशंज से प्रकाशित हुआ है। इसकी भी प्रतियां अब नहीं मिलतीं। इस अनुवाद के उद्देश्य को अनुवादक ने स्वसुख निमित्त कार्य बताया है।

अनुवादक ने क़ुरआन की सूरह को सूक्त, पारा को पर्व, आयत को आयातः कहा है। कुछ अध्यायों (सूरतों) के शुद्ध संस्कृतनिष्ठ नाम समान पर्याय का साम्य बैठाते हुए इस प्रकार किया है–

अल् फ़ातिहा (सूक्तम-उपोद्घातः) सूरः बक़रा (सूक्तम् गौः), आले-इमरान (सूक्तम् इमरानकुलम्), अन-निसा (सूक्तम-निशा), अल-माइदा (सूक्तम् आहारपीठिका), अल-अनआम (सूक्तम पशवः), अल-आराफ़ (सूक्तम् आरोहः), अल-अनफ़ाल (युद्ध सत्याजितानि), अत्-तौबा (प्रायश्चित्तम्), यूनुस (यवनाशः), हूद (सूदः), यूसुफ़ (यूषपः), अर रअद (हादः), इबराहीम (अब्रह्मः), अल-अम्बिया (देवाः), अल-हज्ज (तीर्थयात्रा), अल-फ़ुरक़ान (विवेकः), अश-शुअरा (शुक्रः), अन-नम्ल (पिपीलिकाः), अल-फ़त्ह (विजयः), अस-सजदा (प्रणिपात्), अल-फ़ातिर (कर्ता), अर रहमान (दयावान्), अन-नूह (नहुषः), अल-क़लम (लेखनी), अत्-तलाक़ (त्यागः), मुनाफ़िक़ून (पाषण्डिनः), ज़िलज़ाल (ज्याचालः), अल-फ़ील (पीलुः), अल-काफ़िरून (श्रद्धाविहीनाः), अस्-साफ़्फ़ात (पंक्तिगाः), अल-लहब (अभ्रलुब्धः), अन-नस्र (साह्यसंभारः), अल-इख़लास (एकोऽप्रतिमः), अल-फ़लक़ (उषाकालः), अन-नास (शरणम्)।

अनुवादक ने मूलभावना को ध्यान में रखते हुए कूट

अनुवादक ने क़ुरआन की सूरतों को जो अपने मक्का एवं मदीना में अवतरण के कारण मक्की एवं मदनी के नाम से विभाजित हैं, महाकाल (मक्का) एवं मदहीनः (मदीना) के नाम से अभिहित किया है । अनुवादक के इस संस्कृत क़ुरआन का आधार मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां (मक्तबा अल-हसनात, रामपुर, उ०प्र०) के हिन्दी अनुवाद एवं मुहम्मद मार्माड्यूक पिक्थाल के अंग्रेज़ी अनुवाद पर है ।

पदों एवं विशेष शब्दों को यथावत् रहने दिया है, यथा–ता०हा०, या०सीन०, अलिफ़ लाम मीम० आदि ।

अनुवादक ने 'कुराण' शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए प्रतिपादित किया है–

"कौ पृथिव्यां राणो घोष इति यत् पठनेन वाचनेन वा रण्यते घोष्यते तद् हि कुराणम् ।"

जिसके पाठ करने या वाचन करने से संपूर्ण पृथिवी घोषायमान हो जाए उसे कुराण कहा जाता है । इस्लाम की परिभाषा में क़ुरआन उस ईशग्रंथ को कहते हैं, जो ईशग्रंथों की दीर्घकालीन शृंखला की अंतिम कड़ी के रूप में अवतरित हुआ । इसके अवतरण का प्रारंभ 'इक़रा' (पढ़ो) शब्द से हुआ ।

अनुवादक ने क़ुरआन की सूरतों को जो अपने मक्का एवं मदीना में अवतरण के कारण मक्की एवं मदनी के नाम से विभाजित हैं, महाकाल (मक्का) एवं मदहीनः (मदीना) के नाम से अभिहित किया है । अनुवादक के इस संस्कृत क़ुरआन का आधार मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां (मक्तबा अल-हसनात, रामपुर, उ०प्र०) के हिन्दी अनुवाद एवं मुहम्मद मार्माड्यूक पिक्थाल के अंग्रेज़ी अनुवाद पर है ।

सूरह अल-फ़ातिहा के अनुवाद का मूल के साथ तुलनात्मक अध्ययन द्रष्टव्य है–

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम० अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल्-आलमीन (1) अर्रहमानिर्रहीम (2) मालिकि यौमिद्दीन (3) इय्याक न अ बुदु व इय्या-क नस्तईन (4) इह्दिनस् सिरातलमुस्तक़ीम (5) सिरातल्लज़ीन अनअम्-त-अलैहिम् (6) ग़ैरिल् मग़्ज़ूबि अलैहिम् वलज़्ज़ाल्लीन ।

शुरू उस ख़ुदा के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है ।

सब तरह की तारीफ़ ख़ुदा ही के लिए जो तमाम मख़्लूक़ का परवरदिगार है । बड़ा मेहरबान निहायत रहमवाला, इन्साफ़ के दिन का हाकिम । (ऐ परवरदिगार !) हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझी से मदद मांगते हैं । हमको सीधे रास्ते पर चला । उन लोगों का रास्ता जिन पर तू अपना फ़ज़्ल व करम करता रहा है । न उनका जिन पर ग़ुस्सा होता रहा और न गुमराहों का ।

सूक्तम-उपोद्घातः (अल-फ़ातिहा)
(महाकालेऽवतीर्णाः सप्तायाताः)
साल्लाहनामजापं योऽल्लाहो दयी हितैष्यपि
प्रभुः सर्वस्य विश्वस्य योल्लाहो वर्त्तते (ध्रुवम्)।
शंसनं सर्वमप्यस्ति तदर्थम् यः पुनर्दयी ॥1॥
अत्यर्थञ्च कृपाशीलः निर्णयाहस्य यः प्रभुः,
नमामः केवलं ते वै, त्वदेव केवलादथो ।
साह्यापेक्षा भवामश्च दर्शयास्मान् ऋजुं पथम्,
तेषां येषु दया जाता त्वदीया, न परं पुनः ।
तेषां ये कोपपात्राणि त्वदीयान्यभवन् अथो,
नापि तेषां पथभ्रष्टा अभूवन ये तु (मानवाः)।

इसी क्रम में 'सूरह इख़लास' का अनुवाद अत्यंत सुन्दर एवं प्रभावयुक्त है–

कुल् हुवल्लाहु अ-हद (1) अल्लाहुस्स-मद (2) लम् यलिद् वलम् यूलद् (3) वलम् यकुल्लहू कुफ़ुवन् अ-हद (4)

कहो कि वह (ज़ात पाक जिसका नाम) अल्लाह (है) एक है । वह माबूदे बरहक, बे-नियाज़ है । न किसी का बाप है, और न किसी का बेटा । और कोई उसका हमसर (समकक्ष) नहीं है ।

सूक्तम् एकोऽप्रतिमः
ब्रूह्येकोऽप्रतिमोऽल्लाहोऽ; ल्लाहश्चासौ विनाश्रयम् ।

सर्वाधारो नपत्यश्च नापत्यं स च कस्यचित् ॥ न तस्य प्रतिमा चाऽस्ति (योऽतिरिच्य स्थितोऽखिलान्)।

कुरआन के प्रसिद्ध 'सूरह क़ाफ़िरून' का नामकरण अनुवादक ने 'सूक्तम् श्रद्धाविहीना:' किया है । काफ़िर शब्द का अनुवाद विद्वान अनुवादक ने श्रद्धाविहीन: किया है जो सर्वथा सटीक प्रतीत होता है । मूल अरबी सूरह के साथ इसका अनुवाद इस प्रकार है–

कुल् या अय्युहल् काफ़िरून । ला अ अ्-बुदु मा त अ्-बुदून । व ला अन्तुम् आबिदू-न मा अ अ् बुदु । व ला अना आबिदुम्-मा अबत्तुम् । वला अन्तुम् आबिदू-न मा अअ् बुदु । लकुम् दीनुकुम् वलि-य दीनि ।

अनुवाद–

कथ्यताम् श्रद्धाविहीना भौ: ! यजध्वे यं न तं त्वहम्,
यजेऽ; हञ्च यजे यं तं यजध्वे न पुनस्तथा ।
यक्ष्ये नाहञ्च यं यूयं यजध्वे सततं किल,
यजे यञ्च न तं यूयं यक्ष्यध्वे पुनरेव च ।
प्रणाली मे मयैव स्याद् युष्माभिर्वश्च तिष्ठतात् ।

कुरआन के 'सूरह ज़िलज़ाल' में क़ियामत में होने वाले भूकंप का वर्णन अत्यंत भयावह रूप में किया गया है । सूरह ज़िलज़ाल का नाम अनुवादक ने 'सूक्तम् ज्याचाल:' दिया है । मूल पाठ है–

सूरह ज़िलज़ाल

इज़ा ज़ुल्ज़ि-लतिलअर्ज़ु ज़िल्ज़ालहा । व अख़्-र-जतिल अर्ज़ु अस्क़ालहा । व क़ालल-इन्सानु मा लहा । यौमइ-ज़िन् तुहद्दिसु अख़्-बारहा । बि अन्-न रब्ब-क औहा लहा । यौमइज़िय्यस्दुरुन्नासु अश्तातल लियुरौ अअ मालहुम् । फ़मंय्य अ-मल् मिस्क़ा-ल ज़र्रतिन् ख़ैरंय्यरह् । व मंय्यअ-मल् मिस्क़ा-ल ज़र्रतिन शर्रंय्यरह् ।

जब ज़मीन भूचाल से हिला दी जाएगी । और ज़मीन अपने (अन्दर के) बोझ निकाल डालेगी । और इन्सान कहेगा इसको क्या हुआ है । उस दिन वह अपने हालात बयान कर देगी । क्योंकि तुम्हारे परवरदिगार ने उसको हुक्म भेजा (होगा ।) उस दिन लोग गिरोह-गिरोह आएंगे ताकि उनको उनके आमाल दिखला दिये जाए । तो जिसने ज़र्रा भर भी नेकी की होगी, वह उसको देख लेगा । और जिसने ज़र्रा भर बुराई की होगी, वह उसे देख लेगा ।'

मूर्तिपूजा के लिए 'बुतपरस्ती' शब्द का प्रयोग बहुधा फ़ारसी-उर्दू में प्रचलित है । यह शब्द अरबी के बुत एवं फ़ारसी के परस्तिश शब्द से मिलकर बना है । इतिहासविदों एवं भाषाविदों की ऐसी धारणा है कि अरबी का बुत शब्द बुद्ध से आया है । उस क्षेत्र में प्रचलित बौद्ध धर्म की यह देन उस भाषा को है । अनुवादक ने बुतपरस्ती के लिए बुद्धप्रशस्ति: शब्द का प्रयोग किया है ।

सूक्तम् ज्याचाल:

यदा ज्याचालनं तावत् चरमं भावयिष्यते,
ज्या पुनस्सर्वमन्तस्य भारं चैवोद् गिरिष्यति ।
मानवो वक्ष्यती-यं का विग्नतैनां प्रबाधते,
वक्ष्यतीयं तदोदन्तमशेषं घटितं स्वत: ।
यतस्सा प्रेरिता तावत् प्रभुणा वो भविष्यति,
व्रजिष्यन्ति तदा लोका वर्गशस्संगता अभि ।
येन यद् यत् कृतं तेषां तत्तत् संदर्शितं भवेत्,
अणुमात्रं कृतं भद्रं द्रक्ष्यति तैरसावपि ।
अणुमात्रं कृतं पापं द्रक्ष्यति तैरसावपि ।

अनुवादक ने अपनी सूक्ष्मदर्शिता का परिचय देते हुए अनेक मूल शब्दों के अनुवाद नहीं प्रस्तुत किये हैं । इस विषय में अधिकांश उलमा वर्ग (मुस्लिम धर्मगुरु) कुछ मूल शब्दों के साथ छेड़छाड़ के पक्षधर नहीं हैं ।

यथा–अल्लाह, मुहम्मद, रसूल, लुक़मान इत्यादि । यद्यपि स्वयं मुस्लिम जगत में अरबी भाषा के अल्लाह शब्द का फ़ारसी अनुवाद 'ख़ुदा' प्रचलित है, जो कि पूर्व में पारसियों के सर्वोच्च देवता के लिए प्रयुक्त होता था । अल्लाह में सदा हृदय एवं मन को रमाये रहने वाला

मुसलमान 'मोमिन' कहा जाता है इसके लिए सांस्कृतं कुराणम् में 'मन्मनसः' शब्द का प्रयोग है । इसी प्रकार इस्लाम के उद्भव के समय अरब में, इस्लाम एवं पैग़म्बर के बढ़ते वर्चस्व को देखकर बहुत से व्यक्तियों ने प्रत्यक्षतः तो इस्लाम स्वीकार कर लिया किन्तु अंतःकरण से वे विश्वासघात में लगे रहे । कपट व्यवहार करने वाले ऐसे व्यक्ति 'मुनाफ़िक़' कहे जाते थे । 'मुनाफ़िक़' के लिए पाषण्डिनः शब्द का प्रयोग किया गया है ।

पैग़म्बर के मित्र एवं सहायकगण 'सहाबा' कहे जाते हैं । सहाबा के लिए 'सहायाः' शब्द का व्यवहार किया गया है । इस्लाम के आगमन के पूर्व अरब के विभिन्न क़बीलों में बहुदेववाद एवं मूर्तिपूजा का प्रचार-प्रसार था । तत्कालीन समाज में पूजित देवियों लात एवं उज़्ज़ा के लिए क्रमशः 'ललिता' एवं उषजा शब्द का प्रयोग किया गया है । यग़ूस नामक देवता के लिए यजूष् शब्द का प्रयोग है ।

मूर्तिपूजा के लिए 'बुतपरस्ती' शब्द का प्रयोग बहुधा फ़ारसी-उर्दू में प्रचलित है । यह शब्द अरबी के बुत एवं फ़ारसी के परस्तिश शब्द से मिलकर बना है । इतिहासविदों एवं भाषाविदों की ऐसी धारणा है कि अरबी का बुत शब्द बुद्ध से आया है । उस क्षेत्र में प्रचलित बौद्ध धर्म की यह देन उस भाषा को है । अनुवादक ने बुतपरस्ती के लिए बुद्धप्रशस्तिः शब्द का प्रयोग किया हैं–

शेष कुछ शब्द इस प्रकार विचारणीय है–

मक्का (महाकाल), मदीना (मदहीनः), सय्यद (श्रेयोदः), शहीद (सहीध्मः), मुल्ला (मौललः), मूसा (मूषः), मरयम (मर्यमा), महमूद (महामदः), मौलवी (मौलवित्), बुजुर्ग (वयोरूग्), पैग़म्बर (प्रागम्बर), ज़ैनब (जिनाभः), काबा (काव्यः), कल्मः (कल्पः), ग़ैब (गर्भ्यः)।

यह 'सांस्कृतं कुराणम्' सत्यदेव वर्मा (यमुनानगर, हरियाणा) द्वारा अनूदित है । ग्रंथ लक्ष्मी प्रकाशन दरियागंज, दिल्ली से प्रकाशित है । अनुवादक ने सर्वजनहिताय एवं वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को ध्यान में रखकर पवित्र क़ुरआन के संस्कृतानुवाद का अति प्रशंसनीय कार्य किया है । अनुवादक ने अपनी इस निर्मल भावना का उद्भावन अपने समर्पण में ही किया है–

ये हि भूमण्डलान्तर्गतदेशप्रदेशस्थाः विचारकाः
वसुधैव कुटुम्बकमितित्येवं मन्यन्ते
सर्वजनहिताय सततं चेष्टन्ते
भौतिकाध्यात्मिकस्थित्यै लोकस्य धिया प्रवर्त्तन्ते
तेभ्यो विज्ञातेभ्योऽविज्ञातेभ्यश्चासांख्येभ्य
इदम्मेऽनाहतेन नादेन सस्नेहं समर्पणम् ।

इस प्रकार के अनुवाद कार्य परस्पर सांस्कृतिक सेतु निर्माण में अप्रतिम अवदान करते हैं । इस दृष्टि से यह अनुवाद रचना अनुपम है ।

सहायक ग्रंथ सूची–

1. कुरआन शरीफ़ (हिन्दी अनुवाद) हज़रत मौलाना फ़तेह मुहम्मद ख़ां जालंधरी एवं कौसर यज़दानी (अनुवादक एवं रूपान्तरकार), प्रकाशक-एम॰ शफ़ीक़ एंड संस 4138, उर्दू बाज़ार जामा मस्जिद, दिल्ली
2. कुरआन शरीफ़ (हिन्दी अनुवाद) (1971) मु॰ फ़ारूक़ ख़ां (अनुवादक), मक्तबा अल-हसनात रामपुर (उ॰प्र॰)
3. सांस्कृतं कुराणम् (1990), वर्मा सत्यदेव, लक्ष्मी प्रकाशक, 7112, अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली
4. ऋग्वेद सूक्त संञ्चयनम् (2008), पाठक प्रो॰ जमुना प्रसाद सिंह, प्रो॰ उमेश प्रसाद, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी (उ॰प्र॰)
5. www.britanica.com

चांदनी

चन्दा से चौगुनी चम-चमकती है चांदनी ।
बंजर ज़मीनों पर भी, बरसती है चांदनी ।।

छिप जाती है गगन में, सूर्य को ये देखकर ।
रातों की बनी रानी, निकलती है चांदनी ।।

निश्छल है प्रेम इसका, समभाव की निशानी ।
नित नवीन रूप लेकर, छिटकती है चांदनी ।।

तारों की चूनर ओढ़े, श्रृंगार सादगी का ।
कण-कण को सजाकर ही, निखरती है चांदनी ।।

जग से ये लिपट जाए, हम छू भी न पाएं ।
कुन्दन-सी देह दमदम, दमकती है चांदनी ।।

पसरे है चांदनी पर, चन्द्र की ये चांदनी ।
अम्बर से छन निर्मली, छलकती है चांदनी ।।

तन पाया 'पारदर्शी', नीलाम्बरी कहाई ।
कवियों की प्रेयसी बन, संवरती है चांदनी ।।

संतकवि ॐ पारदर्शी
उदयपुर (राज॰)

अनसुलझे प्रश्न

❖ ईश्वर दयाल जायसवाल
(संयोजक, अदबी विचार मंच
टांडा, अंबेडकर नगर, उ०प्र०)

बात हमारे आपके बीते हुए दिनों की है । हिन्दुओं में छुआछूत की भावना बड़ी प्रबल थी । ऊंची जाति के लोग अपने से नीची जाति के लोगों के यहां, उनके साथ बैठकर खान-पान से परहेज़ करते थे । अन्य दूसरी जातियों की बात तो दूर की रही । यह एक कटु सत्य था–हिन्दू का लोटा भी अगर अपने नीची या अन्य दूसरी जाति के लोग से छू भी जाता तो उसे अपवित्र मानकर दोबारा उसका प्रयोग कभी नहीं करते । वैवाहिक समारोह या अन्य समारोह में मुसलमानों को न्योता दिया जाता था । वे न्योते को सहर्ष सप्रेम स्वीकार करके समारोह में आते भी थे । लेकिन ! जब खान-पान की बारी आती थी, तब मुस्लिम भाइयों को अंयत्र बैठाकर खिलाया जाता था । प्रत्येक हिन्दू के घर में पानी पीने का गिलास तक अलग रखा जाता था ।

छुआछूत का इतना विभेद होते हुए भी गांव-गिराव से लेकर शहरी समाज तक के लोगों में आपसी भाई-चारा, प्रेम-सौहार्द भी इतना प्रबल था कि लोग एक-दूसरे के सुख-दुख में भागीदार थे ही, दूसरे की बहू-बेटियों को अपनी ही बहू-बेटी मानते थे । रिश्तेदारों तक को भी यही सम्मान मिलता था । अलगाव, विद्वेष की भावना दूर-दूर तक नज़र नहीं आती थी, एहसास तक नहीं होता था । प्रेम की भावना तो ऐसी थी कि उसे शब्दों में व्यक्त ही नहीं किया जा सकता ।

छुआछूत का इतना विभेद होते हुए भी गांव-गिराव से लेकर शहरी समाज तक के लोगों में आपसी भाई-चारा, प्रेम-सौहार्द भी इतना प्रबल था कि लोग एक-दूसरे के सुख-दुख में भागीदार थे ही, दूसरे की बहू-बेटियों को अपनी ही बहू-बेटी मानते थे । रिश्तेदारों तक को भी यही सम्मान मिलता था । अलगाव, विद्वेष की भावना दूर-दूर तक नज़र नहीं आती थी, एहसास तक नहीं होता था । प्रेम की भावना तो ऐसी थी कि उसे शब्दों में व्यक्त ही नहीं किया जा सकता ।

आज की युवा पीढ़ी में, शिक्षित सभ्य समाज में छुआछूत की उपरोक्त प्रबल आचरण का नामोनिशान नहीं रह गया है । लोग संग-साथ ही नहीं, एक ही थाली में मिल-बैठकर खाते हैं । लेकिन इतना सब होने के बावजूद दिलों में प्रेम-सौहार्द की भावना और प्रबल होने के बजाए दिलों की दूरियां बढ़ती जा रही हैं । धर्म, मज़हब जाति के नाम पर आज हर इंसान एक-दूसरे को शक की नज़र से देख रहा है । दूसरे की बहू बेटी को अपनी बहू-बेटी का दर्जा भी लुप्त हो गया है । दिखावे के लिए ऊपरी तौर पर हमदर्द नज़र आते हैं, लेकिन अन्दर-अन्दर खुदगर्ज़ से भी बदतर हैं ।

मेरा अपना मन एक सवाल बार-बार करता है । आख़िर ऐसा क्यों है...? क्यों हो रहा है...? हम क्यों कर रहे हैं...? लोगों से भी मेरा यही एक अनुत्तरित सवाल है...?

वर्तमान समय में देश का हर व्यक्ति, बुद्धिजीवी और राजनेता इक्कीसवीं सदी की बात कर रहे हैं । ज्ञान-विज्ञान, विकास का राग अलाप रहे हैं । इसके उलट साथ ही यह विडम्बना भी स्पष्ट रूप से दीखती है कि देश की हर छोटी-बड़ी घटना पर तुरन्त ही धर्म-जाति का मुलम्मा चढ़ाकर संघर्ष के आग में झोंकने को तत्पर हो जाते हैं । इन दिनों विरोधाभासों से किसका अहित हो रहा है, इन्सानियत की बयार कहां बह रही है ? सभी जान समझ रहे हैं ।

हम भी कम दोषी नहीं हैं । उपरोक्त विरोधाभासी बातों

में तुरन्त ही बिना आगे-पीछे सोचे न बुझने वाली इस आग में घी डालने लगते हैं। नतीजा हम आप रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में अभिशप्त की ज़िन्दगी जी रहे हैं, और गाहे-बगाहे इसी ज़िन्दगी को अपनी शान-व-शौक़त समझने और प्रदर्शित करने में पीछे भी नहीं रहते। लेकिन ! एक बात जाने-अनजाने में भी हम नहीं सोच पा रहे हैं। वर्तमान की इस अभिशप्त ज़िन्दगी के माध्यम से हम अपने आने वाले भविष्य की पीढ़ी को किस रास्ते पर ले जा रहे हैं, उन्हें हम कौन-सी विरासत सौंप रहे हैं।

हम बूढ़े दरख़्त तो फ़ख़्र के साथ कह भी सकते हैं कि हमारे पूर्वज कैसे थे, कितने अच्छे थे, आम बोल-चाल की भाषा में कहावतों के माध्यम से, शेरो-शायरी, कहानी-दोहों के माध्यम से नैतिक आचरण से ओत-प्रोत ज्ञान का ख़ज़ाना तो दे ही गये हैं। मगर अपने आने वाली पीढ़ी को क्या दे रहे हैं ? नफ़रत, भेदभाव, मामूली-सी मामूली बात पर जातिगत साम्प्रदायिक आतंक।

आख़िर भविष्य की पीढ़ी जब कभी अपने अतीत पर, अपने पूर्वजों पर भूले-भटके ध्यान करेगी तो वह किस बात के लिए गर्व करेगी ? हम जैसे इतिहास के पलों में खो चुके ख़ुदगर्ज़, संकीर्ण मानसिकता वाले पूर्वजों पर।

उत्सव मनाने की परंपरा सभी देशों में है। ईश्वर, प्रकृति और मानव जाति के परस्पर संबंधों को पर्वों और उत्सवों के रूप में मनाया जाता है। उत्सव मनाने की परंपरा हर देश में, वहां के समाज और संस्कृति के अनुरूप विकसित हुई। लगभग सभी उत्सव आनंद का स्वरूप है और मानवीय जीवन में अपना अहम स्थान रखते हैं।

बात बहुत पुरानी नहीं है, हम लोगों के बचपन के दिनों की बात है। जब भी कोई पर्व-त्योहार, चाहे वह होली, दशहरा, दिवाली हो या ईद-बक़रीद हो, तब लोग इन त्योहारों के नज़दीक आने के दिन गिनते थे। तैयारियां तो महीनों पहले ही करने में जुट जाते थे। ज्यों-ज्यों ये दिन समीप आते थे, समाज के सभी समुदायों में एक अव्यक्त 'जोश-उल्लास-उमंग' पनपने लगता था। प्रत्येक त्योहार में सभी समुदाय के लोग 'शिकवे-गिले' भुलाकर आपस में एक-दूसरे की खुशियां आत्मसात कर लेते थे। उन खुशियों का बोध अलौकिक, अव्यक्त होता था। एक त्योहार समाप्त भी नहीं होता था कि दूसरे त्योहार के आवभगत की लालसा को मन के किसी कोने में सहेज लेते थे। जबकि उस ज़माने के लोग आज के कथित आधुनिक, सभ्य-शिक्षित लोग की अपेक्षा कम पढ़े-लिखे थे। 'गंवार' की संज्ञा से परिभाषित थे। आधुनिकता से कोसों दूर किसी तरह वे अपना जीवनयापन बसर करते थे।

लेकिन आज हमारा आचार-विचार, नैतिक मूल्य बोध, सोच इतना 'संकीर्ण-संकुचित-दूषित' हो गया है कि पर्व-त्योहार मनाने की प्राचीन परम्परा एक 'बोझ' बनकर रह गयी है। मेल-मिलाप, सौहार्द, के बजाए 'शंकालु-इर्ष्यालु' हो गये हैं। तभी तो हर त्योहार के निकट आपने पर हम उसकी सोल्लास आवभागत करने के बजाए 'दहशत' में जीने लगते हैं। महीनों पहले पुलिस प्रशासन का दख़ल हमारे मौलिक जीवनशैली में बढ़ जाता है। पी०ए०सी०, अर्द्धसैनिक बलों की टुकड़ियां गांव-नगर में मार्च पास्ट करने लगती हैं। सभी थानों में 'शान्ति कमेटी' की औपचारिक बैठकें शुरू हो जाती हैं।

कहने का आशय यह है कि आज हम लोग हर पर्व-त्योहारों पर दहशत भरे माहौल में जीने को विवश हैं। ईश्वर के प्रति श्रद्धावान होने के बजाय यह प्रार्थना करते हैं कि किसी तरह, जैसे-तैसे शांतिपूर्वक यह त्योहार 'निपट' जाए।

इन पर्वों-त्योहारों की परम्परा डालने वाले हमारे 'पूवर्जों' की सोच के पीछे एक वैज्ञानिक सार्थकता छिपी थी। उन्होंने कभी यह कल्पना भी नहीं की होगी कि भविष्य में एक समय ऐसा भी आएगा जब इन पर्व-त्योहारों का 'मूल-अंश' ही तिरोहित हो जाएगा। जिस समाज, समुदाय में पर्व-त्योहार, अर्द्धसैनिक बलों, पी०ए०सी० के बंदूक़ों के संगीन साये में मनाये जाएं, उस समाज को चुल्लूभर पानी तो क्या 'सूखे रेत' में डूबकर मर जाना चाहिए। इसी के हक़दार हैं आज के 'सभ्य' लोग।

यदि हम थोड़ा-सा भी संकल्प सच्चे मन से कर लें तो पर्वों-त्योहारों में वही पुराना उल्लास उमंग ला सकते हैं। बस इतना भर कहना है कि समाज के थोड़े से लोग सामने आ जाएं और पुलिस-प्रशासन से दो-टूक कह दें कि इस बार त्योहार हम लोग अपनी देख-रेख में अपनी सुरक्षा में अगुआ बनकर सम्मिलित होकर प्रेम-सौहार्द के साये में मनाएंगे। आप लोगों को इस विशेष अवसर पर हमें ज़रूरत नहीं। यदि नहीं कह सकते तो हम पशुवत हैं।

इतिहास : पुनर्लेखन या खिलवाड़

❖ डॉ॰ रामबहादुर वर्मा

केन्द्र में पूरी बहुमत की सरकार बना लेने के बाद आर॰एस॰एस॰ के राजनीतिक बाजू भारतीय जनता पार्टी ने इतिहास के पुनर्लेखन की दिशा में कार्य करना प्रारंभ कर दिया है । चूंकि भाजपा के पितृसंगठन आर॰एस॰एस॰ का उद्देश्य भारत को धर्मनिरपेक्ष राज्य से बदलकर ब्राह्मणवादी श्रेष्ठता पर आधारित हिन्दू राष्ट्र की स्थापना करना है इसलिए चाहे राज्य को या केन्द्र, जहां कहीं भाजपा की सरकारें बनती है वे इस दिशा में सक्रिय हो जाती हैं । वे इतिहास को इस ढंग से पढ़ाना चाहती है जिससे कि युवापीढ़ी में इस सोच को बल मिले । आर॰एस॰एस॰ व भाजपा विचारों की शक्ति को जानते हैं, इसलिए अपना राजनीतिक प्रभाव बढ़ाने के लिए वे इतिहास को अपने ढंग से इस्तेमाल करना चाहते हैं । वे चाहते हैं कि तथ्यों को दरकिनार कर इतिहास में उन मनगढ़ंत बातों को शामिल किया जाए, जो हिन्दुत्व की सोच को बढ़ावा दे सके जिससे कि हिन्दू राष्ट्र की स्थापना की दिशा में आगे बढ़ा जा सके । इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए संघ परिवार इतिहास के पुनर्लेखन को ज़रूरी मानता है ।

राजस्थान के स्कूली पाठ्यक्रमों में पढ़ायी जाने वाली पुस्तक ''संस्कार सौरभ'' के तृतीय भाग में पाठ संख्या 35 है–''प्राण जाय पर वचन न जाई''। इस पाठ में कारसेवा के दौरान मारे गये कोठारी बंधुओं की कथित बलिदानी गाथा है । इसी तरह कक्षा 6 में पढ़ायी जाने वाली 'संस्कार सौरभ' भाग 4 के पाठ ''दो नवम्बर के हुतात्मा'' में जोधपुर के मारे गये कारसेवकों की वीरता का वर्णन है और इसमें मुलायम सिंह यादव को क्रूर कसाई के रूप में चित्रित किया गया है । इसी पुस्तक के पाठ 24 ''सत्यनिष्ठा'' में साम्प्रदायिक दंगों का वर्णन करते हुए दंगे का कारण मुसलमानों द्वारा गायों का वध बताया गया था ।

इतिहास के पुनर्लेखन के लिए संघ परिवार की संख्या का नाम है–भारतीय इतिहास संकलन समिति । अप्रैल 1992 में इस समिति का सम्मेलन उत्तर प्रदेश सरकार के राज्य शैक्षणिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषद एवं लखनऊ विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास तथा पुरातत्व विभाग के सहयोग से लखनऊ में हुआ । इस सम्मेलन में इतिहास की पाठ्यपुस्तकों के पुनरीक्षण पर विचार-विमर्श किया गया । इस अवसर पर प्रकाशित एक पुस्तक में इतिहासकारों से अपील की गयी कि वे भारतीय इतिहास संकलन समिति के सदस्य बनें । एक प्रकाशित लेख में कहा गया था कि बाबर के एक सिपहसालार मीर बाक़ी ने अयोध्या में राम मंदिर तोड़कर मस्जिद बनवायी थी ।

संघ परिवार व भारतीय इतिहास संकलन समिति चाहती थी कि भारतीय शैक्षणिक अनुसंधान परिषद (एन॰सी॰ई॰आर॰टी॰) इतिहास की उनकी व्याख्या को स्वीकार कर ले । अगस्त 1992 में विश्व हिन्दू परिषद ने एन॰सी॰ई॰आर॰टी के निदेशक को एक सम्मेलन की संस्तुतियों के लिए भेजा था । यह सम्मेलन 'भारतीय इतिहास संकलन समिति' द्वारा आर्य-समस्या पर विचार करने के लिए आयोजित किया गया था । सम्मेलन का निष्कर्ष था कि आर्य भारत के मूल निवासी थे । विहिप चाहती थी कि एन॰सी॰ई॰आर॰टी॰ इसे पाठ्य-पुस्तकों में शामिल करे । इस संबंध में भारतीय शिक्षामंडल, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद आदि संघ परिवार के संगठनों ने भी एन॰सी॰ई॰आर॰टी॰ को एक ज्ञापन भेजा था ।

यदि आर्य भारत के मूल निवासी थे, इस पर ज़ोर देने

के पीछे संघ परिवार की यह समझ है कि जिनके पूर्वज बाहर से आये हैं वे भारत के प्रति गहन लगाव नहीं रख सकते । इसलिए राष्ट्रीय ख्याति के इतिहासकारों के मत की उपेक्षा कर भाजपा व संघ परिवार के इतिहासकार आर्यों को भारत का मूल निवासी सिद्ध करने पर तुले हैं । वे भी यह भी चाहते हैं कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम का प्रारंभ 1857 से नहीं, बल्कि सिकन्दर के आक्रमण के समय से माना जाए । यद्यपि भारत के स्वाधीनता संग्राम में आर०एस०एस० की कोई भूमिका नहीं है, स्वाधीनता संग्राम के अंतिम दौर में संघ के किसी नेता ने जेल नहीं काटी न ब्रिटिश सरकार का विरोध किया, फिर भी आर०एस०एस० चाहता है कि इतिहास का पुनर्लेखन कर राष्ट्रीय आन्दोलन में उसकी भूमिका को उजागर किया जाए ।

विश्व हिन्दू परिषद के पत्र 'हिन्दू विश्व' में यह दावा किया गया था कि यरुशलम, यदुशाल्यम है, 'यदु' अर्थात कृष्ण का पूजा स्थल । यह आधारहीन बात भी लिखी गयी कि लंदन का सेंटपाल गिरिजाघर मूल रूप से गोपाल मंदिर था । काबा मूल रूप से विशाल विष्णु मंदिर था । पेरिस का नोटरे डेम चर्च मूल रूप से देवी भगवती पार्वती उर्फ़ दुर्गा का मंदिर था और पेरिस मूल रूप से एक हिन्दू नगर परमेश्वासारियमू था । आर०एस०एस० से जुड़े एक इतिहासकार पी०एन० ओंक ने यह दावा किया था कि ताजमहल एक हिन्दू मंदिर था तथा लालक़िला व अनेक मुग़ल मक़बरे हिन्दू स्थल थे । ओंक ने तो सर्वोच्च न्यायालय में याचिका दायर की थी कि ताजमहल के इतिहास का पुनर्लेखन किया जाए, क्योंकि उसे शाहजहां ने नहीं बल्कि एक हिन्दू राजा ने बनाया है । सर्वोच्च न्यायालय ने उनकी याचिका ख़ारिज करते हुए कहा था कि यह बकवास है और याचिका का मज़ाक़ उड़ाते हुए कहा था कि "किसी बोनेट में मधुमक्खी घुस गयी है, इसलिए यह याचिका दायर हुई है ।"

भारतीय शैक्षणिक प्रशिक्षण अनुसंधान परिषद (एन०सी०ई०आर०टी०) राष्ट्रीय एकीकरण तथा राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा प्रकाशित पाठ्य-पुस्तकों का मूल्यांकन करती है । इसके द्वारा बनाए गए दिशा-निर्देश में कहा गया है कि इतिहास की पाठ्य-पुस्तकों के मूल्यांकन में दो बातों को ध्यान में रखना चाहिए । पहला यह कि पुस्तक का संदर्भ साम्प्रदायिक, जातिगत व प्रजातीय पूर्वाग्रह न फैलाए । दूसरा यह कि भूतकाल का प्रस्तुतीकरण प्रमाणिक हो तथा मिथक एवं तथ्यात्मक यथार्थ से स्वतंत्र हो । तथ्यों की यथार्थता तथा प्रमाणिकता पाठ्य-पुस्तकों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व है । एन०सी०ई०आर०टी० ने प्राचीनकाल, मध्यकाल व आधुनिककाल के इतिहास को पाठ्य-पुस्तकों को लिखने के बारे में कुछ दिशा-निर्देश दिये गये हैं ।

परंतु विडम्बना यह है कि एन०सी०ई०आर०टी० के पास अपने दिशा-निर्देश को लागू करने की कोई क़ानूनी शक्ति नहीं है, क्योंकि शिक्षा समवर्ती सूची में है जिसमें राज्य सरकारों की निर्णायक भूमिका है । यदि एन०सी०ई०आर०टी० किसी पुस्तक को आपत्तिजनक मानती है तो यह उसकी मूल्यांकन रिपोर्ट को अपने सुझावों सहित संबंधित राज्यों तथा इसकी प्रतिलिपि मानव संसाधन विकास मंत्रालय को भेज सकती है । यदि संबंधित राज्य सरकारें, एन०सी०ई०आर०टी० द्वारा भेजे गये सुझावों को पाठ्यक्रम में नहीं शामिल करती हैं, तो एन०सी०ई०आर०टी० कुछ भी करने में असमर्थ है ।

1989 में राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश में भाजपा की पूर्ण बहुमत की सरकारें बनीं । इसके बाद से भी मध्य प्रदेश एवं राजस्थान के स्कूली पाठ्यक्रमों में धार्मिक कट्टरता पैदा करने वाले पाठ रखे गये । मध्य प्रदेश में आर०एस०एस० का अनुषांगिक संगठन "विद्याभारती" लगभग 1600 स्कूलों का संचालन करती थी और प्रदेश की भाजपा सरकार ने उसे आठवीं कक्षा तक अपना पाठ्यक्रम तय करने व परीक्षा लेने का अधिकार दे दिया । मध्य प्रदेश में विद्याभारती द्वारा संचालित स्कूलों को पाठ्यक्रमों में राष्ट्रपिता गांधी जी को नाथूराम गोडसे का हत्यारा कहा गया । स्नातक स्तर पर फाउंडेशन कोर्स की आने वाली पुस्तक "भारत की सांस्कृतिक विरासत" में भारत छोड़ो आन्दोलन पर एक पैराग्राफ़ ही दिया गया और इसमें कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा ब्रिटिश सरकार के साथ सहयोग कर धोखाधड़ी का आरोप लगाया गया ।

राजस्थान के स्कूली पाठ्यक्रमों में पढ़ायी जाने वाली पुस्तक "संस्कार सौरभ" के तृतीय भाग में पाठ संख्या 35 है– "प्राण जाय पर वचन न जाई"। इस पाठ में कारसेवा के दौरान मारे गये कोठारी बंधुओं की कथित बलिदानीं गाथा है । इसी तरह कक्षा 6 में पढ़ायी जाने वाली 'संस्कार सौरभ' भाग 4 के पाठ "दो नवम्बर के हुतात्मा" में जोधपुर के मारे गये कारसेवकों की वीरता का वर्णन है और इसमें मुलायम सिंह यादव को क्रूर कसाई के रूप में चित्रित किया गया

है । इसी पुस्तक के पाठ 24 ''सत्यनिष्ठा'' में साम्प्रदायिक दंगों का वर्णन करते हुए दंगे का कारण मुसलमानों द्वारा गायों का वध बताया गया था ।

1991 में उत्तर प्रदेश में भाजपा की पूर्ण बहुमत की सरकार बनी । फिर इतिहास की पुस्तकों में बदलाव शुरू हुआ । यह पढ़ाया गया कि आर्य भारत के मूल निवासी है और वे बाहर से नहीं आये । गांधी व कबीर से संबंधित पाठ हटा दिये गये । सुभाष चन्द्र बोस से हेडगवार की भेंट दिखाकर यह बताने की कोशिश की गयी कि हेडगवार राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रमुख स्तंभ थे । संघ परिवार के संगठनों ने यह भी मांग की कि लखनऊ के प्रसिद्ध बेगम हज़रत महल पार्क का नाम बदलकर 'उर्मिला वाटिका' रख दिया जाए जबकि बेगम हज़रत महल 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की सेनानी हैं और हमारे लिए आदर की पात्र हैं, परंतु साम्प्रदायिक व संकीर्ण हिन्दू-वादी दृष्टिकोण के कारण भाजपा उनके नाम को बर्दाश्त नहीं कर पा रही है ।

2014 के लोकसभा चुनाव में भाजपा द्वारा केन्द्र में बहुमत की सरकार बनाने तथा आर०एस०एस० के प्रचारक रह चुके नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद इतिहास के पुनर्लेखन की संघ परिवार की पुरानी मांग को बल मिला है । इस बार यह मोर्चा आर०एस०एस० से जुड़े दीनानाथ बत्रा ने संभाला है । दीनानाथ बत्रा गत कई वर्षों से दिल्ली से ''शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास'' चलाते हैं । वह शिक्षा संस्कृति को पूरी तरह आर०एस०एस० की मानसिकता में ढालना चाहते हैं । वे विशेषकर एन०सी०ई०आर०टी० की पुस्तकों के पीछे पड़े हैं, जो कि अपनी तार्किकता, वस्तुनिष्ठता, वैज्ञानिकता के लिए जानी जाती है ।

2014 के लोकसभा चुनाव में भाजपा द्वारा केन्द्र में बहुमत की सरकार बनाने तथा आर०एस०एस० के प्रचारक रह चुके नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद इतिहास के पुनर्लेखन की संघ परिवार की पुरानी मांग को बल मिला है । इस बार यह मोर्चा आर०एस०एस० से जुड़े दीनानाथ बत्रा ने संभाला है । दीनानाथ बत्रा गत कई वर्षों से दिल्ली से ''शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास'' चलाते हैं । वह शिक्षा संस्कृति को पूरी तरह आर०एस०एस० की मानसिकता में ढालना चाहते हैं । वे विशेषकर एन०सी०ई०आर०टी० की पुस्तकों के पीछे पड़े हैं, जो कि अपनी तार्किकता, वस्तुनिष्ठता, वैज्ञानिकता के लिए जानी जाती है । बत्रा चाहते हैं कि तथाकथित धार्मिक, पैराणिक मान्यताओं को बिना कोई प्रश्न उठाये स्वीकार कर लिया जाए ।

गत 30 जून 2014 को गुजरात सरकार ने एक परिपत्र के माध्यम से राज्य के 42,000 सरकारी स्कूलों को यह निर्देश दिया कि वे दीनानाथ बत्रा की नौ किताबों को पढ़ाई में अनिवार्य रूप से शामिल करें । इन नौ पुस्तकों में से एक ''तेजोमय भारत'' में भारत की महानता का वर्णन करते हुए कहा गया है–(1) ''अमेरिका स्टेमसेल रिसर्च का श्रेय लेना चाहता है, लेकिन सच्चाई यह है कि भारत के डॉ० बालकृष्ण गणपत माता पुरकर ने शरीर के विभिन्न हिस्सों को फिर से पैदा करने का पेटेंट पहले ही हासिल कर लिया था ।...आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि यह शोध कोई नया नहीं है और डॉ० मातापुरकर महाभारत से प्रेरित हुए थे । कुंती के एक बच्चा था, जो सूर्य से भी तेज था । जब गांधारी को यह पता चला तो उसका गर्भपात हुआ और उसकी कोख से मांस का लंबा टुकड़ा बाहर निकला। द्वैपायन व्यास को बुलाया गया, जिन्होंने उसे कुछ दवाइयों के साथ पानी की टंकी में रखा । बाद में उन्होंने मांस के उस टुकड़े को 100 भागों में बांट दिया और उन्हें घी से भरपूर टैंकों में दो साल के लिए रख दिया । दो साल बाद उसमें सौ कौरव निकले । इसे पढ़ने के बाद डॉ० मातापुरकर ने एहसास किया कि स्टेमसेल की खोज उनकी अपनी नहीं है, बल्कि वह महाभारत में भी दिखती है ।''

इसी पुस्तक में दीनानाथ बत्रा ने लिखा है–''हम जानते हैं कि टेलीविजन का आविष्कार स्काटलैंड के एक पादरी जान लोगी बाइर्ड ने 25 मार्च 1926 में किया था । मगर हम आपको उसके पहले दूरदर्शन में ले जाना चाहते हैं । भारत

के मनीषी योगविद्या के ज़रिये दिव्य दृष्टि प्राप्त कर लेते थे । इसमें कोई संदेह नहीं है कि टेलीविजन का आविष्कार यहीं से दिखता है । महाभारत में संजय हस्तिनापुर के राजमहल में बैठा अपनी दिव्य दृष्टि का प्रयोग कर महाभारत के युद्ध का सजीव हाल दृष्टिहीन धृतराष्ट्र को दे रहा था ।''

बत्रा आगे लिखते हैं–''जिसे हम मोटरकार के नाम से जानते हैं उसका अस्तित्व वैदिककाल में बना हुआ था । उसे अनाश्व रथ कहा जाता था । आम तौर पर एक रथ को घोड़ों से खीचा जाता है, मगर अनाश्व रथ एक ऐसा रथ होता है, जो बिना घोड़ों के चलता है, जो आम मोटरकार है ।''

दीनानाथ बत्रा ने इन पुस्तकों में अनेक बातें कही हैं । इनमें से यह सुझाव भी है–''क्या आप भारत का नक़्शा बना रहे हैं ? इस बात की गारंटी कर लें कि आप उसमें पाकिस्तान, नेपाल, अफ़ग़ानिस्तान, भूटान, तिब्बत, बंगलादेश, श्रीलंका और म्यांमार अर्थात बर्मा को भी शामिल कर रहे हैं । यह सभी अविभाजित भारत या अखंड भारत का हिस्सा है ।'' इसके अलावा–''पाकिस्तान का स्वतंत्रता दिवस 14 अगस्त को राष्ट्रीय छुट्टियों में शामिल करना होगा जिसे ''अखंड भारत स्मृति दिवस'' के रूप में मनाना चाहिए ।''

बत्रा का सुझाव है कि सभी विषयों का पहला अध्याय विश्व सभ्यता को भारत के योगदान को दिखाने वाला होना चाहिए । यह योगदान क्या है इसके कुछ उदाहरण ऊपर दिये जा चुके हैं । इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि

आर०एस०एस० और भाजपा सत्ता का प्रयोग युवा पीढ़ी को ऐसी शिक्षा देने के लिए करना चाहते हैं, जिससे वे भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने के उनके सपने को वे पूरा कर सके । इसीलिए वे शिक्षा पाठ्यक्रमों तथा इतिहास में परिवर्तन करना चाहते हैं । चूंकि राष्ट्रीय आन्दोलन में आर०एस०एस० की कोई भूमिका नहीं है और स्वाधीनता संग्राम के अंतिम दौर में आर०एस०एस० के सरसंघचालक गुरु गोल-वलकर और दीनदयाल उपाध्याय जैसे प्रचारकों ने न तो स्वाधीनता संग्राम में भाग लिया और न जेल गये, इसलिए इतिहास को विकृत करना तथा उसका पुनर्लेखन करना उनके लिए ज़रूरी हो गया । ब्रिटिश सरकार से अपने को सांस्कृतिक संगठन कहकर सहयोग करने वाला आर०एस०एस० स्वाधीनता संघर्ष के इतिहास में तथ्यों को छिपाकर अपनी भूमिका अंकित करना चाहता है ।

प्रसिद्ध इतिहासकारों ने इस पूरी परियोजना को कूड़ा क़रार दिया है । प्रो० रोमिला थापर का कहना है कि, ''यह इतिहास नहीं फैंटेसी है ।'' प्रो० इरफ़ान हबीब का कहना था कि, ''विषय वस्तु इतनी बेहूदा है कि कोई भी प्रतिक्रिया अनावश्यक ही होगी । मुझे नहीं पता कि जब वे भूगोल को फैंटेसी में बदलेंगे तो बच्चों को क्या पढ़ाएंगे ।'' इस प्रकार इतिहास के बजाय मिथकों को, वस्तुनिष्ठ ज्ञान के बजाय अपने अतीत के मिथ्या गौरवगान को बढ़ावा देने, धर्म विशेष को सर्वश्रेष्ठ प्रमाणित करने की सुविचारित योजना के तहत अकादमिक पदों पर दीनानाथ बत्रा व ओंक जैसे विचारधारा के लोगों को अकादमिक पदों पर नियुक्त किया जा रहा है । भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद (इंडियन काउंसिल ऑफ़ हिस्टारिकल रिसर्च) के अध्यक्ष के रूप में वाई० सुदर्शन को नियुक्त किया गया है । राव का मानना है कि रामायण व महाभारत इतिहास है, न कि महाकाव्य ।

केवल इतिहास को ही नहीं बल्कि समूची शिक्षा प्रणाली तथा उसके पाठ्यक्रमों को बदलने का खाका तैयार हो चुका है । आर०एस०एस० से जुड़े ''शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास'' के राष्ट्रीय अध्यक्ष दीनानाथ बत्रा ने यह कहा है कि ''राजनीतिक बदलाव हो चुका है । अब शिक्षा में पूर्ण बदलाव होना चाहिए ।'' पूर्व भाजपा अध्यक्ष व वर्तमान केन्द्रीय मंत्री एमन्यास वेंकैया नायडू ने 23 जून 2013 को स्पष्ट कहा था–''अगर वह (भाजपा) सत्ता में आती है तो पाठ्य-पुस्तकों में बदलाव करेगी ।'' केन्द्रीय गृह मंत्री राजनाथ

सिंह ने भी 23 जुलाई 2014 को राज्यसभा में कहा कि, ''यह प्रस्ताव है कि यह सुनिश्चित करने के लिए कि बच्चों को मानवीय मूल्यों तथा जीवन मूल्यों के प्रति जागरूक बनाने के लिए स्कूली पाठ्यक्रमों में बदलाव किया जाएगा।'' दीनानाथ बत्रा का भी कहना है–''आवश्यकताओं को संबोधित करने के लिए एक राष्ट्रवादी शिक्षा प्रणाली विकसित करनी होगी और उसके माध्यम से एक ऐसे युवा पीढ़ी विकसित करनी होगी जो हिन्दुत्व तथा राष्ट्रवाद के प्रति प्रतिबद्ध हो।''

बत्रा के 'शिक्षा बचाओ आन्दोलन' ने एन॰सी॰ई॰आर॰टी॰ की हिन्दी पुस्तकों को लेकर एक पुस्तिका प्रकाशित की है और उसे मानव संसाधन विकास मंत्रालय के पास भेज दिया है। वे चाहते हैं कि एन॰सी॰ई॰आर॰टी॰ की पुस्तकों से एम॰एफ॰ हुसैन व पंजाबी कवि अवतार सिंह 'यश' के संदर्भ को हटा दिया जाए। उनके अनुसार 'मुश्किल', 'दोस्त', 'गुस्सा', 'शरारत', 'ख़बरदार', 'ग़ायब', 'मुहल्ला', 'मौक़ा' जैसे शब्दों के प्रयोग को कड़ाई से बंद किया जाए क्योंकि ये हिन्दी के नहीं उर्दू के शब्द हैं, जो शब्दावली को प्रदूषित कर रहे हैं। शिक्षा में परिवर्तन के सुझावों के लिए 'शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास' ने एक आयोग का गठन किया है। एक स्वयंसेवी संस्था द्वारा गठित आयोग के पीछे आर॰एस॰एस॰ का हाथ है।

आर॰एस॰एस॰ इस संस्था के माध्यम से दबाव डालकर सरकार से शिक्षा के क्षेत्र में मनचाहा परिवर्तन कराना चाहता है। 21 सदस्यीय आयोग में कई ऐसे लोग हैं जो शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न संस्थानों से जुड़े थे और निदेशक, कुलपति, प्रोफ़ेसर जैसे उच्च पदों पर काम कर चुके हैं। गत 29 जुलाई 2014 को केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री स्मृति ईरानी को नागपुर में संघ परिवार द्वारा आयोजित विद्याभारती आयोजन में उपस्थित थीं। वहां पर उन्होंने आर॰एस॰एस॰ प्रमुख मोहन भागवत व संघ के अन्य कई नेताओं से बातचीत की। अनुभवहीन स्मृति ईरानी को मानव संसाधन विकास मंत्रालय देने की रणनीति यही है कि उसे अप्रत्यक्ष रूप से आर॰एस॰एस॰ के एजेंडे के अनुरूप चलाया जा सके।

आर॰एस॰एस॰ और भाजपा सत्ता का प्रयोग युवा पीढ़ी को ऐसी शिक्षा देने के लिए करना चाहते हैं, जिससे वे भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने के उनके सपने को वे पूरा कर सके। इसीलिए वे शिक्षा पाठ्यक्रमों तथा इतिहास में परिवर्तन करना चाहते हैं। चूंकि राष्ट्रीय आन्दोलन में आर॰एस॰एस॰ की कोई भूमिका नहीं है और स्वाधीनता संग्राम के अंतिम दौर में आर॰एस॰एस॰ के सरसंघचालक गुरु गोलवलकर और दीनदयाल उपाध्याय जैसे प्रचारकों ने न तो स्वाधीनता संग्राम में भाग लिया और न जेल गये, इसलिए इतिहास को विकृत करना तथा उसका पुनर्लेखन करना उनके लिए ज़रूरी हो गया। ब्रिटिश सरकार से अपने को सांस्कृतिक संगठन कहकर सहयोग करने वाला आर॰एस॰एस॰ स्वाधीनता संघर्ष के इतिहास में तथ्यों को छिपाकर अपनी भूमिका अंकित करना चाहता है।

इतिहास का पुनर्लेखन कर तथा पाठ्य-पुस्तकों में संशोधन कर आर॰एस॰एस॰ व भाजपा नयी पीढ़ी के मन-मस्तिष्क श्रेष्ठता पर आधारित हिन्दू राष्ट्र की परिकल्पना को मज़बूत करना चाहता है जिससे कि धर्मनिरपेक्षता लोकतंत्र एवं मानव समानता पर आधारित भारतीय संविधान को बदलकर मनुवादी व्यवस्था पर आधारित हिन्दू राष्ट्र घोषित करने वाला विधान लागू किया जा सके। वे भूल रहे हैं कि इतिहास लेखन में मिथकों को सत्य बताने से भारत का विश्व में कितना उपहास होगा। समय आ गया है कि लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, मानव समता तथा भारतीय संविधान में वर्णीत आदर्शों में विश्वास रखने वाली ताक़तें इतिहास के इस पुनर्लेखन, जो कि इतिहास का विध्वंस है, के विरुद्ध एकजुट होकर संघर्ष के मैदान में उतरें।

अन्य पिछड़े वर्गों, दलितों, आदिवासियों एवं अल्पसंख्यकों को आर॰एस॰एस॰ एवं भाजपा द्वारा इतिहास का पुनर्लेखन कर तथा शिक्षा पाठ्यक्रमों में बदलाव लाकर पुन: मनुवादी व्यवस्था स्थापित करने के शड्यंत्र से सावधान हो जाना चाहिए। यदि वे आज नहीं जागे, तो उनकी आने वाली पीढ़ियां उन्हें माफ़ नहीं करेंगी।

लेखकों एवं रचनाकारों से

''कान्ति'' में प्रकाशनार्थ जो रचनाएं हमें मिलती हैं, उनकी स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना अथवा रचनाओं की वापसी के लिए अपना पता लिखा लिफ़ाफ़ा डाक टिकट सहित अवश्य भेजें। इसके अभाव में रचनाओं के विषय में हम आपको जानकारी देने में असमर्थ हैं। ध्यान रहे कि पर्याप्त डाक टिकट लगाकर प्रकाशनार्थ सामग्री भेजें, ताकि डाक, बैरंग न हो। आशा है, आपका सहयोग मिलता रहेगा। -संपादक

ڈائریاں اور کیلنڈر 2015

شب وروز (ڈائری) عام اور ڈیلکس ایڈیشن

• ہر صفحے پر قرآنی آیات واحادیث رسولؐ، انبیاء کرام، صحابۂ عظام اور بزرگان سلف کے سبق آموز اقوال، معتبر شعرا کے تعمیری اور فکر انگیز اشعار • شروع وآخر کے ۴۸ صفحات پر اہم ودل چسپ معلومات • مسنون دعائیں • خطبات جمعہ ونکاح، قربانی، عقیقے، نماز جنازہ اور استخارے کی ماثورات • نقشہ اوقات نماز • مسلم تنظیموں، اہم سفارت خانے اور اردو اخبارات کے پتے • ہر ماہ کے آغاز میں ایک صفحہ Planner کے لیے خاص • لوک سبھا اور راجیہ سبھا کے مسلم ممبران کے پتے کے علاوہ بہت ساری دوسری معلومات سے مزین ایک دل چسپ ومفید ڈائری۔
صفحات: ۴۳۲ نفیس کاغذ، مضبوط ریکسین کور، راؤنڈ کٹنگ، کور پر ربن لگا ہوا ڈیلکس بائنڈنگ۔

اسلامی ڈائری (پاکٹ سائز)

• ہر صفحہ قرآنی آیات، احادیث رسولؐ، بزرگوں کے اقوال اور بزرگ وتعمیر پسند شعرا کے تعمیری وفکر انگیز اشعار سے مزین
• ۲۵ صفحات پر مشتمل اہم اور ضروری معلومات • کل صفحات: ۲۰۸ نفیس اور عمدہ کاغذ۔

کیلنڈر

• چار رنگوں پر مشتمل سفید میٹ پیپر پر نفیس طباعت
• ہر صفحے پر منتخب قرآنی آیات اور حدیث پاکؐ کے دل کش طغرے
• اردو، ہندی اور انگریزی تراجم کے ساتھ ایک دیدہ زیب کیلنڈر
• ۳ ورقی دو طرفہ طباعت، خوب صورت قدرتی مناظر، دو عالی شان مساجد کی تصویر اور ہر مہینے کی تاریخیں نمایاں حروف میں۔

نوٹ

• اسلامی کیلنڈر اور شب وروز ڈائری پر اپنے ادارے کا نام چھپوانے کے لیے ۳۰ اکتوبر ۲۰۱۴ء تک تفصیلات لازماً ارسال فرمادیں۔
شب وروز اور کیلنڈر کے لیے کم از کم مطلوبہ تعداد بالترتیب 100 اور 1000 ہے۔

سب ڈپو سے رابطہ کے لیے

بنگلور : 080-26701306
حیدرآباد : 040-66710339
ممبئی : 09890421345
گوا : 09822163132

مرکزی مکتبہ اسلامی پبلشرز، نئی دہلی ۲۵ | MMI PUBLISHERS

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazal Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025
Phone:26971652,26954341(D) Fax:26947858 E-mail: mmipublishers@gmail.com • Website: www.mmipublishers.net

शब्बी आपा

● मासूम अंसारी

आंगन के कोने में ढाबरी में मुर्ग़ बांग देकर चुप हुआ था कि मोअज़्ज़िन ने फ़ज्र की अज़ान दी । पूरा घर मीठी नींद में सो रहा था । मगर शब्बी आपा जाये नमाज़ बिछाये तहज्जुद की नमाज़ अदा कर ख़ुदा के बारगाह में दोनों हाथ फैलाये ज़ारो-क़तार रो-रोकर दुआ मांग रही थीं ।

बस ख़ुदा से अपनी दुआ क़बूल करवानी थी । शब्बी आपा अट्ठाइस साल की थीं काफ़ी बातूनी हंसमुख दुबली-पतली चुलबुली-सी शब्बी आपा अपने ख़्वाबों की दुनिया में खोई रहती । पढ़ने-लिखने का शौक़ बहुत था हर वक़्त किताबों व नाविलों की दुनिया में डूबी रहती । घर वाले उनका रिश्ता ढूंढ़ रहे थे, सबको उनके ब्याह की फ़िक्र थी ।

शब्बी के पैरों में धीरे-धीरे दर्द रहने लगा और देखते-देखते उनका बदन भारी हो गया । उनका चलना-फिरना मुश्किल हो गया । उनको लेकर घर में सभी परेशान थे । उनको जो देखने आता वह यही कहता लड़की मोटी है । शब्बी आपा आने वालों को मन ही मन कोसती । फिर आज तो अल्लाह ने उनकी सुन ली । और वह धीरे-धीरे ठीक होने लगीं । उन्होंने अल्लाह से एक वादा भी किया था । ठीक हो जाने पर पांच सौ रुपये मस्जिद में दूंगी । अल्लाह का करम हुआ शब्बी आपा फिर से ठीक हो गयीं । जोड़-जाड़ के पांच सौ रुपये इकट्ठा किये और इसी ताक में रहीं कि कब नम्मो आये और चुपके से उसे दे दूं । अम्मी भी न जान पाएं । अक्सर वह काम वाली नम्मो के हाथों दस पचास रुपये मस्जिद भिजवा देती थीं ।

नम्मो आयी और शब्बी आपा ने मौक़ा पाते ही झट से उसे पांच सौ का नोट पकड़ा दिया । रुपये मस्जिद में दे देना और रसीद कटवा लेना ।

पांच सौ का नोट देखकर नम्मो को लालच आ गयी । वह गिड़गिड़ाने के अंदाज़ में बोली, "बिटिया हमारे भाई बहुत ग़रीब हैं लड़की ब्याह रहे हैं थोड़ा उनकी भी मदद करो ।"

शब्बी आपा हां-हां करके रह गयीं इतने पैसे इकट्ठा करने में ही उन्हें लाले लग गये थे । नम्मो बुरा-सा मुंह बनाए अच्छा कहकर चल दी ।

उस वक़्त शब्बी आपा को भी कुछ खटका हुआ इतने रुपये देकर ठीक न किया । कहीं नियत डोल गयी तो क्या होगा ? शाम को आते ही पूछा "नम्मो रसीद लायीं ।"

"नहीं लायी उन्होंने नहीं दिया ।"

ज़्यादा जिरह ठीक न समझते हुए बोलीं, "कल ज़रूर ले आना ।" दूसरे दिन उनको फिर नफ़ी में जवाब मिला । उनको कुछ खटका हुआ कहीं उसने बीच में ही तो नहीं मार दिये वरना कभी कहती है भूल गये ।

उनके दोबारा पूछने पर तुनक कर बोलीं, "अरे बिटिया

माल का लालच और ईमान दोनों किसी बन्दे के दिल में हराम जमा नहीं हो सकते ।
मद्रासी
मद्रासी होटल
मालवीय रोड
रायपुर (सी०जी०)
फोन : 0771-2539516,2236788
मद्रासी होटल
शॉप नं० 1-7
मोतीबाग़ चौपाटी, रायपुर
फोन : 0771-2533946, 5053603

मस्जिद के पैसे हैं कौनो खाइली'' रसीद ज़रूरी है का ।''

''तुम जानो तुम्हारा ईमान जाने मैंने तो मस्जिद के नाम से निकाला था'' मन ही मन कहकर रह गयीं ।

जब भी नम्मो को देखती शब्बी आपा को खटक होती और वह अन्दर ही अन्दर उलझ कर रह जातीं । शब्बी आपा की नज़रें काम करती नम्मो पर बार-बार पड़ती वह अपने काम में मगन थी या उनसे नज़रें चुरा रही थी वह खर्र-खर्र झाड़ लगाये जा रही थी, झाड़ से घर को सारा कचरा उनकी तरफ़ बढ़ाए जा रही थी–गर्द धूल उनके सर के ऊपर चढ़ी जा रही थी । और यूं लगता था कि एक हाथ और मारेगी और कचरा उन्हीं पर फेंक देगी । शब्बी आपा को लगा यह उसके मन की गन्दगी है जो उनके ऊपर फेंक रही है । एक पल को उसने दम लेते हुए झाड़ू रोक दी और अपनी ओढ़नी को झटक कर ओढ़ ली ।

और फिर अपने काम में लग गयी । शब्बी आपा नम्मो की जगह-जगह से फटी ओढ़नी में से उसकी ग़रीबी को झांकती तो कभी उसकी चोरी को पकड़ना चाहतीं । मगर नतीजे में अफ़सुर्दह होकर रह जातीं ।

अब नम्मो ने खोयी-खोयी सी शब्बी को देखा और टोका बिटिया हटोगी नहीं क्या, शब्बी आपा वहां से चुपचाप हट आयीं ।

शाम को नम्मो अम्मां से छुट्टी लेने आयी थी वह भाई के घर शादी में जा रही थी । अपना काम ख़त्म किये और इत्मीनान से बैठी थी । अम्मां से मुख़ातिब होकर बोली, ''बाजी आज हमने अपनी बकरी बेच दी तीन हज़ार में बिकी है ।'' अपनी पोटली से चार हज़ार रुपये निकाले सभी नोट पांच सौ के थे । सौ पचास दस के फुटकर भी थे । एक हज़ार अपनी पोटली में रखे । ''लो बिटिया तीन हज़ार तुम रख लो संभाल कर'' शब्बी आपा की तरफ़ झिझकते मन से बढ़ा दिये । शब्बी आपा ने एहतियात के तौर पर गिनने लगी तीन की जगह साढ़े तीन हज़ार थे नम्मो शब्बी आपा का मुंह तकने लगी । अम्मा ने लड़की से कहा, '' शब्बी ठीक से गिनो नम्मो ने गिनकर दिये थे तुम्हारा हर काम यूं ही होता है । शब्बी आपा ने एक-एक नोट गिनकर दिखा दिया छह की जगह सात नोट निकले । नम्मो हैरत से उनको देखती रही । ''बिटिया इनको संभाल कर रख देना'' कहकर चली गयी । कहकर तो एक हफ़्ते के लिए गयी थी मगर तीसरे ही दिन आ गयी ।

नम्मो को देखते ही शब्बी आपा बोली, ''आरे नम्मो तुम तो आ गयी ?

''हां बिटिया वहां बहुत गर्मी रही चले आये । और चुप होकर रह गयी ।''

अगली सुबह को नम्मो ने आते ही सबसे पहले रसीद शब्बी आपा को पकड़ायी उसे पढ़ा सोच में पड़ गयी कि एक महीने के बाद नम्मो उसको रसीद पकड़ा रही है । फिर नफ़ी में सिर हिलाते हुए रसीद के टुकड़े-टुकड़े कर हवा में उड़ा दिये । उस दिन से नम्मो ने भी शब्बी आपा से नज़रे चुराना छोड़ दी ।

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

www.kanti.in

प्रचार-प्रसार मुहिम के लिए विशेष छूट

मासिक कान्ति के प्रचार-प्रसार हेतु एक मुहिम शुरू की गयी है जिसके तहत कोई भी व्यक्ति 'मासिक कान्ति' के 5 नये ख़रीदार बनाता है तो उसे मुफ़्त में एक और ख़रीदार बनाने की छूट होगी । इस अवसर से लाभ उठाने के लिए एक साथ एक हज़ार एक सौ रुपये (Rs. 1100/-) सीधे कान्ति के कार्यालय में जमा करने होंगे । प्रचार-प्रसार की यह मुहिम आगामी कुछ महीनों तक चलती रहेगी । मासिक कान्ति के पाठक इस विशेष छूट का लाभ उठाने के लिए अपने-अपने इलाक़ों में अपने सगे-संबंधियों एवं अन्य साथियों को प्रेरित कर सकते हैं । विस्तार से जानने के लिए सम्पर्क करें :

मैनेजर

मासिक कान्ति

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव,
जामिया नगर, नई दिल्ली-110025
09818799223, 011-26949430
E-mail : kanti hindimonthly@yahoo.com

गिरती-उठती आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था

■ डॉ॰ मुहम्मद अहमद

आज़ादी के बाद से ही हमारा देश विकास के पथ पर अग्रसर है । पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने विकास-कार्यों की आधारशिला रखी थी और इस दिशा में बहुत काम हुए थे । कांग्रेस ने कई पंचवर्षीय योजनाओं को अमली जामा पहनाया । देश आर्थिक रूप से मज़बूत होता चला गया, लेकिन यह भी सच है कि इस प्रक्रिया में उसे बहुत-से अवरोधों, रुकावटों और आयामों का सामना करना पड़ा । फिर भी हमारी अर्थव्यवस्था गिरती-उठती आगे बढ़ती रही । इसका एक बड़ा कारण था दीर्घकालिक सोच और लक्ष्यबद्ध अनुशासन ।

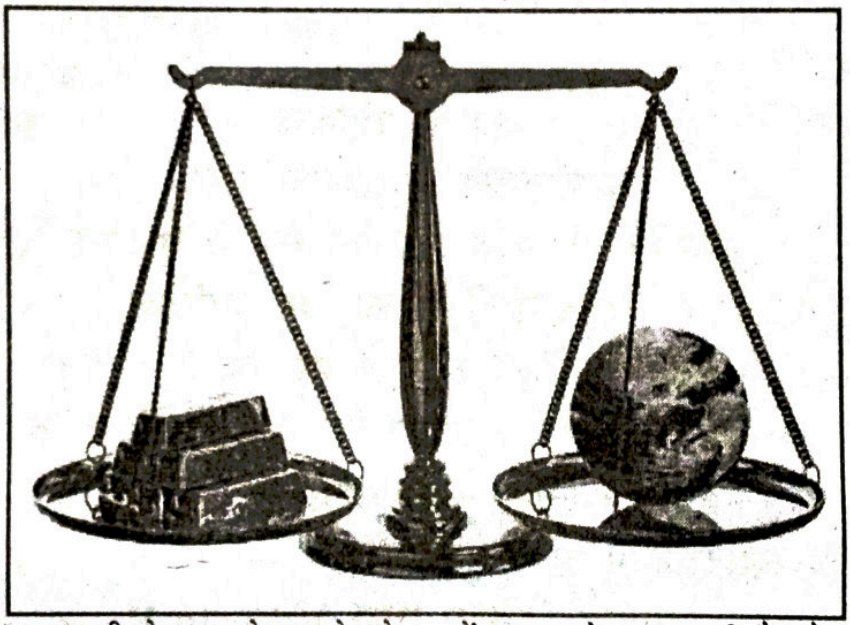

सरकार के दिशा-निर्देश के साथ नियंत्रणबद्ध योजना-प्रक्रिया के चलते भारत ने वर्ष 1954-55 और 1964-65 के बीच सालाना औसतन 8% से ज़्यादा की औद्योगिक वृद्धि हासिल की । लेकिन इसके बाद वह बिल्कुल अलग पड़ गया । इस दौर के अगले 10 वर्षों को (1965-66 से 1974-75) आज़ादी के बाद के सबसे बुरे वक़्त के तौर पर देखा गया । औद्योगिक वृद्धि में गिरावट आयी और सालाना 3% रह गई । वहीं कुल वृद्धि दर में भी कमी आयी और यह क़रीब 2 % पर आ गयी । भारत को समय-समय पर भुगतान संतुलन का सामना करना पड़ा । ऐसे में भारत को अपनी न्यूनतम ज़रूरतें पूरी करने के लिए विदेश से मदद की गुहार लगाने के अलावा कोई और विकल्प नहीं बचा था ।

1970 के मध्य से योजनागत विकास से मोहभंग होने लगा और अर्थव्यवस्था में उदारीकरण की मांग होने लगी । 5 जनवरी 1976 को संसद में दिए गये राष्ट्रपति के अभिभाषण में सरकार ने ऐसे नियंत्रण को ख़त्म करने का इरादा जताया जो उत्पादकता बढ़ाने और उद्यमशीलता के आधार के लिए प्रासंगिक नहीं थे । 1991 के आर्थिक उदारीकरण ने देश को कुछ नुक़सानों के साथ आर्थिक रूप से मज़बूत किया । वर्तमान मोदी सरकार भी आर्थिक सुधार की दिशा में तेज़ी के साथ बढ़ रही है ।

वर्ल्ड बैंक ने कहा है कि 'मोदी डिविडेंड' यानी नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में नयी सरकार बनने से सेंटिमेंट में आये सुधार के कारण भारत का आर्थिक विकास साल 2015-16 में बढ़कर 6.4% हो सकता है । बैंक ने कहा है कि मोदी सरकार को पिछली सरकार के मुक़ाबले ज़्यादा मार्केट-फ्रेंडली माना जा रहा है और इसके चलते कारोबारियों का उत्साह बढ़ सकता है । वर्ल्ड बैंक ने अपनी रिपोर्ट 'साउथ एशिया इकानॉमिक फ़ोकस' में कहा, 'भारतीय अर्थ-व्यवस्था समूचे दक्षिण एशिया क्षेत्र के उत्पादन में 80 % योगदान करती है और 2014-15 में 5.6% ग्रोथ हासिल कर यह 2015-16 में 6.4 प्रतिशत की रफ़्तार से बढ़ेगी' ।

देश के आर्थिक विकास के स्रोतों में अस्वाभाविक रूप से एक व्यक्ति विशेष का उल्लेख करने के अलावा रिपोर्ट में परंपरागत तरीक़ा ही अपनाया गया है । इसमें कहा गया है कि दरमियानी तौर पर अर्थव्यवस्था की हालत बेहतर करने के लिए ढांचागत सुधार करने होंगे और माइक्रो-इकानॉमिक मैनेजमेंट में बुद्धिमानी दिखानी होगी । भारत के भीमकाय पड़ोसी का ज़िक्र करते हुए वर्ल्ड बैंक ने कहा कि चीन की ग्रोथ अगले साल सुस्त होकर 7.2% रह जाएगी ।

इसी साल अप्रैल में वर्ल्ड बैंक ने इसके 7.5 % रहने का अनुमान लगाया था । बैंक को यह भी लग रहा है कि अमेरिकी अर्थव्यवस्था को सहारा देने के लिए वहां का फ़ेडरल रिज़र्व जो कुछ कर रहा है, उससे पीछे हटने पर भारत के लिए कोई ख़तरा नहीं है । बैंक का कहना है कि इंडियन इकॉनॉमी अपनी हालत संभालने के लिहाज़ से पहले से ज़्यादा मज़बूत हो चुकी है ।

नयी सरकार की ओर से नीतिगत आर्थिक मामलों पर हाल में उठाये गये क़दमों का ज़िक्र करते हुए रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत की आर्थिक विकास दर साल 2016-17 में बढ़कर 7% तक पहुंच जाएगी । सरकार ने रेलवे और रक्षा क्षेत्र में एफ़डीआई के लिए दरवाज़े और खोले हैं, योजना आयोग का वजूद ख़त्म कर उसकी जगह एक आर्थिक सलाहकार समिति बनाने की बात की है और वित्तीय समायोजन की दिशा में क़दम बढ़ाया है । साथ ही भूमि अधिग्रहण के नियम सरल किए हैं और श्रम क़ानूनों में बदलाव किए हैं ।

वर्ल्ड बैंक ने दो अलग-अलग रिपोर्टों में कहा कि दक्षिण एशिया में आर्थिक विकास के साल 2015 में बढ़कर 6% होने की संभावना है और इसकी वजह भारत होगा । दूसरी ओर, चीन की जीडीपी ग्रोथ में सुस्ती के कारण पूर्व एशिया की आर्थिक विकास दर 2015 में घटकर 6.9% रह जाएगी । इसलिए केंद्र सरकार के लिए नीतिगत सुधार करना आसान हो सकता है । अगले साल के अंत में बिहार में चुनाव होंगे, जहां भाजपा जदयू से सत्ता छीनने की कोशिश करेगी । वैसे आर्थिक क्षेत्र में नीतिगत सुधार की शुरुआत सरकार ने विगत 18 अक्तूबर से ही कर दी । उसने डीज़ल को डीकंट्रोल कर दिया और गैसे के दाम बढ़ाए । इससे ऊर्जा विस्तार और उत्पादन विस्तार में मदद



मिलेगी । भाजपा के एक बड़े नेता के अनुसार, आने वाले दिनों में और बड़े सुधारों का ऐलान हो सकता है । इस बाबत मोदी मंत्रिमंडल में फेरबदल और विस्तार की अधिक संभावना है ।

नीति-निर्माण से जुड़े एक बड़े अफ़सर का कहना है कि 'सरकार ने साफ़ संकेत दिए हैं कि वह 'पेंडिंग' सुधारों पर आगे बढ़ेगी। जहां भी सुधार की ज़रूरत होगी, उसे किया जाएगा और हम इसके लिए तैयार हैं । इस मामले में बार्कलेज कैपिटल के सिद्धार्थ सान्याल ने कहा, '2015 के अंत तक सरकार के पास काफ़ी काम करने की गुंजाइश है । इस दौरान सिर्फ़ दो राज्यों (जम्मू-कश्मीर और झारखंड) में विधानसभा चुनाव होने हैं ।'

1991 के आर्थिक उदारीकरण ने देश को कुछ नुक़सानों के साथ आर्थिक रूप से मज़बूत किया । वर्तमान मोदी सरकार भी आर्थिक सुधार की दिशा में तेज़ी के साथ बढ़ रही है । वर्ल्ड बैंक ने कहा है कि 'मोदी डिविडेंड' यानी नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में नयी सरकार बनने से सेंटिमेंट में आये सुधार के कारण भारत का आर्थिक विकास साल 2015-16 में बढ़कर 6.4% हो सकता है ।

पिछले हफ़्ते नौकरशाही में भी बड़े बदलाव हुए थे । वित्त मंत्रालय में इस बदलाव के बाद जो नई टीम बनी है, उससे आर्थिक सुधार तेज़ किए जाने के संकेत मिलते हैं । नयी सरकार ने अरविंद सुब्रमण्यन को नया प्रमुख आर्थिक सलाहकार बनाया है, जबकि राजीव महर्षि को आर्थिक मामलों के सचिव का पद दिया गया है ।

विज्ञापनों का मायाजाल

थोड़ी हक़ीक़त, पूरा फ़साना

■ सी॰ के॰ रहमानी

यूं तो दुनिया में सबसे ज़्यादा तीन 'एस' बिकते हैं । सेक्स यानी काम, सेंसेशन यानी सनसनी और सोशियोलाइसेशन यानी सामाजिकीकरण । भारतीय संदर्भ में आप ब्यूटी यानी सुन्दरता को जोड़ना न भूलें । हमारे देश में सेक्स, सनसनी और समाजीकरण के बराबर ही सुन्दरता, जवान-ख़ूबसूरत, दिखने के फार्मूले, दवाएं और उपकरण/यंत्र ख़ूब बिकते हैं । यही कारण है कि सुन्दरता बरक़रार रखने या खोई हुई जवानी पुन: प्राप्त करने के अख़बार, टी॰वी॰ चैनलों में विज्ञापनों की भरमार रहती है । सुन्दरता बनाये रखने का कारोबार अब सौ-दो सौ करोड़ का नहीं बल्कि कई हज़ार करोड़ रुपये सालाना का हो चुका है । यही कारण है कि बड़ी और नामी गिरामी कंपनियां चेहरे को सुन्दर बनाये रखने के लिए क्रीम, साबुन, बालों को सुन्दर काला और घना बनाने के लिए तेल, यौन शक्ति बढ़ाने वाले कैप्सूल/तेल बना रही हैं ।

भारतीय समाज में तो काले रंग का हमेशा ही मज़ाक़ उड़ाया गया है । सांवले रंग पर टीका टिप्पणी आम बात है । सांवले रंग पर सूरदास ने बहुत पहले ही कृष्ण को लेकर समाज की सोच को उजागर कर दिया है । सूरदास ने दाऊ जी यानी कृष्ण के बड़े भाई बलदाऊ के माध्यम से कृष्ण का बचपन में मज़ाक़ उड़ाते दिखाया है । इसमें कृष्ण यशोदा से शिकायत करते हैं कि 'मैया मोहे दाऊ बहुत खिजायो... 'गोरे नंद जसोदा गोरी, तू कत स्याम सरीर, चुटकी दै-दै हंसे ग्वाल सब, सिखै देत बलबीर ।' (नोट : सूरदास के पदों में इसी भाषा का प्रयोग है)। इसी सामाजिक भय का दोहन करने के लिए देसी-विदेशी कंपनियों ने जो मायाजाल फैलाया, वह सफलता के नित नये पादान छू रहा है । एक विज्ञापन में एक युवती कहती है, 'मुझे देखने के लिए लड़के वाले आते थे लेकिन मेरा रंग देखकर मुझे पसन्द नहीं करते थे । जब मैंने यह क्रीम लगायी तो आठ दिन में ही मेरा रंग साफ़ हो गया और इस बार लड़के वालों ने मुझे देखते ही पसन्द कर लिया ।' एक अन्य विज्ञापन पर ग़ौर कीजिए । एक युवती बताती है 'मैं नौकरी के लिए जहां जाती वहां मैं इंटरव्यू में फेल हो जाती, मेरे अन्दर आत्मविश्वास नहीं था फिर मैंने अमुक क्रीम या साबुन लगाया तो मेरा चेहरा खिल गया । मेरे अन्दर आत्मविश्वास आ गया और मैं इंटरव्यू में पास हो गयी और मुझे नौकरी मिल गयी । एक विज्ञापन में एक युवक नौकरी मांगने जाता है उसके कहने का आशय होता है कि पढ़ाई-लिखाई और प्रतिभा से ज़्यादा ज़रूरी है आपका चेहरा गोरा और सुन्दर होना और यह काम अमुक क्रीम करती है ।

एक अन्य विज्ञापन देखें : 'मैं अपनी उम्र से दोगुनी लगती थी । मुझे लोग आंटी कहने लगे । तब मैंने किसी की सलाह पर कैप्सूल/दवा/उपकरण लिया या बॉडी को स्लिम करने वाला अमुक क्लीनिक ज्वाइन किया । अब मैं अपनी उम्र से बहुत कम लगती हूं । मुझ में ग़ज़ब का आत्मविश्वास आ गया है । अब मुझे कोई आंटी नहीं कहता ।'

एक युवक के सिर पर बाल कम हैं । वह बस में सफ़र कर रहा है । इसी बीच एक युवती आती है और उसे अंकल कहकर संबोधित करती है । वह शर्म और आत्मग्लानि से मरा जा रहा है । अगले सीन में वह एक तेल इस्तेमाल करता है और सिर पर ग़ज़ब के बाल आ जाते हैं । अब वह युवती उससे अंकल नहीं कहती बल्कि उससे सटकर खड़ी हो मुस्कराने लगती है । अब उस युवक में ग़ज़ब का आत्मविश्वास है । इसके बाद उस उत्पाद का नाम और फ़ोटो आ जाता है ।

उपरोक्त सभी विज्ञापनों में सामाजिक उपेक्षा और ख़ुद को दूसरों के सामने कमतर दिखने का भय मौजूद है । यह मानवीय स्वभाव है कि वह दूसरों से किसी भी चीज़ में कम नहीं दिखना चाहता । किसी युवती की शादी नहीं हो रही

है, किसी की नौकरी नहीं लग पा रही हो और किसी को आंटी कहने का भय सता रहा हो, हर समस्या को उड़नछू करने के फ़ौरी नुस्ख़े इन विज्ञापन कंपनियों के स्लोगन में मौजूद हैं । भला आप वह साबुन क्यों नहीं ख़रीदेंगे जिससे आपका बच्चा कीटाणुओं से हंड्रेड पर्सेंट सुरक्षित हो सकता हो । आप उस उत्पाद को क्यों नहीं ख़रीदेंगे जो आपके बच्चे को जीत की तैयारी करा दे ।

महानगरों से लेकर शहर क़स्बों और गांवों के लोग सांवलापन और सेक्स संबंधी समस्याएं दूर करने के लिए दौड़े जा रहे हैं । हर कोई सब को पीछे पछाड़ कर आगे आने के लिए वह उत्पाद ख़रीद रहे हैं, जो टी॰वी॰ या अख़बार बताते हैं, इनमें युवतियां/महिलाएं और युवक सब शामिल हैं ।

सिर पर बाल उगाने के लिए एक कंपनी 75 हज़ार रुपये में तीन हज़ार बाल सिर पर टांक देने का दावा कर रही है । यानी एक बाल की क़ीमत 250 रुपये । जवान और घने बाल दिखने के लिए लोग इतनी बड़ी रक़म लेकर दुकान पर पहुंच भी रहे होंगे ।

युवकों को गोरा बनाने के लिए किंग ख़ान यानी शाहरुख़ ख़ान एक क्रीम बेच रहे हैं । क़ीमत इतनी कम रखी है कि मज़दूर भी आसानी से ख़रीद ले, अगर ज़्यादा भी होती तो भी बिकती क्योंकि मामला सामाजिक उपेक्षा का है । यह अलग बात है कि अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा को शायद इस क्रीम के बारे में पता नहीं होगा वरना वे तो क्रीम क्या, पूरी कंपनी ही ख़रीद लेते ।

पहले विज्ञापन का मतलब होता था किसी भी उत्पाद की सही जानकारी देना । उसमें झूठ का समावेश आटे में नमक जैसा होता था, लेकिन आज सिर्फ़ नमक ही नमक है, यानी विज्ञापनों में थोड़ी हक़ीक़त पूरा फ़साना है । इस कारण किसी भी उत्पाद की गुणवत्ता और विश्वसनीयता पर सवाल खड़ा होना स्वाभाविक है । आज कंप्यूटर और एनीमेशन के माध्यम से किसी भी उत्पाद को जन्नत की चीज़ बना दिया जाता है । आधुनिक युग में मिट्टी को सोना बताने की कला विज्ञापन में मौजूद है । इसलिए असरदार विज्ञापन वह माना जाता है जो आपको बिना ज़रूरत उत्पाद ख़रीदने पर विवश कर दे और उसका स्लोगन लोगों की जवान पर आसानी से चढ़ जाए । दिल यह कहने लगे कि 'चलो इसे ख़रीद ही लेते हैं बाद में काम ही आ जाएगा ।'

विज्ञापन हमें ऐसे कल्पना लोक में ले जाते हैं जिससे वास्तविक होने का एहसास होने लगता है । यही कारण है कि हमें क्या खाना है क्या पहनना है क्या ओढ़ना है क्या बिछाना है, कौन-सा टूथपेस्ट इस्तेमाल करना है, कौन-सा टी॰वी॰ या मोबाइल ख़रीदना है यह सब टी॰वी॰ के विज्ञापन तय करते हैं । यानी हमारी ज़िन्दगी की रहन-सहन बाज़ार तय करता है । यह कैसी विडंबना है कि विज्ञापन अतिशयोक्ति से परिपूर्ण होते हुए भी आदमी को आसानी से अपनी गिरफ़्त में ले लेते हैं । जब कोई साबुन/तेल/खाद्य पदार्थ या कोई वस्तु ख़रीदता है तो वह उससे नहाने, लगाने, खाने या इस्तेमाल भर के लिए नहीं ख़रीद रहा होता बल्कि उस उत्पाद में वह ख़ुद को हीरो-हीरोइन की जगह रखकर देख रहा होता है । एक विज्ञापन पढ़कर मेरी बड़ी बहू मोटापा घटाने के लिए एक क्लीनिक जा पहुंची । उसने सबसे कम क़ीमत दस हज़ार वाला पैकेज लिया जिसमें दस किलो वज़न कम करने का दावा किया गया था । वह एक महीना दौड़ती रही । तीन हज़ार रुपये किराये में लगे वह अलग और नतीजा सिफ़र । अब वह फिर एक हकीम के पास जा रही हैं । वह हकीम बहुत चालाकी से एक बार में तीन हज़ार की दवा पकड़ा देता है । बहू को लगता है कि चलो तीन हज़ार में वज़न कम हो जाएगा ।

सवाल यह है कि जब फ़ायदा नहीं होता तो ये दुकानें चल क्यों रही हैं ? जवाब कोई मुश्किल नहीं है । जब लोग ठगे जाते हैं तो वह यह किसी को नहीं बताते, सोचते हैं इससे जग हंसाई होगी । लोग कहेंगे मूरख, जानता नहीं था कि यह सब धोखा है । कहीं क्रीम से कोई गोरा बन जाता है या किसी तेल/क्रीम या कैप्सूल से लंबाई बढ़ जाती है ? अब बताइए कौन होगा जो जगह-जगह लूटने के बाद लोगों के बीच हंसी का पात्र भी बने ।

इस संबंध में वरिष्ठ मनोचिकित्सक, दिल्ली सायकिएट्रिस्ट के पूर्व अध्यक्ष व ई॰एस॰आई॰ अस्पताल के मनोचिकित्सा विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ॰ टी॰पी॰ जिंदल कहते हैं 'अगर कोई क्रीम गोरा कर सकती तो साउथ अफ़्रीका या दक्षिण भारत में एक भी आदमी काला या सांवला नहीं मिलता । अगर कोई दवा क़द बढ़ा सकती तो चीन में कोई भी आदमी छोटे क़द का नहीं होता । वह दवा क्या पूरी कंपनी ही ख़रीद लेते । वे कहते हैं कि कुछ क्रीम कुछ घंटे तक अपनी चमक दिखाती हैं लेकिन वह गोरा नहीं कर सकती । कुछ घंटे बाद क्रीम का असर ख़त्म हो जाता है और आपकी त्वचा पूर्व की स्थिति में आ जाती है । वह भी विज्ञापनों के झूठ के आगे घुटने टेकने लगते हैं ।

राष्ट्रीय दायित्व है प्रतिभा की प्रतिष्ठा करना

■ सीताराम गुप्ता

"प्रतिभा एक चौथाई व्यक्तित्व का निर्माण करती है, शेष की पूर्ति प्रतिष्ठा द्वारा होती है ।" यह संवाद मोहन राकेश के चर्चित नाटक "आषाढ़ का एक दिन" से उद्घृत किया गया है । कालिदास जो कि एक अच्छे कवि हैं राज दरबार में जाने के इच्छुक नहीं हैं । उपरोक्त संवाद में उनके मामा उन्हें समझाते हुए कहते हैं कि व्यक्ति की पूर्णता सिर्फ़ प्रतिभा से नहीं होती । व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिष्ठा भी अनिवार्य है ।

प्रश्न उठता है कि क्या एक प्रतिभाशाली व्यक्ति का प्रतिष्ठित होना वास्तव में अनिवार्य है । क्या प्रतिभा स्वयं में प्रतिष्ठा नहीं है । तर्क-वितर्क द्वारा तो हम विषय को कहीं भी तोड़ सकते हैं । लेकिन सही बात यह है कि दोनों का अपना-अपना महत्व है । दोनों की अपनी-अपनी प्रासंगिकता है । इस जगत में कोई भी दो स्थितियां या घटनाएं एक-दूसरे की विरोधी नहीं होतीं अपितु इन दोनों से किसी स्थिति विशेष का निर्माण होता है । वे एक-दूसरे की पूरक हो जाती हैं । आवश्यकता है तो इनमें समन्वय की, देशकालानुरूप इनका उचित अनुपात निश्चित करने की ।

प्रश्न उठता है कि क्या एक प्रतिभाशाली व्यक्ति का प्रतिष्ठित होना वास्तव में अनिवार्य है । क्या प्रतिभा स्वयं में प्रतिष्ठा नहीं है । तर्क-वितर्क द्वारा तो हम विषय को कहीं भी तोड़ सकते हैं । लेकिन सही बात यह है कि दोनों का अपना-अपना महत्व है ।

प्रतिभा तो एक सहज गुण है जो सब में विद्यमान है । कोई किसी क्षेत्र में आगे है तो कोई अन्य किसी क्षेत्र में लेकिन जो मनुष्य जिस क्षेत्र में आगे है उसकी इस योग्यता को बनाए रखना और इसका निरंतर विकास करना भी अनिवार्य है । किसी भी योग्यता, शिल्प अथवा कला को जीवित रखने तथा उसके निरंतर विकास के लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है । व्यक्ति अभ्यास करना या उत्पादन करना कब छोड़ता है ? जब उसकी कला अथवा उसके द्वारा निर्मित माल की डिमांड नहीं होती । बाज़ार में किसी उत्पाद की मांग ही नहीं होगी तो उसके उत्पादन का क्या लाभ ? एक कलाकार, संगीतकार, गायक अथवा कवि को सुनने वाले ही न हों तो वह किस लिए अपनी कला का विकास करेंगे ? रसिक श्रोता अथवा कला मर्मज्ञ जो कलाकारों के कार्य को देख-सुनकर उनको प्रोत्साहित करते हैं तथा उनको प्रतिष्ठित करते हैं नहीं होंगे तो कलाएं ही समाप्त हो जाएंगी । जो समाज रुचिभ्रष्ट हो जाएगा वहां साहित्य, संगीत और विभिन्न कलाओं का स्तर गिरता चला जाएगा । प्रतिभाशाली व्यक्ति अपनी कलाओं के उच्चादर्श से तथा समाज व प्रबुद्ध दर्शक या श्रोता अपनी स्वीकृति से उनको प्रतिष्ठित कर इस स्तर को बनाए रखते हैं । इस प्रकार प्रतिभा की मान्यता तथा प्रतिष्ठा दोनों अनिवार्य हैं ।

ब्रेनड्रेन हमारे देश में एक बहुत बड़ी समस्या रही है । हमारे देश के अनेक प्रतिभाशाली वैज्ञानिक, डॉक्टर, इंजीनियर, कलाकार, उद्यमी तथा व्यावसायी व अन्य अनेक पेशों के लोग दूसरे विकसित देशों में जाकर बस गये । कारण यही था कि उनको अपने देश में सुविधाएं और उचित पारिश्रमिक तो दूर उनकी प्रतिभा तथा उनके कार्य के लिए उचित प्रतिष्ठा तक नहीं मिल सकी । विदेशों में उनको सुविधाएं तथा पैसों के अतिरिक्त पर्याप्त प्रतिष्ठा भी मिली । उचित संयोग और अनुकूल परिस्थितियों के कारण अनेक भारतीयों ने नोबेल पुरस्कार तक प्राप्त किये ।

जो लोग देश सेवा की भावना के कारण विदेशों में

जाकर नहीं बसे वे यद्यपि बाहर जाकर बसने वालों से उत्तम कोटि के हैं लेकिन क्योंकि उनके काम को उचित महत्व नहीं दिया गया, उनका सही मूल्यांकन नहीं किया गया, अथवा उनसे कम योग्यता या प्रतिभा वाले लोगों को उनके मुक़ाबले अधिक सम्मान दिया गया और उनकी उपेक्षा की गयी इसलिए वे कुंठित हो गये । उनकी कार्य करने की क्षमता भी प्रभावित हुई और आगे बढ़ने, कुछ नया करने के लिए प्रोत्साहन भी नहीं मिला । प्रतिष्ठा वास्तव में प्रतिभा का उचित मूल्यांकन और मान्यता ही नहीं अपितु प्रतिभा का उत्तरोत्तर विकास करने में भी सहायक है ।

एक कहावत है कि जंगल में मोर नाचा किसने देखा ? यदि आप में किसी भी क्षेत्र में प्रतिभा है और समाज या राष्ट्र उससे लाभांवित नहीं हो पाता तो उसका क्या लाभ ? आपकी प्रतिभा से पूरा समाज, पूरा राष्ट्र लाभांवित होना चाहिए और यह तभी संभव है जब आपकी प्रतिभा प्रकाश में आये । प्रकाशित होना उपयोगी होना है । मेघाच्छादित व्योम के कारण जब सूर्य का प्रकाश और ऊष्मा ज़मीन तक नहीं पहुंच पाते तो सूर्य में प्रकाश और ऊष्मा होने के बावजूद उस समय वह अनुपयोगी हो जाता है ।

जो लोग देश सेवा की भावना के कारण विदेशों में जाकर नहीं बसे वे यद्यपि बाहर जाकर बसने वालों से उत्तम कोटि के हैं लेकिन क्योंकि उनके काम को उचित महत्व नहीं दिया गया, उनका सही मूल्यांकन नहीं किया गया, अथवा उनसे कम योग्यता या प्रतिभा वाले लोगों को उनके मुक़ाबले अधिक सम्मान दिया गया और उनकी उपेक्षा की गयी इसलिए वे कुंठित हो गये । उनकी कार्य करने की क्षमता भी प्रभावित हुई और आगे बढ़ने, कुछ नया करने के लिए प्रोत्साहन भी नहीं मिला । प्रतिष्ठा वास्तव में प्रतिभा का उचित मूल्यांकन और मान्यता ही नहीं अपितु प्रतिभा का उत्तरोत्तर विकास करने में भी सहायक है ।

शेख़ सादी कहते हैं कि 'जो सीखता है मगर अपनी विद्या का उपयोग नहीं करता, वह किताबों से लदा टट्टू है, भारवाहक है ।' एक बहुत अच्छा कवि और गीतकार है लेकिन यदि वह अपनी रचनाओं का प्रकाशन या प्रचार-प्रसार अथवा प्रसारण नहीं कराएगा तो उसकी रचनाओं का रसास्वादन कैसे संभव होगा ? साथ ही उसकी रचनाओं के उचित मूल्यांकन और मान्यता के अभाव में उसे और बेहतर तथा निरंतर लिखने की प्रेरणा कैसे मिलेगी । यदि कोई समाजशास्त्री अथवा अर्थशास्त्री समाज के विकास का कोई अच्छा-सा मॉडल तैयार करता है अथवा कोई सिद्धांत प्रतिपादित करता है तो उसके क्रियान्वयन द्वारा ही समाज या राष्ट्र लाभांवित हो सकता है और क्रियान्वयन तब तक संभव नहीं है जब तक मॉडल हमारे सम्मुख न हो अर्थात सिद्धांत का प्रकाशन या मॉडल का प्रस्तुतीकरण भी अनिवार्य है । हमें अपनी प्रतिभा को छिपाने का प्रयास नहीं करना चाहिए । छिपाने से वह कमतर होती चली जाती है और प्रकाशित होने से विकसित होती चली जाती है तथा उसमें अपेक्षित सुधार भी किया जा सकता है ।

तो क्या प्रतिभाशाली व्यक्ति को प्रतिष्ठित होने का जुगाड़ करना चाहिए ? बिल्कुल नहीं । लेकिन यदि उसे अपनी योग्यता, कला अथवा सर्जनात्मकता को प्रदर्शित अथवा प्रकाशित करने का अवसर मिले तो इसका लाभ उठाना चाहिए । अपनी प्रतिभा को दिखाने का अवसर हाथ से न जाने दें । इसके लिए आपको प्रायोजक खोजने की आवश्यकता नहीं है । यदि कोई आपको खोज ले, आपको प्रतिष्ठित करे और आपको लगे कि मेरा 'उपयोग' नहीं किया जा रहा है और इससे मेरी प्रतिभा का आगे विकास भी होगा जिसमें मैं स्वयं अपनी, समाज की तथा राष्ट्र की अधिकाधिक सेवा कर पाऊंगा तो पीछे न हटें । अवसर के बिना योग्यता का क्या लाभ ? योग्यता तो एक चेक के समान है और जब तक इसे बैंक में प्रस्तुत कर भुनाया नहीं जाता इसकी कोई क़ीमत नहीं । चेक को संभाल कर रखना भी निरी मूर्खता है क्योंकि एक दिन यह आउटडेटेड हो जाता है अत: समय पर भुनाने में ही समझदारी है ।

हम अपना स्वयं का सही मूल्यांकन नहीं कर सकते अत: जब भी अन्य कोई हमारा मूल्यांकन करे उसे महत्व दीजिए । कई बार तो दूसरों द्वारा किये गये मूल्यांकन और प्रदान की गयी प्रतिष्ठा का इतना प्रभाव होता है कि उन्होंने हमारे विषय में जो कहा है वह हमें पूर्ण करना ही पड़ता है । कोई भी व्यक्ति किसी के विश्वास को तोड़ना नहीं चाहता । जब आप में कोई विश्वास व्यक्त करता है तो आपको उसके विश्वास के अनुरूप होना ही पड़ेगा । प्रतिष्ठा द्वारा आपके स्वयं के विश्वास का स्तर ऊंचा होगा और जैसा आपके विश्वास का स्तर होगा उसी के अनुरूप प्राप्ति भी । विश्वास से विश्वास के स्तर में वृद्धि तथा मान्यता व प्रतिष्ठा से प्रतिभा के स्तर में वृद्धि होगी ही । क्योंकि स्वयं के मूल्यांकन की अपेक्षा दूसरों का मूल्यांकन करना अपेक्षाकृत सरल होता है अत: जब भी अवसर मिले प्रतिभाओं का सही मूल्यांकन व उनको प्रतिष्ठित करने का प्रयास अवश्य करें । यह समाज के हित में है और आज इसकी आवश्यकता भी है ।

एक चीज़ और महत्वपूर्ण है और वह यह कि हर क्षेत्र में हर प्रतिभा को मान्यता मिले, उसको प्रतिष्ठित किया जाए लेकिन आज इसके विपरीत हो रहा है । हर क्षेत्र में प्रतिभाओं की उपेक्षा हो रही है तथा जो लोग डिज़र्व नहीं करते उनको बड़े-बड़े सम्मान और पुरस्कार दिये जा रहे हैं । साहित्य संस्कृति और कला से लेकर ज्ञान-विज्ञान और अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों में यही नीति व्याप्त है । महत्वपूर्ण पदों पर आसीन लोग अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए अयोग्य लोगों को बड़े से बड़े पुरस्कार दिलाने का जुगाड़ कर लेते हैं । रही सही कसर पैसा पूरी कर देता है । विश्वविद्यालयों की डिग्रियों की तरह पैसे के बल पर लोग बड़े-बड़े पुरस्कार ख़रीद लेते हैं । तीस-चालीस हज़ार रुपये का पुरस्कार पाने के लिए लोग लाखों रुपये फूंक देते हैं । बड़े-बड़े पुरस्कारों की गरिमा समाप्त हो रही है । अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में तो ये स्थिति और भी भयावह है । अंग्रेज़ी की हिमायत और हिन्दी तथा दूसरी भारतीय भाषाओं की उपेक्षा तो सामान्य बात है ही लेकिन पूर्व और पश्चिम में जो भेदभाव किया जाता है वह भी किसी से छिपा नहीं है ।

तुलसीदास ने ठीक ही कहा है कि सब कुछ सूख जाने पर बाद में वर्षा का क्या लाभ ? आज अनेक प्रतिभाएं इस कुचक्र के कारण असमय काल-कवलित हो रही हैं । उनको विकसित होने का अवसर ही नहीं मिलता । सही अवसर प्रदान करना भी प्रतिष्ठित करने की दिशा में पहला क़दम है लेकिन आज तो 'एक अनार और सौ बीमार' वाली कहावत चरितार्थ हो रही है । ऊपर से बंदरबांट चल रही है । देसी गुलाबों को पनपने और फूलने-फलने का अवसर दीजिए फिर देखिए कैसा अन्दर-बाहर सब सुवासित कर देंगे । लेकिन इसके विपरीत हो रहा है । जिधर देखो अंग्रेज़ी गुलाब फल-फूल रहे हैं । बस रंग ही चटख़ है, ख़ुशबू तो ऐसे गयी जैसे गधे के सिर से सींग । 'चकबस्त' का ये शेर याद आ रहा है–

रंग है जिनमें मगर बू-ए-वफ़ा कुछ भी नहीं,
ऐसे फूलों से न घर अपना सजाना हरगिज़ ।

समर्थ को प्रतिष्ठित किया जा रहा है । एक और प्रवृत्ति उभर रही है "मन तुरा क़ाज़ी बगोयम तू मुरा हाजी बगो" अर्थात एक-दूसरे को परस्पर प्रतिष्ठित करना । "परस्परं प्रशंसन्ति अहो रूपम अहो ध्वनि: ।" नमस्कार ! डॉक्टर साहब आप कैसे हैं ? मैं ठीक हूं, धन्यवाद ! प्रोफ़ेसर साहब आप कैसे हैं ? एक-दूसरे का सम्मान करना बुरा नहीं अच्छा है लेकिन यदि आप न तो प्रोफ़ेसर हैं और न डॉक्टर ही हैं तब ? कुछ भी हो प्रतिभा उपेक्षित है । प्रतिभा का साधारणीकरण हो रहा है । हीरों को कांच के टुकड़ों के ढेर में मिलाकर उन जैसा बताया जा रहा है । हीरों को दरकिनार कर कांच के टुकड़ों को सजाया जा रहा है । आज आवश्यकता है हीरों की तलाश करके उन्हें पुन: तराशने की और बहुमूल्य धातु में जड़ने की ताकि उनकी सही पहचान में ग़लती न हो । यही व्यक्तित्व का विकास है और व्यक्तियों के माध्यम से राष्ट्र का विकास भी ।

हमेशा हर जगह अहले-सियासत क़त्ल करते हैं,
हुनर को सर्दमेहरी से वफ़ा को ज़हरख़न्दी से ।

For Information On
City Shops, Roads, Restaurants, Magazines, Schools and much more.
Syed Shahbaz Alam Barvi
Business Development Director (09049185093)
Visit us:
www.shoppinglanes.com

पत्रकार और प्रधानमंत्री : परस्पर डरें क्यों ?

❖ डॉ॰ वेदप्रताप वैदिक

प्रधानमंत्री बनने के बाद पहली बार नरेन्द्र मोदी ने पत्रकारों पर मेहरबानी की । उन्हें भाजपा मुख्यालय में बुलाया । मेहमानों का स्वागत करने की हमारी परंपरा है लेकिन मेहमान पत्रकारों ने घंटे-डेढ़ घंटे प्रतीक्षा की और वहां बैठकर मेज़बान प्रधानमंत्री का स्वागत किया ! प्रधानमंत्री ने पत्रकारों को बताया कि कभी भाजपा कार्यालय में वे कैसे पत्रकारों के लिए कुर्सी जमवाया करते थे और उनका इन्तिज़ार किया करते थे । अब पत्रकारों से अपना इन्तिज़ार कराकर उन्होंने अपना पुराना हिसाब चुकता कर लिया !

उन्होंने पत्रकारों से क्या बातचीत की, कुछ पता नहीं चला । हां, यह ज़रूर पता चला कि वे पत्रकारों के साथ, ख़ास तौर से रिपोर्टरों के साथ बातचीत करने की इच्छा रखते हैं ताकि उन्हें सीधा लाभ हो सके । उन्होंने कहा कि इस प्रक्रिया के द्वारा उन्हें गुजरात में काफ़ी लाभ मिला था । उन्होंने पत्रकारों के सामने संक्षिप्त-सा भाषण दिया और फिर वे सबसे मिलने-जुलने लगे । न कोई सवाल-जवाब हुए न कोई विचार-विमर्श हुआ । यदि इसी तरह का पत्रकार मिलन भविष्य में भी होता रहा तो वह निरर्थक ही होगा । उससे न तो पत्रकारों का कोई लाभ होगा न प्रधानमंत्री का । ऐसा एकतरफ़ा भाषण तो टी॰वी॰ चैनल दिखा ही देते हैं । उसके लिए प्रधानमंत्री-निवास या भाजपा कार्यालय जाकर पत्रकार कई घंटे क्यों ख़राब करेंगे ? नौसिखिए रिपोर्टर शायद ऐसे मिलन में चले भी जाएं लेकिन मंजे हुए पत्रकार इसे फ़िज़ूल की कसरत ही मानेंगे ।

उन्होंने पत्रकारों के सामने संक्षिप्त-सा भाषण दिया और फिर वे सबसे मिलने-जुलने लगे । न कोई सवाल-जवाब हुए न कोई विचार-विमर्श हुआ । यदि इसी तरह का पत्रकार मिलन भविष्य में भी होता रहा तो वह निरर्थक ही होगा । उससे न तो पत्रकारों का कोई लाभ होगा न प्रधानमंत्री का । ऐसा एकतरफ़ा भाषण तो टी॰वी॰ चैनल दिखा ही देते हैं । उसके लिए प्रधानमंत्री-निवास या भाजपा कार्यालय जाकर पत्रकार कई घंटे क्यों ख़राब करेंगे ? नौसिखिए रिपोर्टर शायद ऐसे मिलन में चले भी जाएं लेकिन मंजे हुए पत्रकार इसे फ़िज़ूल की कसरत ही मानेंगे ।

नरेन्द्र मोदी पत्रकारों का सामना करने से इसलिए भी बचते रहे हैं कि पहले पत्रकारों ने उनके साथ घनघोर अन्याय किया है । लेकिन यह भी सत्य है कि उनके प्रधानमंत्री बनते ही वे 'सेकुलर' पत्रकार अब घुटनों के बल रेंग रहे हैं । अब उनसे डरने का कोई कारण नहीं है । वे खुद डरे हुए हैं । इसीलिए अब हर माह मोदी को खुले पत्रकार-सम्मेलन करना चाहिए । सवालों के डटकर जवाब देने चाहिए । उनकी सरकार के पास छिपाने के लिए कुछ नहीं है । यदि वे पत्रकारों से वैसी ही दूरी बनाकर रखेंगे, जैसी कि अभी तक बनाए हुए थे, तो वे अपना नुक़सान तो करेंगे ही, भारतीय लोकतंत्र की भी अवहेलना करेंगे ।

कुछ पत्रकारों ने कहा कि मोदी किसी के साथ लिहाज़दारी नहीं करते । मैं समझता हूं कि वे बिल्कुल ठीक करते हैं । पत्रकारों को भी किसी प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति की लिहाज़दारी नहीं करनी चाहिए । उन्हें सच बोलना और लिखना चाहिए । किसी भी भय या लालच के सामने डिगना नहीं चाहिए । यदि कार्यपालिका को बड़े दमख़म के साथ चला रहे हैं तो पत्रकारों को चाहिए कि वे ख़बरपालिका को और भी ज़्यादा दमख़म के साथ चलाएं । यदि विधानपालिका (संसद) और न्यायपालिका (अदालतें) कमज़ोर पड़ जाएं तो कुछ फ़र्क़ ज़रूर पड़ता है, लेकिन यदि ख़बरपालिका कमज़ोर हो गयी तो लोकतंत्र को धाराशाई होने से कोई नहीं रोक सकता ।

हरी सब्ज़ियों से मधुमेह का उपचार

मधुमेह यानी डायबिटीज़ ऐसा रोग है, जो शरीर में शर्करा, की अतिरिक्त दोषपूर्ण मात्रा की उपस्थिति से होता है । मधुमेह की स्थिति में शरीर में स्थिति इन्सुलिन नामक हारमोन की कमी हो जाती है । इंसुलिन वह इंजाइम है, जो हमारे शरीर में कार्बोहाइड्रेट व प्रोटीन को पचाने का काम करता है । यह एक तरह से वंशानुगत रोग भी है जो आने वाली पीढ़ियों को भी हो सकता है ।

लक्षण : मधुमेह के रोगी को ज़्यादा भूख व प्यास महसूस होती है, तथापि उसका शरीर निर्बल-सा रहता है । शारीरिक एवं मानसिक तौर पर जल्दी थकना, चेहरा पीला पड़ना, रक्त की कमी, क़ब्ज़, जनेन्द्रिय के आस-पास खुजली होना तथा आमतौर पर कमज़ोरी महसूस करना इसके प्रारंभिक लक्षण हैं । मधुमेह के रोगी का प्रथम एवं प्रमुख लक्षण है । अत्यधिक मूत्र का आना व बार-बार, विशेषत: रात में ।

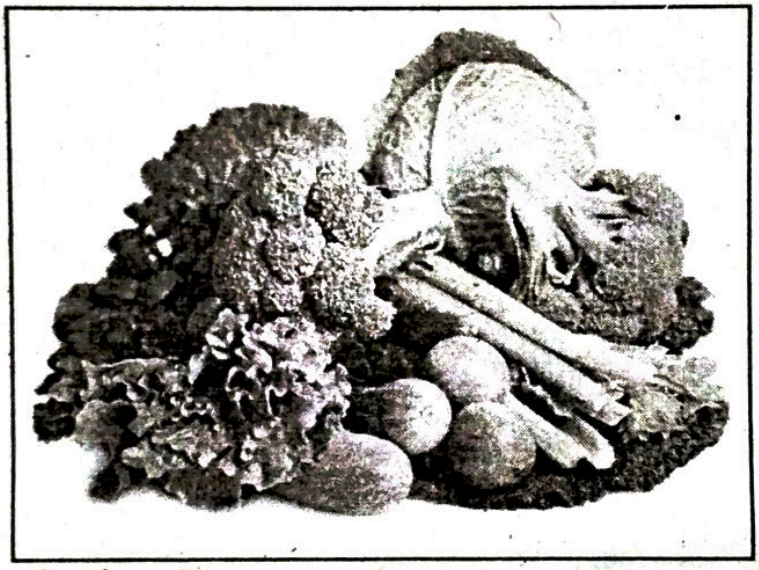

कारण : ज़्यादा खाना खाना, मोटापा, अत्यधिक मांसाहार, मीठी चीज़ें चाकलेट, मिठाई इत्यादि, व्यायाम का अभाव शारीरिक श्रम का अभाव, दुख, चिंता एवं अत्यधिक उत्सुकता, पारिवारिक अनुवांशिकता इसके प्रमुख कारण हैं । ज़्यादा खाने-से प्रेंक्रियास नामक ग्रंथि के कारण इस पर ज़ोर पड़ता है, जिसके प्राकृतिक प्रक्रिया व चय-पचय शक्ति निष्क्रिय हो जाती है ।

उपचार : आहार की इसमें मुख्य भूमिका होती है । मधुमेह के रोगी को गरिष्ठ भोजन जैसे भुना व पका, तैलीय वस्तुएं, मैदे से बने आहार, मास, मदिरा का सेवन नहीं करना चाहिए । अगर शर्करा की मात्रा ज़्यादा है तो अन्नाहार न करें उसके स्थान पर दोनों समय फलाहार करें । हरी सब्ज़ियों का रस, सूप दोनों समय लगभग 15 दिन तक पीयें । मधुमेह के रोगी हर फल का सेवन कर सकते हैं, क्योंकि हरेक के अन्दर (शुगर फ्रयुक्टोस) होता है, जिससे पाचन एवं चय-पचय प्रक्रिया में इन्सुलिन की आवश्यकता नहीं होती है ।

आहार : रोगी की पूरे दिन की आहार प्रक्रिया निम्न प्रकार होनी चाहिए–सुबह उठने पर एक गिलास नींबू, शहद, पानी (शहद शुद्ध हो तो इसमें शर्करा की मात्रा नहीं होती) मिलाकर लें, नास्ते में कोई भी फलाहार, मात्रा दो सौ ग्राम, किंतु केला न लें । हरी सब्ज़ी का रस, गाय का शुद्ध व ताज़ा दूध हल्का उबला, बिना पानी के पीयें ।

दोपहर का भोजन : उबली हुई, हल्की पकी तरकारी, जैसे–टमाटर, पालक, सलगम, शतावरी, मशरूम, दो या तीन चपाती, साथ में मट्ठा । सलाद में पत्ता गोभी व मौसमी का प्रयोग करें ।

सायंकाल : हरी सब्ज़ी का रस अथवा गाजर, टमाटर, अदरक, धनिया, चुकन्दर का मिश्रित रस ।

रात्रि भोजन : अधिक मात्रा में सलाद, भोजन में लगभग 70 प्रतिशत, इसमें कच्ची सब्ज़ियों का मिश्रण सदैव गुणकारी है । इसके बाद कोई गर्म आहार जैसे टमाटर का सूप इत्यादि ले सकते हैं । रात्रि का भोजन अपेक्षाकृत हल्का ही होना चाहिए । भूख से कम ही खाएं ।

● डॉ॰ राजा नरसानी

सूचना

मेरठ में 'कान्ति' हासिल करने के लिए संपर्क करें–

AHSAN MUSTAQIMI
1946/1, Gali No. 28, Near Bismillah Masjid,
D-Block, Zakir Husain Colony,
Meerut City-2 (Uttar Pradesh)
Mob. : 09411022708
E-mail : mustaqimiahsan1931@gmail.com

क्या है शरीर पर धारियों और धब्बों का राज ?

■ विद्या प्रकाश

बाघ और जेब्रा के शरीर पर पट्टियां, तेंदुए के तन पर गोल-गोल चकत्ते तथा तितली के खूबसूरत पंखों पर रंग-बिरंगी धारियां कैसे बनती हैं । क्या है इनका राज ? वह क्या है जो यह तय करता है कि अमुक प्राणी के शरीर पर गोल धब्बे होंगे अथवा दूसरे जीवों के तन पर काली या भूरी धारियां होंगी ?

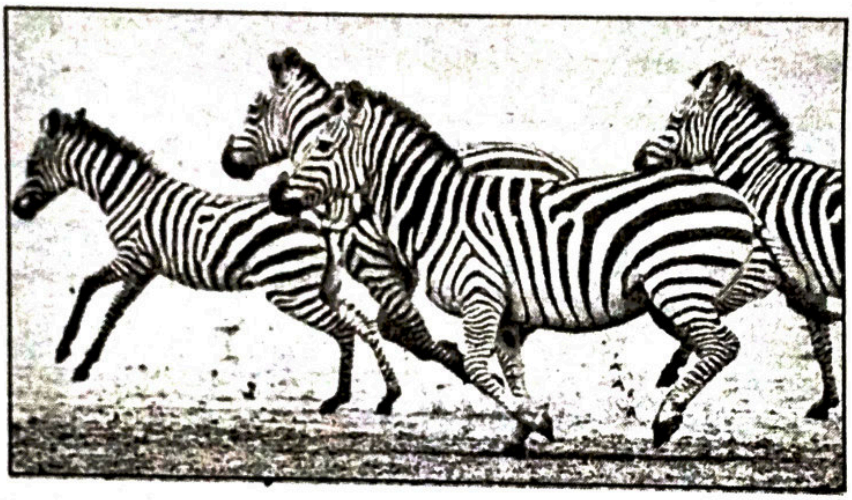

वाइसकोंसिन मेडिसन विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने इस संबंध में गहन अध्ययन तथा अभ्यास किया है । उनके अनुसार प्राणियों के एब्रियोनिक टिस्यू के अन्दर विद्यमान एक विशेष प्रोटीन मोर्फोजिन की वजह से यह संभव हो पाता है । यह प्रोटीन विंगलेस नामक जीन द्वारा एनकोड होता है । शोधकर्ताओं ने प्रयोग तथा अध्ययन के दौरान फ्रूट प्लाय नामक कीट के शरीर की जांच की जिसके शरीर पर 16 धारियों की जटिल संरचना बनी होती है ।



शोधकर्ताओं ने पाया कि पंखों के विकास के समय मोर्फोजिन सक्रिय होता है तथा धमनियों के किनारों पर और जहां दो धमनियां परस्पर मिलती है, उन स्थानों पर स्थित कोषों को पिगमेंट उत्सर्जित करने के लिए यह प्रोत्साहित करता है । विंगलेस कोष निश्चित समय तथा स्थान पर भेजा जाता है तथा उसकी वजह से शरीर के उस स्थान पर धब्बा अथवा धारियां बनती हैं ।

इसी क्रम में नेचर जनरल में प्रकाशित ख़बर के अनुसार सीन कैरोल के नेतृत्व वाली टीम ने एक निष्कर्ष में पाया कि यदि विंगलेस जीन को कीड़े के जीनोम में पृथक-पृथक स्थानों पर डाला जाए तो कुछ नवीन पैटर्न बनाये जा सकते हैं । इससे कुछ अनोखे प्रकार के कीड़ों की संरचना हो सकती है । जिनके शरीर पर धब्बों के स्थान पर धारियां हों अथवा धारियों की जगह धब्बो हों ।

यह व्याख्या मात्र कीट पंतगों पर ही नहीं लागू होती । इस संदर्भ में अनेक अध्येताओं तथा शोधकर्ताओं का कथन है कि अनेक प्राणियों के तन पर विद्यमान धारियों तथा धब्बों के पीछे यही वैज्ञानिक तथ्यात्मक कारण कार्य करता है । इस पैटर्न को परिस्थिति तथा आवश्यकता के अनुसार परिवर्तित भी किया जा सकता है ।

मुद्रक एवं प्रकाशक ख़लील अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि०), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से मुद्रित ।
फोन : 011-26949430, 09818799223
संपादक : डॉ० मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।



HOTEL
Al-Zam Zam
RESTAURANT & LODGING



The best taste in Veg. & Non-Veg. dishes



Now At Ajni Square Wardha Road

Comfortable interior, hygienic separate preparation for Veg. and Non-Veg.
Special air conditioned hall for family.

Comfortable lodging in air conditioned and well decorated rooms.

Customer Care No :- 08796466666

Main Branch :- Central Avenue, Chandra Shekhar Azad Square, Nagpur - 440002
Branch 1 :- Plot No. 1 Hindustan Colony, Ajni Square, Beside Chevrolet Showroom, Wardha Road, Nagpur
Branch 2 :- Opp Battuk Bhai Jewellers, Dharampeth, W.H.C. Road, Nagpur

Ph: 0712-2763131, 2732401

E-mail :- hotelalzamzam@gmail.com

Log on to :- www.hotelalzamzam.com
or like us on :- hotelalzamzam.facebook.com

Posted on 20-21 November 2014
December 2014
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.11.2014

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2012-2014
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYM
License No. U (SE)-73/20 2-1

HINDUSTAN
Pavers & Blocks
Group
Established Since 1977

Anwar Khan
+91 98224277
Akbar Khan
+91 98224977



HINDUSTAN INDUSTRIES
Your Lifestyle Paving Company
Manufacturers Of Solid Concrete Blocks,
Interlocking Pavers, Tiles &
Allied Concrete Products

Colvale IDC, Colvale, Mapusa-Goa
Phone : 0832 2257700, 0832 2257900
Email : hindustanindustriesgoa@gmail.com

www.hindustangroupgoa.com